Published by
DALSUKH MALVANIA
Secretary
RAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

Price Rs. 10/-

Available from :

1 MOTILAL BANARASIDASS. NEPALI KHAPRA Post Box 75 VARANASI.
2 CHAUKHAMBA VIDYABHAVAN CHAWK, VARANASI
3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA, GANDHI ROAD, AHMEDABAD-1.
4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR, RATANPOLE, HATHIKHANA AHMEDABAD-1.
5 MUNSHI RAM MANOHARLAL NAI SARAK, DELHI.

Printed by :-
JAYANTI DALAL
Vasant P Press
Gheekanta, Ghelabhai's Wadi,
AHMEDABAD-1.

प्राकृतग्रन्थपरिषद् ग्रन्थाङ्क ९

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं

—•—

संशोधकः सम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमरहस्यवेदिजैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर(प्रसिद्धनाम--आत्मारामजीमहाराज)शिष्यरत्न--
प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारकप्रवर्तकश्रीमत्कान्तिविजयान्तेवासिनां
श्रीजैनआत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः

—०—

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्,

वाराणसी–५ अहमदावाद–९,

वीरसंवत् २४९२ विक्रमसंवत् २०२२ इस्वीसन् १९६६

प्रकाशक :—
दलसुख मालवणिया
सेक्रेटरी प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी
वाराणसी-५

मुद्रक :—
जयंति दलाल
वसंत प्रिन्टींग प्रेस
घीकांटा [illegible] वाडी
अहमदाबाद-१

गंथसमप्पणं

वरसुयसायरवीईतरतमण-वयण-कायजोगाण ।
वरजिणआगमपयडणकरणे अपमत्तजोगाण ॥ १ ॥

जोगाजोगविहन्नूण नूण गभीरिमाए गरिमाण ।
'आगमउद्धारय'वरउवाहिमंताण सताण ॥ २ ॥

आयरियपुगवाण सागरआणंदसूरिणामाण ।
महणायसद्दसच्चावयाण दुसमम्मि कालम्मि ॥ ३ ॥

करकमलकोसमज्झे ताणं सपइ दिवगयाण मए ।
अप्पिज्जइ गथोऽय विणएण पुण्णविजएण ॥ ४ ॥

ग्रन्थसमर्पण

जिनका मन-वचन-काययोग श्रेष्ठ श्रुतसागरकी तरंगोंमें तैरता था जो श्रेष्ठ जिनागमके प्रकाशनमें अप्रमत्तयोगसे प्रवृत्त थे, योग-अयोग के विवेक में कुशल थे, गाम्भीर्यगुणकी गरिमासे अन्वित थे, 'आगमोद्धारक'की श्रेष्ठ पदवीसे विभूषित सन्त थे, और दुःषमकालमें जिन्होंने अपने आपमें 'महानाद' शब्दको सत्य सिद्ध किया था ऐसे साम्प्रत कालमें दिवंगत आचार्यश्रेष्ठ श्रीसागरानन्दसूरिजीके पवित्र करकमल रूप कोषमें यह ग्रन्थ विनयपूर्वक समर्पित करता हूँ।

पुण्यविजय

नन्दिसूत्रमूलकी 'जे०' सञ्ज्ञकप्रतिके प्रथम पत्रकी प्रथम पृष्ठि और अंतिम (२६वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि।

नन्दिसूत्रमूलकी 'ग०' सञ्ज्ञक प्रतिके प्रथम और अंतिम (१९वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि।

नन्दिसूत्रचूर्णिकी 'जे०' सञ्ज्ञकप्रतिका जिस पत्रसे प्रारम्भ होता है उस १८वे पत्रकी और अंतिम (२२३वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि।

[illegible] संवत् मणिरत्नसूरिके साथ लिखी गई श्रीमज्जयसिंहसूरिविरचितधर्मोपदेशमालावृत्तिकी प्रतिके प्रथम और अंतिम (१४५) पत्रकी द्वितीय पृष्ठ।

मणिचूडरत्नसूरि [illegible] [illegible] प्रतिके प्रथम और अंतिम (८१) पत्रकी द्वितीय पृष्ठ।

नंदिसूत्र ४

॥ अर्हं ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीशासनाधिष्ठायकाय नमः ॥ श्रीइंदनंदिसूरि[illegible]
नमः ॥ जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो । जगनाहो जगबंधू
जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥१॥ जयइ सुआणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ । जय
इ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥ भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वी
रस्स । भद्दं सुरासुरनमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स ॥३॥ गुणभवणगहण सुयरयणभरिय दंसणवि
सुद्धरत्थागा । संघनगर भद्दं ते अखंडचारित्तपागारा ॥४॥ संजमत वतुंबारयस्स नमो सम्म
त्तपारियल्लस्स । अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥५॥ भद्दं सीलपडागूसिय
स्स तवनियमतुरयजुत्तस्स । संघरहस्स भगवओ सज्झाय सुनंदिघोसस्स ॥६॥
कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहनालस्स । पंचम हव्वयथिरकन्नियस्स ॥
गुणकेसरालस्स ॥७॥ साव गजणमहुअरिपरिवुडस्स जि॥ णसूरतेयबुद्धस्स । संघ
पउमस्स भद्दं समणगणसहस्सपत्तस्स ॥८॥ तवसंजममयलंछण अकिरियराहुमुहदुद्धरिस निच्चं ।
जय संघचंद निम्मलसम्मत्तविसुद्धजोण्हागा ॥९॥ परतित्थियगहपहनासगस्स तवतेयदित्त
लेसस्स । नाणुज्जोयस्स जए भद्दं दमसंघसूरस्स ॥१०॥ भद्दं धिइवेलापरिगयस्स सज्झायजोगमगरस्स
अक्खोहस्स भगवओ संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥११॥ सम्मद्दंसणवरवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स



मंडलपवेसस्स । विज्जाचरणविणिच्छयस्स । झाणविभत्ती मरणविभत्ती आयविसोही संलेहणासुयस्स वीयरायसुयस्स । विहारकप्पस्स चर
णविहीए । आउरपच्चक्खाणस्स महापच्चक्खाणस्स । सव्वेसिं पि एयम्मि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ ॥ जइ कालियस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा
अणुओगो पवत्तइ । किं उत्तरज्झयणाणं दसाणं कप्पस्स ववहारस्स इसिभासियाणं निसीहस्स महानिसीहस्स जंबूदीवपन्नत्तीए चंदपन्नत्तीए सूरपन्नत्तीए दीव
सागरपन्नत्तीए खुड्डिआविमाणपविभत्तीए महल्लिआविमाणपविभत्तीए अंगचूलिआए वग्गचूलिआए विवाहचूलिआए अरुणोववायस्स गरुलोववायस्स
धरणोववायस्स वेसमणोववायस्स वेलंधरोववायस्स देविंदोववायस्स उट्ठाणसुअस्स समुट्ठाणसुअस्स नागपरिआवणिआणं निरयावलिआणं क
प्पिआणं कप्पवडिंसिआणं पुप्फिआणं पुप्फचूलिआणं वण्हीदसाणं । आसीविसभावणाणं दिट्ठीविसभावणाणं चारणभावणाणं महासुमिणभावणाणं
तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेसिं पि एयम्मि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अ णुओगो पवत्तइ ॥ जइ अंगपविट्ठस्स उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो
पवत्तइ । किं आयारस्स सूअगडस्स ठाणस्स समवायस्स विवाहप न्नत्तीए नायाधम्मकहाणं उवासगदसाणं अंतगडदसाणं अणुत्तरोववाइ
यदसाणं पण्हावागरणाणं विवागसुअस्स दिट्ठिवायस्स सव्वेसिं पि एयम्मि उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ । इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च
इमस्स साहुस्स इमाए साहुणीए उद्देसो समुद्देसो अणुण्णा अणुओगो पवत्तइ खमासमणाणं हत्थेणं सुत्तेणं अत्थेणं तदुभएणं उद्दिसामि समुद्दिसामि अणु
जाणामि ॥ नंदी समत्ता ॥ ॥छ॥ ॥श्री॥ ॥शुभं भवतु कल्याणमस्तु॥ ॥संवत् [illegible] वर्षे [illegible] बुधे नंदीसूत्रं [illegible] लि

नन्दिसूत्रचूर्णी [illegible] संज्ञक प्रतिके प्रथम और तृतीय पत्रकी द्वितीय पृष्ठि (विशेष वर्णन के लिए देखिए प्रस्तावना, पृष्ठ ३)

प्रस्तावना

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके संशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर बारह प्रतियाँ सामने रक्खी गई हैं। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णीकी एक, ये चार ताडपत्रीय प्रतियाँ हैं। इन सबोंका परिचय इस प्रकार है—

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेरके किलेमे स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि ताडपत्रीय ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचामें इस प्रतिका क्रमाङ्क ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ मे नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ मे श्रीमलयगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौडाई ३३॥×२॥ इंच है। प्रतिपत्रमें पत्रकी चौडाईके अनुसार चार या पाच पंक्तियाँ लिखी हैं। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति शुद्धतम है। पुष्पिकाके लेखानुसार इस प्रति का संशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उपयोगी टिप्पनीयाँ भी की है, जो हमने हमारे मुद्रणमें तत्तत् स्थान पर दे दी हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

> स्वस्ति। संवत् १४८८ वर्षे श्री**सत्यपुरे** पौष वदि १० दिने श्री**पार्श्वदेव**जन्मकल्याणके श्री**खरतर**गणाधिपैः श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारसारैः प्रभुश्रीमज्**जिनभद्र**सूरिसूर्यावतारैः श्री**नन्दि**सिद्धान्तपुस्तकं स्वहस्तेन शोधितं पाठितं च। तच्च श्रीश्रमणसङ्घेन वाच्यमानं चिरं नन्दतु॥

सामान्यतया श्री**जिनभद्र**सूरिके उपदेशसे लिखाई गई प्रतियाँ **स्तम्भतीर्थ**(खंभात)निवासी खरतरगच्छीय श्रावक परीक्षित **धरणाशाह** या श्रीमालिज्ञातीय (?) **बलिराज-उदयराज**की पाई गई हैं। किन्तु इस प्रतिमें इन तीनोंमेंसे किसीके नामका उल्लेख नहीं है। यहां यह भी स्पष्ट होता है कि अपने विहारगत क्षेत्रोंमें भी आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिको अन्य मुख्य कार्योंके साथ साथ पुस्तकलेखन-संशोधन-अध्यापनादि कार्य भी था।

सं० प्रति—यह प्रति पाटन-संघवीपाडाके **लघुपोशालिक** ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसके पत्र ८२ हैं। प्रतिपत्रमें तीन या चार पंक्ति लीखी हैं। प्रतिपंक्तिमें ४० से ४३ अक्षर लिखे हैं। प्रति दो विभागमें लिखी है। इसकी लंबाई-चौडाई १४×१॥ इंचकी है। प्रतिकी लिपि सामान्यतया अच्छी है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका नहीं है। इसके अन्तमें **अनुज्ञानन्दी** नहीं है।

खं० प्रति—यह प्रति खंभातके श्री**शान्तिनाथताडपत्रीय जैनज्ञानभंडार**की ताडपत्रीय प्रति है। प्राच्यविद्यामंदिर-बडौदासे प्रकाशित इस भंडारकी सूचीमें इसका क्रमाङ्क ३८ है। इसमें पत्र १ से १८ में नन्दीसूत्र मूल है, पत्र १८-१९ में **अनुज्ञानन्दी** है और पुनः पत्र १ से २४७ में नन्दीसूत्रकी मलयगिरीया वृत्ति है। प्रतिकी लंबाई-चौडाई ३१॥×२॥ इंच है। ताडपत्रकी चौडाईके अनुसार तीनसे पाँच पंक्तियाँ लिखी हुई हैं। प्रतिपंक्तिमे १०१ से ११९ अक्षर लिखे पाये जाते हैं। प्रति शुद्धप्राय है और लिपि सुन्दरतम है। प्रति तीन विभागमें लीखी गई है। अन्तमें इस प्रकारकी पुष्पिका है—

> सं० १२९२ वर्षे वैशाख शुदि १३ अद्येह **बीजापुरे** श्रावकपौषधशालायां श्री**देवभद्रगणि** प० **मलयकीर्ति** पं० **अजितप्रभगणि**प्रभृतीनां व्याख्यानतः संसारासारतां विचिन्त्य सर्वज्ञोक्तं शास्त्रं प्रमाणमिति मनसि ज्ञात्वा सा० **धणपाल**सुत सा० **रत्नपाल** ठ० **गजसुत** ठ० **विजयपाल** श्रे० **देल्हा**सुत श्रे० **वील्हण** मह० **जिणदेव** मह० **वीकल**सुत ठ० **आसपाल** श्रे० **साल्हा** ठ० **सहजा**सुत ठ० **अरसीह** सा० **राहड**सुत सा० **लाहड**प्रभृतिसमस्तश्रावकैः मोक्षफलप्रार्थकैः समस्तचतुर्विधसङ्घस्य पठनार्थं वाचनार्थं च समर्पणाय लिखापितम्॥छ॥

इन्हीं विजापुरके श्रावकोंकी लिखाई हुई अन्य कई ताडपत्रीय प्रतियां खंभातके इस भाण्डागारमें विद्यमान हैं।

खं० प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेला उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसमें मलयगिरीया टीका भी पत्रपाठरूपसे लिखित है। साथमें अनुज्ञानन्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी मालूम होती है।

सं० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद-लवारकी पोळके उपाश्रयके ज्ञानभंडारकी है। इसकी पत्रसंख्या २५ है। हरेक पत्रमें नव पंक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ से ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर मोटे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अंतमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्मत्ता ॥छ॥ सं १४८५ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ शनौ श्रीभीमपल्लीय.. [अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्री ॥छ॥ शुभं भवतु ॥छ॥

इस पुष्पिकामें जो अक्षर बिगाड दिये हैं उनके स्थानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह श्रीवच्छासुत साह सहिसकस्य स्वपुण्यार्थं पुस्तकभंडार कारापिता सुत वर्धमानपुस्तकपरिपालनार्थं ॥ छ ॥

मो० प्रति—यह प्रति पाटन-श्रीहेमचंद्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित मोदी ज्ञानभंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोलहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन-श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित शुभवीरजैनज्ञानभंडारकी है। प्रति प्राय शुद्ध है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्धमें लिखी प्रतीत होती है।

मु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दसूरिवरसम्पादित श्रीमलयगिरिकृतटीकायुक्त है। जो आपने आगम वाचनाके समय सम्पादित की है। यह आवृत्ति वि. सं. १९७३में आगमोदयसमिति-सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

चूर्णीकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेर किल्लेमें स्थित श्रीजिनभद्रीय ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमाङ्क ४१० है। इस क्रमांकमें तीन ग्रन्थ हैं—१ दशवैकालिक अगस्त्यसिंहीया चूर्णी पत्र १८४। २ नन्दीसूत्रचूर्णी पत्र १८५-२२३। ३ अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णी पत्र १२४-२७५। इनमेंसे नन्दीचूर्णी और अनुयोगद्वारचूर्णी, ये दोनों चूर्णीयाँ किसी गीतार्थकी संशोधित है। प्रतिकी लंबाई-चौडाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अंतमें लेखनसंवत् या लेखककीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रंग-ढंग देखनेसे प्रतीत होता है कि-यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति शुद्धप्राय है।

आ० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारकजी श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जिसका प्रकाशन श्रीऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बरसंस्था-रतलामकी ओरसे हुआ है। पूज्यश्रीको इसकी कोई अच्छी प्रति न मीलनेके कारण यह बहुत अशुद्ध छपी है। फिर भी एक प्रत्यन्तरकी तोरसे हमारे संशोधनमें यह आवृत्ति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति जिनागमज्ञ पूज्य श्रीविजयदानसूरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। जो भाई हीरालालके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफी अशुद्धियाँ हैं। तथापि पूज्य सागरानन्दसूरिजी की आवृत्तिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आवृत्ति है।

चूर्णिके सम्पादन और संशोधनके समय पाटन-श्रीहेमचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरकी एक प्रति और श्रीलालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरकी प्रतिको भी सामने रक्खी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोलहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्धिभरपूर प्रतियाँ हैं। तथापि शुद्ध पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुए हैं।

इस चूर्णीके संशोधनमें हमारे लिये मुख्य आधारस्तम्भ जे० प्रति ही है, जो अतीव शुद्ध प्रति है।

सूत्रप्रतियोंकी विशेषता

सं० ल० मो० ये तीन प्रतियोंका प्रतिलेखनके बाद किसी विद्वानने संशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ल० शु०, ये चार प्रतियाँ संशोधित प्रतियाँ हैं। इनमें भी जे० प्रतिका संशोधन खरतरगच्छीय गीतार्थ आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने किया है, जिसमें आपने नन्दीसूत्रके प्रक्षिप्त पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणीयाँ की हैं, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी हैं, देखो पृ ५ टि १०, पृ. ८ टि १०, पृ. १० टि ७, पृ ११ टि ११, पृ १२ टि ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंशमें खं० प्रतिसे मीलतीझुलती होने पर भी जुदा कुलकी मालुम होती है। इसमे स्थविरावलिकी प्रक्षिप्त मानी जानेवाली गाथायें नहीं हैं, देखो पृ ८ टि १०, पृ. १० टि ७, पृ ११ टि ११। छट्ठे परिषसूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षिप्त हैं वे भी इस प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ १२ टि ५। इसी प्रकार मन पर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णीकार एवं हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पाया गया है, देखो पृ. २३ टि ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणीयोंमें उल्लेख कर दिया है। यहा पर परीक्षण एवं अभ्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोंका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोंसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ १० टि ७, पृ ११ टि ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी ? और किस भंडारकी थी ? यह मेरी स्मृतिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुछ अंशमें इस P प्रतिसे मीलतीझुलती प्रति है। अर्थात् जैसे— गोविंदाण पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने० ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ १० टि ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ शु० प्रतिका उल्लेख छुट गया है किन्तु भंडारमें जा कर शु० प्रतिको पुन देखके निश्चित किया है कि गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्नं० ये दोनों गाथायें शु० प्रतिमें भी नहीं है। एवं—वंदामि अज्जधम्मं० तथा वंदामि अज्जरक्खिय० ये दो गाथायें शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ० ८ टि १०। चूर्णी एवं टीकाओंमें इन चार गाथाओंका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथायें नहीं हैं। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियोंमें और दूसरी बहुतसी पद्रहवीं-सोलहवीं शती में लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथायें अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहा प्रश्न होता है कि—चूर्णिकार और टीकाकारोंने इन गाथाओंका स्पर्श तक क्यों नहीं किया है ?।

जे० और मो० प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्राय लुप्तव्यञ्जनके स्थानमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग न होकर केवल अ और आ की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूज्य श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजके मुद्रणमें नजर आते हैं। ये दो प्रतियाँ उस परम्पराकी हैं, जिसमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग कम हैं। आदि ण प्रयोगके स्थानमें नका प्रयोग मुख्य है। जैसे कि— नाण नाह नमसिय नियम नदिघोस निग्गय नाल निम्मल सुयनिस्सिय आदि।

डे०शु० प्रतियाँ नप्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान हैं, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

खं०स० प्रतियोंमें णप्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु स० प्रतिमें फुरन्त महन्त समन्ता आदि परसवर्णके प्रयोग नजर आते हैं, इतना खं० और स० प्रतिका भेद है। इसी तरह स० और ख० प्रतिका अन्तर यह है कि खं० प्रतिमें चड्डलियम्चा पदीवम्वा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते हैं देखो पृ. १६ टि० ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियाँ हैं। इतनी प्रतियाँ एकत्र करने पर भी चूर्णिकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ हैं जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए हैं। इनका सूचन पादटिप्पणियोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके संशोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोंकी कमीवेशीके निर्णयके लिये चूर्णि, हरिभद्रवृत्ति, मलयगिरिवृत्ति, श्रीचन्द्रीय

टिप्पन इन चारोंका समग्रभावसे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं किन्तु जहाँ जहाँ नन्दीसूत्रके उद्धरण व्याख्यान आदि आये हैं ऐसे द्वादशारनयचक्र, समवायाङ्गसूत्र एवं भगवतीसूत्रकी अभयदेवीया वृत्ति, विशेषावश्यकमलधारीया वृत्ति, पाक्षिकसूत्रवृत्ति आदि अनेक शास्त्रोंका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पादटिप्पणियोंको देखनेसे होगी।

नन्दीसूत्रकी चूर्णिके संशोधनके लिये मेरा आधारस्तम्भ जेसलमेरकी प्रति ही है। अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता। संस्कृत टीका निर्माणके बाद चूर्णियोंका अध्ययन कम हो जानेसे प्राय मात्र ज्ञानभंडारोंमें जो जो आगमिक या आगमेतर शास्त्रोंके चूर्णिग्रन्थोंकी हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धि भाण्डागारस्वरूप ही हो गई हैं। इतनी बात जरूर है कि—ज्यों ज्यों प्रति प्राचीन त्यों त्यों अशुद्धियाँ कम रहती हैं। किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुभव हुआ है कि—अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या भिन्न प्रदेशस्थित प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हो, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है इतना ही नहीं पङ्क्तियोंकी पङ्क्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं। अस्तु, मैंरको जेसलमेरकी प्रति मीली, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं साथमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ मुनिगण एवं विद्वानोंका भी सौभाग्य समझता हूं।

अनेक आगमोंकी चूर्णि वृत्ति आदिके अवलोकनसे प्रतीत हुआ है कि—अगर प्राचीन एवं अलग अलग कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हों तो मुद्रणादिमें प्राय सैकड़ों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते हैं। विद्वान् संशोधकोंके ध्यानमें आनेके लिये मैं यहाँ एक बातको उद्धृत करता हूं—

अनुयोगद्वारसूत्रकी चूर्णिका संशोधन मैंने पाटन ज्ञानभंडारकी दो प्राचीन ताडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और खंभातके श्रीशान्तिनाथ ज्ञानभंडारकी दो ताडपत्रीय प्रतियाँ एवं चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया। कुछ शंकास्थान होने पर भी दिलमें विश्वास हो गया था कि—एकंदर संशोधन अच्छा हो गया है। किन्तु जब जेसलमेर जानेका मौका मिला और वहाँके ज्ञानभंडारकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतिसे तुलना की तो कितने ही शङ्कास्थान दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अलग अलग स्थानमें हो कर दस–बारह पंक्तियाँ जितना दूसरे कुलकी प्रतियोंमें छूट गया हुआ नया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं। यह प्राचीन प्राचीनतम एवं अलग अलग कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साफल्य है।

प्रसंगवश यहाँ यह कहना भी उचित है कि—इस नन्दीसूत्रचूर्णिके संशोधन एवं सम्पादनमें साद्यन्त उपयोगमें लाई गई प्रतियोंके अलावा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय-समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि—जेसलमेरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें त द य आदि वर्णोंके प्रयोग विपुल प्रमाणमें नजर आये हैं।

नन्दीसूत्रके प्रणेता

नन्दीसूत्रकारने नन्दीसूत्रमें कहीं भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरने अपनी चूर्णिमें सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

> "एवं कतमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दूसगणिसीसो देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह" [पत्र १९]

इस उल्लेखद्वारा चूर्णिकारने नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर श्रीदेववाचक हैं—ऐसा बतलाया है। आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि एवं आचार्य श्रीमलयगिरिसूरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार चूर्णिकारका उल्लेख ही है। चूर्णिकारके उल्लेखसे ही ज्ञात होता है कि—नन्दीसूत्रके प्रणेता नन्दिसूत्रस्थविरावलिगत अंतिमस्थविर श्रीदूष्यगणिके शिष्य श्रीदेववाचक हैं।

पन्यासजी श्रीकल्याणविजयजी महाराजने अपने 'वीरनिर्वाणसंवत और जैन कालगणना' निबन्धमें (नागरीप्रचारिणी भाग १० अंक ४) अनेकानेक प्रमाण और युक्ति द्वारा नन्दीसूत्रप्रणेता स्थविर देववाचक और जैन आगमोंकी माथुरी एवं वालभी वाचनाओंको संवादित करनेवाले श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमणको एक बतलाया है।

नव्यकर्मग्रन्थकार आचार्य **श्रीदेवेन्द्रसूरि** महाराजने अपनी स्वोपज्ञ वृत्तिमें देववाचक, देवर्द्धिक्षमाश्रमण नामके उल्लेखपूर्वक अनेकवार नन्दीसूत्रपाठके उद्धरण दिये हैं. यह भी उन्होंने देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमणको एक व्यक्ति मानके ही दिये हैं। यह भी श्रीकल्याणविजयजी महाराजकी मान्यताको पुष्ट करनेवाला सबूत है। तथापि नन्दीकी स्थविरावलीमें अन्तिम स्थविर दूष्यगणि हैं, जिनको नन्दीचूर्णिकारने देववाचकके गुरु बतलाये हैं। तब कल्पसूत्रको वि. सं० १२४६ में लिखित प्रतिसे ले कर आज पर्यन्तकी प्राचीन-अर्वाचीन ताडपत्रीय एवं कागजकी प्रतियोंमें स्थविरावलिके पाठोंकी कमी बेशीके कारण कोई एक स्थविरका नाम व्यवस्थितरूपसे पाया नहीं जाता है। इस कारण इन दोनों स्थविरोंको एक मानना यह कहा तक उचित है, यह तज्ज्ञ विद्वानोंके लिये विचारणीय है। देववाचक और देवर्द्धिक्षमाश्रमण इन नाम और विशेषण-उपाधिमें भी अंतर है। साथमें यह भी देखना जरूरी है कि नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीमें वायगवंस, वायगपय, वायग, इस प्रकार वायग शब्दका ही प्रयोग मिलता है, दूसरे कोई वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर जैसे पदका प्रयोग नजर नहीं आता है। अगर देववाचकको क्षमाश्रमणकी भी उपाधि होती तो नन्दीचूर्णिकार जरूर लिखते हो। जैसे द्वादशारनयचक्रटीकाके प्रणेता सिंहवादी गणि क्षमाश्रमण, विशेषावश्यककी अपूर्ण स्वोपज्ञ टीकाको पूर्ण करनेवाले कोट्टार्यवादी गणि महत्तर, सन्मतितर्कके प्रणेता वादी सिद्धसेनगणी दिवाकर आदि नामोंके साथ दो विशेषण-उपाधियाँ जुडी हुई मिलती हैं इसी तरह देववाचकके लिये भी दो उपाधियोंका निर्देश जरूर मिलता। अतः **देववाचक** और **देवर्द्धिक्षमाश्रमण**, ये दोनों एक ही व्यक्ति हैं या भिन्न, यह प्रश्न अब भी विचारणीय प्रतीत होता है। कल्पसूत्रकी स्थविरावली और नन्दीसूत्रकी स्थविरावलीका मेलझोल कैसे, कितना और कहा तक हो सकता है, यह भी विचारार्ह है।

वाचकपदकी अपेक्षाकृत प्राचीनता होने पर भी कल्पसूत्रकी समयसमय पर परिवर्धित स्थविरावलीमें थेर और खमासमण पदका ही निर्देश नजर आता है, यह भी दोनों स्थविर और स्थविरावलीकी विशेषता एवं भिन्नताके विचारका साधन है।

यहाँ पर प्रसंगोपात्त एक बात स्पष्ट करना उचित है कि—भद्रेश्वरसूरिकी कहावलीमें एक गाथा निम्नप्रकारकी नजर आती है—

वाई य खमासमणे दिवायरे वायगे त्ति एगट्ठा। पुव्वगयं जस्सेस जिणागमे तम्मिमे नामा॥

अर्थात्—वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर और वाचक, ये एकार्थक-समानार्थक शब्द हैं। जिनागममें जो पूर्वगत शास्त्र हैं उनके शेष अर्थात् अंशोंका पारम्परिक ज्ञान जिनके पास है उनके लिये ये पद हैं।

इस गाथासे यह स्पष्ट है कि—इन उपाधियोंवाले आचार्योंके पास पूर्वगतज्ञानकी परंपरा थी। किन्तु आज जैन परम्परामें जो ऐसी मान्यता प्रचलित है कि—इन पदधारक आचार्योंको एक पूर्वआदिका ज्ञान था, यह मान्यता भ्रान्त एवं गलत प्रतीत होती है। कारण यह है कि—अगर आचाराङ्गादि प्राथमिक अंगआगम शीर्णविशीर्ण हो चूके थे, इस दशामें पूर्वश्रुतके अखंड रहनेकी संभावना ही कैसे हो सकती है?।

स्थविर श्रीदेववाचककी नन्दीसूत्रके सिवा दूसरी कोई कृति उपलब्ध नहीं है।

चूर्णिकार

नन्दीसूत्रचूर्णिके प्रणेता आचार्य श्रीजिनदास गणि महत्तर हैं। सामान्यतया आज यह मान्यता प्रचलित है कि—जैन आगम उपरके भाष्योंके प्रणेता **श्रीजिनभद्र गणि क्षमाश्रमण** और चूर्णियोंके रचयिता **श्रीजिनदास गणि महत्तर**

ही है, और ऐसे प्राचीन उल्लेख पट्टावली आदिमें पाये भी जाते हैं किन्तु भाष्य चूर्णियोंके अवगाहन बाद ये दोनों मान्यताएं गलत प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर भाष्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर जैन आगमोंके उपर जो प्राचीन चूर्णियाँ उपलब्ध हैं उन्हींके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमोंके उपर जो चूर्णिनामक प्राकृतभाषाप्रधान व्याख्याग्रन्थ प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचाराङ्गचूर्णि २ सूत्रकृताङ्गचूर्णि ३ भगवतीचूर्णि ४ जीवाभिगमचूर्णि ५ प्रज्ञापनासूत्रशरीरपदचूर्णि ६ जम्बूद्वीपकरणचूर्णि ७ दशाकल्पचूर्णि ८ कल्पचूर्णि ९ कल्पविशेषचूर्णि १० व्यवहारसूत्रचूर्णि ११ निशीथसूत्रविशेषचूर्णि १२ पञ्चकल्पचूर्णि १३ जीतकल्पबृहच्चूर्णि १४ आवश्यकचूर्णि १५ दशकालिकचूर्णि श्रीअगस्त्यसिंहकृता १६ दशकालिकचूर्णि वृद्धविवरणाख्या १७ उत्तराध्ययनचूर्णि १८ नन्दीसूत्रचूर्णि १९ अनुयोगद्वारचूर्णि २० पाक्षिकचूर्णि।

उपर जिन बीस चूर्णियोंके नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व एतद्विषयक चूर्णिग्रन्थोंके प्राप्त उल्लेखोंको मैं एकसाथ यहाँ उद्धृत कर देता हूँ, जो भविष्यमें विद्वानोंके लिये कायमकी विचारसामग्री बनी रहे।

(१) आचाराङ्गचूर्णी। अन्तः—

से हु निरालंबणमप्पतिट्ठितो। सेस तहेव॥ इति आचारचूर्णी परिसमाप्ता॥ नमो सुयदेवयाए भगवईए॥ ग्रन्थाग्रम् ८३ ॥

(२) सूत्रकृताङ्गचूर्णी। अन्तः—

सद्दहामि जय सुत्रेसि णेसग्ग सव्वमिति॥ नम सर्वविदे वीराय विगतमोहाय॥ समाप्तं चेदं सूत्रकृताङ्गमिदं द्वितीयमङ्गमिति। भद्रं भवतु श्रीजिनशासनाय। सूत्रकृताङ्गचूर्णिः समाप्ता॥ ग्रन्थाग्रम् ९५० ॥

(३) भगवतीचूर्णि—

श्रीभगवतीचूर्णि परिसमाप्तेति॥ इति भद्रं॥

सुयदेवयं तु वंदे जीइ पसाएण सिक्खियं नाणं। बिइयं पि बंभ (श्रम)देविं पसन्नवाणिं पणिवयामि॥ ग्रन्थाग्र ३७ ७॥ श्री

(४) जीवाभिगमचूर्णि—

इस चूर्णीकी प्रति अद्यावधि ज्ञात किसी भंडारमें देखनेमें नहीं आई है।

(५) प्रज्ञापनाशरीरपदचूर्णि। अन्तः—

जमिह समयविरुद्धं बद्धं बुद्धिविकलेण होज्ज हि। तं जिणवयणविहन्नू खमिऊणं मे पसोहिंतु॥ १॥

॥ सरीरपदस्स चुण्णी जिणभद्दखमासमणकित्तिया समत्ता॥ अनुयोगद्वारचूर्णि पत्र ७४।

याकिनीमहत्तरासूनु आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिकृत अनुयोगद्वारलघुवृत्ति पत्र ९९ में भी यही उल्लेख है।

(६) जम्बूद्वीपकरणचूर्णि। अन्तः—

एवं उवरिल्लभागस्स तेरासिय पउंजियव्वं। विक्खंभहत्तुवहीओ आणेयव्वाओ॥ जंबुद्दीवपण्णत्तिकरणाणं चुण्णी समत्ता॥

(७) दशाश्रुतस्कन्धचूर्णि। अन्तः—

जाव णवा मि। जाव करणओ—सव्वेसिं पि नयाणं गाथा॥ दशानां चूर्णी समाप्ता॥

(८) कल्पचूर्णी—

आउक्खया उ गाहा ९९। विवरणं जहा विसेसावस्सगभासे। 'सामित्तं चेव पमाणेणं को केवतियं भवइ' भवेइ वा केवतियं को उ? त्ति जहा कप्पपगाढीए। एवं पसंगेण गतं।

अन्तः—

तओ य आराहणातो छिण्णससारी भवति ससारसतति छेत्तु मोक्ख पावतीति ॥ कल्पचूर्णी समाप्ता ॥

ग्रन्थाग्रम्—५३०० प्रत्यक्षरगणनया निर्णीतम् ॥ [सर्वग्रन्थाग्रम्—१४७८?] ॥

(९) कल्पविशेषचूर्णि—

कप्पविसेसचुण्णी समत्तेति ॥

(१०) व्यवहारचूर्णि । अन्तः—

व्यवहारस्य भगवत अर्थविचनाप्रवर्तने दक्षम् । विवरणमिद समाप्त श्रमणगणानाममृतभूतम् ॥१॥

(११) निशीथविशेषचूर्णि । आदिः—

नमिऊणऽरहताण, सिद्धाण य कम्मचक्कमुक्काण । सयणसिणेहविमुक्काण सव्वसाहूण भावेण ॥१॥

सविसेसायरजुत्त काउ पणामं च अत्थदायिस्स । पज्जुण्णखमासमणस्स चरण-करणाणुपालस्स ॥२॥

एवं कयप्पणामो पकप्पणामस्स विवरणं वन्ने । पुव्वायरियकयं चिय अहं पि त चेव उ विसेसे ॥३॥

भणिया विमुत्तिचूला अहुणाऽवसरो णिसीहचूलाए । को सबंधो तिस्सा ? भण्णइ, इणमो निसामेहि ॥४॥

तेरहवा उद्देशके अन्तमें—

सकरजडमउडविभूसणस्स तण्णामसरिसणामस्स । तस्स सुतेणेस कता विसेसचुण्णी णिसीहस्स ॥

पन्द्रहवा उद्देशके अन्तमें—

रविकरमभिधाणक्खरसत्तमवग्गतअक्खरजुण्ण । णाम जस्सित्थीए सुतेण तिस्से कया चुण्णी ॥[1]

सोलहवा उद्देशके अन्तमें—

देहडो सीह थोरा य ततो जेट्ठा सहोयरा । कणिट्ठा देउलो णण्णो सत्तमो य तिइज्जिओ ।

एतेसि मज्झिमो जो उ मदेवी(मदधी) तेण चित्तिता(चिन्तिता) ॥

अन्तः—

जो गाहासुत्तत्थो चेवविघपागडो फुडपदत्थो । रइओ परिभासाए साहूण अणुग्गहट्ठाए ॥१॥

ति-चउ-पण-ऽट्ठमवग्गे ति-पग-ति-तिगक्खरा ठवे तेसिं । पढम-ततिएहिं जिट्ठइ सरजुएहिं णाम कयं जस्स ॥२॥[2]

गुरुदिण्णं च गणित्तं महत्तरत्त च तस्स तुट्ठेण । तेण कतेसा चुण्णी विसेसणामा णिसीहस्स ॥३॥

णमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥ जिणदासगणिमहत्तरेण रइया णिसीहचुण्णी समत्ता ॥

(१२) पञ्चकल्पचूर्णि । अन्तः—

कप्पपणयस्स सेओ परूविओ मोक्खसाहणट्ठाए । ज चरिऊण सुविहिया करेंति दुक्खक्खय धीरा ॥

पञ्चकल्पचूर्णिः समाप्ता ॥ ग्रन्थप्रमाणं सहस्रत्रय शतमेक पञ्चविंशयुतरम् ३१२५ ॥

(१३) जीतकल्पबृहच्चूर्णी । अन्तः—

इति जेण जीयदाण साहूणऽइयारपकपरिसुद्धिकर । गाहाहिं फुड रइय महुरपयत्थाहिं पावणं परमहियं ॥ १ ॥

---

१. इस गाथासे ज्ञात होता है कि चूर्णिकार श्रीजिनदासगणिमहत्तरके पिता का नाम **नाग** अथवा तो **चन्द्र** होगा ।

२ इस गाथाके अर्थका विचार करनेसे चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरकी माताका नाम प्राकृत **गोवा** सस्कृत **गोपा** अधिक सभवित है ।

३ इस गाथामें उल्लिखित **देहड** आदि, चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरके सहोदर भाई हैं ।

जिणभद्दखमासमणं निच्छियसुत्तत्थदायगामलचरणं । तमहं वंदे पयओ परमं परमोवगारकारिणं महग्घं ॥ २ ॥

॥ जीतकल्पचूर्णि समाप्ता । सिद्धसेनसूरिकृता ॥

(१४) आवश्यकचूर्णी । अन्तः—

चरणनयो—सव्वेसिं पि नयाणं गाथा ॥ इति आवस्सगनिज्जुत्तिचुण्णी समाप्ता ॥ मंगलं महाश्री ॥

(१५) दशकालिकसूत्रअगस्त्यसिंहचूर्णी । अन्त —

एवमेत धम्मसमुक्कित्तणादि चरण-करणाणेगपज्जवाणागमं नयाणसमणक्कमावसाणं भवियजणाणंदिकरं चुण्णि समासवयणेण दसकालियं परिसमत्तं ॥

मम ॥ वीरवरस्स भगवतो तित्थे कोडीगणे सुविपुलम्मि । गुणगणवइराभस्सा वेरसामिस्स साहाए ॥ १ ॥
महरिसिसरिससभावा भावाऽभावाण मुणितपरमत्था । रिसिगुत्तखमासमणा खमा-समाण निधी आसि ॥ २ ॥
तेसिं सीसेण इमा कलससभवमइंदणामधेज्जेणं । दसकालियस्स चुण्णी पयाण रयणातो उवण्णत्था ॥ ३ ॥
रुयिरपद-संधिणियता छड्डियपुणरुत्तवित्थरपसंगा । वक्खाणमंतरेणावि सिस्समतिबोधणसमत्था ॥ ४ ॥
ससमय-परसमयणयाण जं च ण समाधितं पमादेण । त खमह पसाहेह य इय विण्णत्ती पवयणीण ॥ ५ ॥

॥ दसकालियचुण्णी परिसमत्ता ॥

(१६) दशकालिकसूत्रचूर्णि वृद्धविवरणाख्या । अन्तः[1]—

अज्झयणाणंतरं 'कालगओ समाहीए' त्ति । अहा तेण पवित्तेण चेव मारगा भवंसि त्ति ॥ दशवैकालिकचूर्णी समाप्ता ॥ ग्रन्थाग्रम् ७४० ॥

(१७) उत्तराध्ययनचूर्णि । अन्तः—

वाणिजकुलसंभूतो कोडियगणितो य वज्जसाहीतो । गोवालियमहत्तरओ विक्खातो आसि लोगम्मि ॥ १ ॥
ससमय-परसमयविऊ ओयस्सी देहिमं सुगंभीरो । सीसगणसंपरिवुडो वक्खाणरतिप्पियो आसी ॥ २ ॥
तेसिं सीसेण इमं उत्तरज्झयणाण चुण्णिखंडं तु । रइयं अणुग्गहत्थं सीसाणं मंदबुद्धीणं ॥ ३ ॥
जं एत्थ उस्सुत्तं अयाणमाणेण विरतितं होज्जा । तं अणुओगधरा मे अणुचिंतेउं समारेंतु ॥ ४ ॥
॥ पदृभिश्चोत्तराध्ययनचूर्णी समाप्ता ॥ ग्रन्थाग्र प्रत्यक्षरगणनया ५८५ ॥

(१८) नन्दीसूत्रचूर्णि । अन्तः—

णि रे ण ग म त ण ह स दा जि या (?) पसुपतिसंखगजट्ठिताकुला ।
कमट्ठिता धीमतचिंतियक्खरा फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥ १ ॥

शकराज्ञो पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ ग्रन्थाग्रम् १५ ॥

(१९) अनुयोगद्वारसूत्रचूर्णि । अन्तः—

चरणमेव गुणो चरणगुणो । अथवा चरणं चारित्रम् गुणा खमादिया अणेगविधा तेसु जो अहिट्ठिओ साधू सो सम्मत्तसम्मतो भवतीति ॥

॥ इति श्रीश्वेताम्बराचार्यश्रीजिनदासगणिमहत्तरपूज्यपादानामनुयोगद्वाराणां चूर्णिः ॥

---

[1] इस चूर्णि पर टिप्पण रचनेवाले श्रीश्रीचन्द्रसूरिजी अगस्त्यचूर्णिका वृद्धचूर्णिके नामसे उल्लेख करते हैं ।

(२०) पाक्षिकसूत्रचूर्णि । अन्तः—

अनुष्टुप्भेदेन छदसा ग्रथाग्र चत्वारि शतानि ४०० ॥ पाक्षिकप्रतिक्रमणचूर्णी समाप्तेति ॥ शुभ भवतु सकल सघस्य । मंगल महाश्री ॥

१ उपर जिन वीस चूर्णियोंके आदि-अन्तादि अशोंके उल्लेख दिये हैं इनके अवलोकनसे प्रतीत होता है कि—**प्रज्ञापनासूत्र**के बारहवें शरीरपदकी चूर्णि श्री**जिनभद्र**गणि क्षमाश्रमण कृत है। आज इसकी कोई स्वतन्त्र हस्तप्रति ज्ञानभडारोंमें उपलब्ध नहीं है, किन्तु श्री**जिनदास**गणि महत्तर और आचार्य श्री**हरिभद्र**सूरिने क्रमश अपनी **अनुयोगद्वारसूत्र** उपरकी **चूर्णि** और लघुवृत्तिमें इस चूर्णिको समग्र भावसे उद्धृत कर दी है, इससे इसका पता चलता है। श्री**जिनभद्र**गणि क्षमाश्रमणने प्रज्ञापनासूत्र उपर सम्पूर्ण चूर्णी की हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है। इसका कारण यह है कि—प्राचीन जैन ज्ञानभंडारोंमे प्रज्ञापनासूत्रचूर्णीकी कोई हाथपोथी प्राप्त नहीं है। दूसरा यह भी कारण है कि—आचार्य श्री**मलयगिरि**ने अपनी **प्रज्ञपनावृत्ति**में सिर्फ **शरीरपद**की वृत्तिके सिवा और कहीं भी चूर्णीपाठका उल्लेख नहीं किया है। अत ज्ञात होता है कि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने सिर्फ प्रज्ञापनासूत्रके बारहवें शरीरपद पद पर ही चूर्णी की होगी। आचार्य **मलयगिरि**ने अपनी वृत्तिमें इस चूर्णीका छ स्थान पर उल्लेख किया है।

२ **नन्दीसूत्रचूर्णी, अनुयोगद्वारचूर्णी** और **निशीथसूत्रचूर्णी**के प्रणेता श्री**जिनदास**गणि महत्तर हैं। जो इन चूर्णीयोंके अन्तिम उल्लेखसे निर्विवाद रूपसे ज्ञात होता है। **निशीथचूर्णि**के प्रारम्भमें आपने अपने विद्यागुरुका शुभनाम श्रीप्रद्युम्न क्षमाश्रमण बतलाया है। सभव है कि आपके दीक्षागुरु भी ये ही हों। इन चूर्णियोंकी रचना जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणके बादकी है। इसका कारण यह है कि—नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोग-एकोपयोग-क्रमोपयोगकी चर्चा की है एव स्थान स्थान पर जिनभद्रगणिके विशेषावश्यक भाष्यकी गाथाओंका उल्लेख भी किया है। **अनुयोगद्वारचूर्णी**में तो आपने श्रीजिनभद्रगणिकी शरीरपदचूर्णीको साद्यन्त उद्धृत कर दी है। अत ये तीनों रचनायें श्री**जिनभद्र**गणिके बादकी ही निर्विवाद सिद्ध है।

३ **दशवैकालिकचूर्णी**के कर्त्ता श्री**अगस्त्यसिंह**गणी हैं। ये आचार्य **कोटिक**गणान्तर्गत श्री**वज्रस्वामी**की शाखामें हुए श्री**ऋषिगुप्त** क्षमाश्रमणके शिष्य है। इन दोनो गुरु-शिष्योंके नाम शाखान्तरवर्त्ति होनेके कारण पट्टावलीयोंमें पाये नहीं जाते हैं। कल्पसूत्रकी पट्टावलीमें जो श्रीऋषिगुप्तका नाम है वे स्थविर आर्यसुहस्तिके शिष्य होनेके कारण एवं खुद वज्रस्वामीसे भी पूर्ववर्त्ती होनेसे श्रीअगस्त्यसिंहगणिके गुरु ऋषिगुप्तसे भिन्न हैं। कल्पसूत्रकी स्थविरावलीका उल्लेख इस प्रकार है—

थेरस्स ण अज्जसुहत्थिस्स **वासिट्ठसगुत्तस्स** इमे दुवालस थेरा अतेवासी अहावचा अभिण्णाया होत्था। तं जहा—

थेरे य अज्जरोहण १ जसभद्दे २ मेहगणी ३ य कामिड्ढी ४।
सुट्ठिय ५ सुप्पडिबुद्धे ६ रक्खिय ७ तह रोहगुत्ते ८ य ॥ १ ॥
इसिगुत्ते ९ सिरिगुत्ते १० गणी य बभे ११ गणी य तह सोमे १२।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥ २ ॥

स्थविर आर्यसुहस्ति श्री**वज्रस्वामी**से पूर्ववर्त्ती होनेसे ये ऋषिगुप्त स्थविर दशकालिकचूर्णिप्रणेता श्रीअगस्त्यसिंहके गुरु श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणसे जुदा है, यह स्पष्ट है।

आवश्यकचूर्णी, जिसके प्रणेताके नामका कोई पता नहीं है, उसमें तपसयमके वर्णनप्रसगमें आवश्यकचूर्णिकारने इस प्रकार दशवैकालिकचूर्णीका उल्लेख किया है—

तवो दुविहो—बज्झो अब्भंतरो य। जधा दसवेतालियचुण्णीए चाउलोदणत्त (? चाउलोदणंत) अहुद्देणं गिण्हट्ठ साधुसु पडिहामणीय ८। [आवस्यकचूर्णी विभाग २ पत्र ११७]

आवश्यकचूर्णिके इस उद्धरणमें दशवैकालिकचूर्णीका नाम नजर आता है। दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूर्णियाँ आज प्राप्त हैं—एक स्थविर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी जो आगमोद्धारक श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने रतलामकी श्री-ऋषभदेवजी केशरीमलजी जैन श्वेताम्बर संस्थाकी ओरसे सम्पादित की है जिसके कर्त्ताके नामका पता नहीं मीला है और जिसके अनेक उद्धरण याकिनीमहत्तरापुत्र आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी दशवैकालिकसूत्रकी शिष्यहिताद्वत्तिमें स्थान स्थान पर वृद्धविवरणके नामसे दिये हैं। इन दो चूर्णियोंमेंसे आवश्यकचूर्णिकारको कौनसी चूर्णि अभिप्रेत है ?, यह एक कठिनसी समस्या है। फिर भी आवस्यकचूर्णिके उपर उल्लिखित उद्धरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुंच सकते हैं। इस उद्धरणमें "चाउलोदणत्त" यह पाठ गलत हो गया है। वास्तवमें 'चाउलोदणत्त' के स्थानमें मूलपाठ "चाउलोदणंत" ऐसा पाठ होगा। परन्तु मूलस्थानको बिना देखे ऐसे पाठोंके मूल आशयका पता न चलने पर केवल शाब्दिक शुद्धि करके संख्या बन्ध पाठोंको विद्वानोंने गलत बनाने के संख्याबन्ध उदाहरण मेरे सामने हैं। दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने बराबर देखी है, किन्तु "चाउलोदणत्त"का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है। दश-वैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तपके निरूपणकी समाप्तिके बाद "चाउलोदणंगि" [पत्र १९] ऐसा चूर्णिकारने लिखा है, जिसको आवस्यकचूर्णिकारने "चाउलोदणंत" वाक्यद्वारा सूचित किया है। इस पाठको बादके विद्वानोंने मूल स्थानस्थित पाठको बिना देखे गलत शाब्दिक सुधारा कर बिगाड दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है। अत मैं इस निर्णय पर आया हूं कि—आवश्यकचूर्णिकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्णि अगस्त्यसिंहीया चूर्णी ही है। और इसी कारण अगस्त्यसिंहीया चूर्णी आवस्यकचूर्णिके पूर्वकी रचना है।

आचार्य श्रीहरिभद्रसूरिने अपनी शिष्यहितावृत्तिमें इस चूर्णीका खास तौरसे निर्देश नहीं किया है। सिर्फ रइवक्का-सं रसियाख्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूलिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३–२] "अन्ये तु व्याचक्षते" ऐसा निर्देश करके अगस्त्यसिंहीया चूर्णीका मतान्तर दिया है। इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नामका उल्लेख नहीं किया है।

इस अगस्त्यसिंहीया चूर्णिमें तत्कालवर्ती संख्याबन्ध वाचनान्तर—पाठभेद अर्थभेद एवं सूत्रपाठोंकी कमी-बेशीका काफी निर्देश है, जो अतिमहत्त्वके हैं।

यहाँ पर ध्यान देने जैसी एक बात यह है कि—दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णिमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन चूर्णी या वृत्तिका समान रूपसे उल्लेख रइवक्काचूलिका की चूर्णिमें किया है। जो इस प्रकार है—

"एत्थ इमाओ वृत्तिगताओ पदुद्देसमेत्तगाधाओ। जहा—

दुक्खं च दुस्समाए जीविउं जे१ लहुसगा पुणो कामा २।
सातिबहुला मणुस्सा ३ अचिरट्ठाणं इमं दुक्खं ४ ॥ १ ॥
ओमजणम्मि य खिंसा ५ वंतं च पुणो निसेवियं भवति ६।
अहरोवसंपया वि य ७ दुलभो धम्मो गिहे गिहिणो ८ ॥ २ ॥
निवयति परिकिलेसा ९ बंधो ११ सावज्जजोग गिहिवासो १३।
एते तिण्णि वि दोसा न हुंति अणगारवासम्मि १ १२ १४ ॥ ३ ॥
साधारणा य भोगा १५ पत्तेयं पुण्ण-पावफलमेव १६।
जीयमवि माणवाणं कुसग्गजलचंचलमणिच्चं १७ ॥ ४ ॥

णत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८ ।
पदमट्ठारसमेत वीरवयणसासणे भणितं ॥ ५ ॥"

अगस्त्यसिंहीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णीमें [पत्र २५८] "एत्थ इमाओ वृत्तिगाथाओ। उक्तं च" ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाथायें उद्धृत कर दी हैं।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि—दशवैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन **चूर्णी** भी थी, जिसका दोनों चूर्णीकारोंने **वृत्ति** नामसे उल्लेख किया है। इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पद्य और गद्यमें व्याख्याग्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुराणी है। और इससे **हिमवंतस्थविरावलीमें** उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुचता है—

"तेपामार्यसिंहानां स्थविराणा **मधुमित्रा-ऽऽर्यस्कन्दिला**चार्यनामानौ द्वौ शिष्यावभूताम्। आर्यमधुमित्राणां शिष्या **आर्यगन्धहस्तिनो**ऽतीवविद्वास प्रभावकाश्चाभवन्। तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तंस**सोमास्वाति**वाचकरचित**तत्त्वार्थो**परि अशीतिसहस्रश्लोकप्रमाण **महाभाष्यं** रचितम्। **एकादशाङ्गोपरि चाऽऽर्यस्कन्दिलस्थविरा**णामुपरोधतस्तै**र्विवरणानि** रचितानि। यदुक्तं तद्रचि**ताऽऽचाराङ्ग**विवरणान्ते यथा—

थेरस्स **महुमित्तस्स** सेहेहिं तिपुव्वनाणजुत्तेहिं। मुणिगणविवंदिएहिं ववगयरायाइदोसेहिं ॥ १ ॥
बंभदीवियसाहामउडेहिं **गयहत्थि**विवुहेहिं। **विवरण**मेय रइय दोसयवासेसु विक्कमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तिविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीशीलाङ्कने अपनी आचाराङ्गवृत्तिके उपोद्घातमें भी किया है। कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है।

४ उत्तराध्यनसूत्रचूर्णिके प्रणेता **कौटिक**गणीय, वज्रशाखीय एवं **वाणिज**कुलीय स्थविर **गोपालिक** महत्तरके शिष्य थे। इस चूर्णिकारने चूर्णिमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है। इनका निश्चित समयका पता लगाना मुश्किल है। तथापि इस चूर्णिमें विशेषावश्यकभाष्यकी स्वोपज्ञ टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है। विशेषावश्यक भाष्यकी स्वोपज्ञ टीका, यह श्री**जिनभद्र**गणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है। छट्ठे गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण बादके समग्र ग्रथकी टीकाको श्री**कोट्टार्यवादी** गणी महत्तरने पूर्ण की है।

५ **जीतकल्पबृहच्चूर्णीके** प्रणेता श्री**सिद्धसेन**गणी हैं। इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है। श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत ग्रन्थके उपर यह चूर्णी होनेके कारण इसकी रचना श्री**जिनभद्र**गणिके बादकी स्वयसिद्ध है। इस चूर्णिको **टिप्पनक**कार श्रीश्रीचन्द्रसूरिने बृहच्चूर्णीनामसे दरशाई है—

नत्वा श्रीमन्महावीर परोपकृतिहेतवे। जीतकल्पबृहच्चूर्णेर्व्याख्या काचित् प्रकाश्यते ॥ १ ॥

उपरनिर्दिष्ट सात चूर्णीयोंके अतिरिक्त तेरह चूर्णीयोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलता है। तथापि इन चूर्णीयोके अवलोकनसे जो हकीकत ध्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हू।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और सूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं मिला है तो भी आचाराङ्गचूर्णीमें चूर्णिकारने पद्रह स्थान पर **नागार्जुनीय** वाचनाका उल्लेख किया-है, उनमेंसे-सात स्थान पर "**भदतनागज्जुणिया**" इस प्रकार बहुमानदर्शक 'भदन्त'शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए। सूत्रकृताङ्गचूर्णीमें जहा जहा नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहा सामान्यतया

नागहस्तिया इतना ही लिखा है। अतः ये दोनों चूर्णिकार अलग अलग ज्ञात होते हैं। सूत्रकृताङ्गचूर्णिमें जिनभद्रगणीके विशेषावश्यकभाष्यकी गाथायें एवं स्वोपज्ञ टीकाके सन्दर्भ अनेक स्थान पर उद्धृत किये गये हैं, इससे इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी है तब आचाराङ्गचूर्णिमें जिनभद्रगणिके कोई ग्रन्थका उल्लेख नहीं है, इस कारण इस चूर्णिकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके पूर्वकी होनेका सम्भव अधिक है।

भगवतीसूत्रचूर्णिमें श्रीजिनभद्रगणीके विशेषणवतीग्रन्थकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे और कल्पचूर्णिमें साक्षात् विसेसावस्सगभासका नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों चूर्णियोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीजिनभद्रगणीके बादकी है।

दशाश्रुतस्कन्धचूर्णिमें केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोगादिवादका निर्देश होनेसे यह चूर्णी भी श्रीजिनभद्रगणीके बादकी है।

आवश्यकचूर्णिके प्रणेताका नाम चूर्णीकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है। श्रीसागरानन्दसूरि महाराजने अपने सम्पादनमें इसको जिनदासगणिमहत्तरकृत बतलाई है। प्रतीत होता है कि—आपका यह निर्देश श्रीधर्मसागरोपाध्यायकृत तपागच्छीय पट्टावलीके उल्लेखको देख कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है। अगर इसके प्रणेता जिनदासगणि होते तो आप इस प्रासादभूत महती चूर्णिमें जिनभद्र गणिके नामका या विसेसावस्सयभाष्यकी गाथाओंका जरूर उल्लेख करते। मुझे तो यही प्रतीत होता है कि—इस चूर्णीकी रचना जिनभद्रगणिके पूर्वकी और नन्दीसूत्ररचनाके बादकी है।

दशवैकालिकचूर्णी (वृद्धविवरण)में और व्यवहारचूर्णिमें श्रीजिनभद्रगणिकी कोई कृतिका उद्धरण नहीं है, अतः ये चूर्णियाँ भी जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके पूर्वकी होनी चाहिए।

जम्बूद्वीपकरणचूर्णी, यह जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिकी चूर्णी मानी जाती है किन्तु वास्तवमें यह जम्बूद्वीपके परिधि-जीवा धनु पृष्ठ आदि आठ प्रकारके गणितको स्पष्ट करनेवाले किसी प्रकरणकी चूर्णी है। वर्तमान इस चूर्णिमें मूल प्रकरणकी गाथाओंके प्रतीक मात्र चूर्णिकारने दिये हैं, अतः कुछ गाथाओंका पता जिनभद्रीय बृहत्क्षेत्रसमासप्रकरणसे लगा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं चला है। इस चूर्णिमें जिनभद्रीय बृहत्क्षेत्रसमासकी गाथायें भी उद्धृत नजर आती हैं अतः यह चूर्णी उनके बादकी है।

यहाँ पर चूर्णियोंके विविध उल्लेखोंको लक्ष्यमें रख कर चूर्णिकारोंके विषयमें जो कुछ निवेदन करनेका था वह करनेके बाद अंतमें यह लिखना प्राप्त है कि—प्रकाश्यमान इस नन्दीसूत्रचूर्णिके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं जिसका रचनासमय स्पष्टतया प्राप्त नहीं है, फिर भी आज नन्दीसूत्रचूर्णीकी जो प्रतियाँ प्राप्त हैं उनके अन्तमें संवत्का उल्लेख नजर आता है, जो चूर्णिरचनाका संवत् होनेकी संभावना अधिक है। यह उल्लेख इस प्रकार है—

शकराज्ञः पञ्चसु वर्षशतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति।

अर्थात् शाके ५९८ (वि० सं० ७३३) वर्षमें नन्द्यध्ययनचूर्णी समाप्त हुई। इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका लेखनसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख नन्द्यध्ययनचूर्णिकी समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, लेखनकालका नहीं। अगर प्रतिका लेखनकाल होता तो 'समाप्ता' ऐसा न लिख कर 'लिखिता' ऐसा ही लिखा होता। इस प्रकार ग्रन्थके अन्तमें रचनासंवत् लिखनेकी प्रथा प्राचीन युगमें थी ही, जिसका उदाहरण आचार्य श्रीशीलाङ्ककी आचाराङ्गवृत्तिमें प्राप्त है।

---

१ श्रीवीरात् १०५५ वि० ५८५ वर्षे याकिनीसूनुः श्रीहरिभद्रसूरिः स्वर्गभाक्। निशीथ-बृहत्कल्पभाष्या-ऽऽवश्यकादिचूर्णिकारकाः श्रीजिनदासमहत्तराद्याः पूर्वगतश्रुतधरश्रीमज्जिनभद्रक्षमाश्रमणादिविहितग्रन्थैः श्रीहरिभद्रसूरितः प्राचीना एव यथाकालभाविनो बोध्याः। ११९९ श्रीजिनदत्तसूरिप्रणीतगणधरसार्धशतकवृत्तौ [illegible]। [illegible] [illegible] इति [illegible] पृ० ११ पृ० ११२॥

सूत्र और चूर्णिकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णिकी भाषाका स्वरूप क्या है? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मैं नहीं लिखता हू। सामान्यतया व्यापकरूपसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, यह मैंने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यापरिषत्–श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे "जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय" नामक निबन्धमें कह दिया है, जो 'श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ'में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोंको सूचना है।

परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पाच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये है। पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथायें हैं उनको अकारादिक्रममें दी गई हैं। दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिक्रमसे दिये हैं। तीसरा परिशिष्ट चूर्णिगत पाठान्तर और मतान्तरोंका है। चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णिमें आनेवाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थविर, नृप, श्रेष्ठी, नगर, पर्वत आदि विशेषनामोंका अनुक्रम है। पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णिमें आनेवाले विषयद्योतक एवं व्युत्पत्ति-द्योतक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है। इन परिशिष्टोके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है। वाचक और अध्येता विद्वानोंसे नम्र निवेदन हैं कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढें।

संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके सशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है। खास तोरसे पं भाई अमृतलाल मोहनलाल भोजकका इस सम्पादनमें महत्त्वका साहाय्य है। जिसने चूर्णि और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राण्डुलिपि (प्रेसकॉपी) तैयार की है, साद्यन्त प्रुफपत्र देखे है और इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये हैं। भाई श्री दलसुखभाई मालवणिया–मुख्यनियामक ला द भारतीय सस्कृतिविद्यामदिर–अहमदाबाद तथा पंडित बेचरदासभाई दोसीने मुद्रणके बादमें साद्यन्त देखकर अशुद्धियोंका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है। भाई श्रीदलसुख मालवणिया का आगमोंके सशोधनमें शाश्वत साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौभाग्यकी बात है।

वसत प्रिन्टींग प्रेसके सचालक श्री जयति दलाल और मेनेजर श्री शातिलाल शाह प्रमुख प्रेसके सर्व भाईओंका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है।

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके सशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, एसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोंमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है। इस प्रकार प्राचीन प्रतियाँ, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एव अनेक विद्वानोंके बौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एव चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है। मैं तो सिर्फ इस सशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा हू। अत इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण सशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है।

अन्तमें गीतार्थ मुनिप्रवर एवं विद्वानोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि–मेरे इस सशोधनमें जो भी छोटी मोटी क्षति प्रतीत हो, इसकी मुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा।

स २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा
अहमदाबाद

मुनि पुण्यविजय

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम



श्रीनंदिवृत्ति॥
॥१॥

॥६०॥ ॐ नमो वीतरागाय॥ सद्दसुत्तखंधं नादी एं मंगलाधिकारएं दिन्नि खुत्तो॥ एं दएं एं दी॥ नंदंति वा अणेण त्ति नंदी॥ नंदी पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः॥ तस्स य एवं विधो णिरुक्त्वा वागम्
सुणा सद्दवणा सो वण्णदीजा णणा अप्पुवसुत्ते॥ अहवा जाणगस्स विय सरीरं वति रित्तो॥ पारमविन्नू पसघाता इमो नत्तो॥ सुक्कदामद्दल कउ[illegible]॥ कल्लरि झल्लरी काकसाला काहला तिलिमा॥ भे
पणवा सखो य बारसमो॥ ॥ सा वएणा दिसहोसववो नत्ता॥ अहवा इमा व विहेणा पए वगणाण धिन्नि अज्झयणा तक्कत्ता सणसद्दसुत्तसुतं तत्तेव सवसुत्तारं तेसु किण्णो वसमणाइया
दीयमंगलपयुत्ताति॥ तस्स य मंगल हाणा व सरा अत्थ सगरो या विएणयस्स अज्झयणा[illegible]वा यज्ञा अविडेय सन्नाणा गयसुय पदरिसण[illegible]म पेरावलियकदेतातातासअज्झक ध्यति॥ मं
सुत्तमाय[illegible] णा तिन्न करणा नवा आतानत्तीए एण वसायगएदमति गायपदम गाय नमोक्कारकरत्ता नएति॥ जयति गाथा॥ सा तंदिया दिविसयक्ता यपरीसदो वसगुवधा तिकम्म[illegible]
गारवा परप्पवादिएगायजात सुवाजयति ति त्तिसाति॥ जगति खित्त नावा तमि जत्तो वा तत्ति जोउ जाणी॥ सत्तिन्न अ त्तिमीत सवदा दिया उव रसी लरक विद्यु एणा वि विदपका॥
रक्खि जाणमाएणा वियाए ज॥ अहवा जदिक्कम्मो दिज्जा पज्जोएा पव्ववज्ज॥ तज्जा॥ ज्ञाएण ति ति विमिहो नाए मा विया एगा॥ अहवा॥ जगगादणा तधम्म धम्मा गासायाय लगडएा जी
वत्ति मच्छ जीवगाए इए॥ जा एति जीवा अज्जीव पत्ति हाएा जदाय जउप्पज्जति॥ विगगति धुव्वा तत्तधासवू जाए ति त्तिविया एगा॥ अतत वव नत केवलणाएण समच्छो॥ ता सव
लावेसव्वाजाएण तिन्निखा पिन्न नव निय सन्ति जगति सव्व समिलो गा॥ तस्स न गानाल वातए उक्कप उव्वाता॥ सुएा तिन्ना ज्ञाथेमि ति॥ उस्वीतो त्यर्थः॥ विरिय मणयस
देवासुरा एपरिसाए धम्मा अक्का इलावा ज उवगतेमव कह्नयति ततएज सस्ज्जात॥ नवधालपरो यकारि वच्छदत्ति तनउति॥ जगासत्ती ताए आणदकारी॥ जगाए दोक्कप उव्वाता॥
मधे मिसता ए॥ अवावायए णा वदेस कारए ता॥ ता जातानि तिसदेमनाए दत्ता॥ एग॥ रिया वयत्ता एपरिपन्नता एअहा वयवत्ति॥ विसेसा ताम मीए धम्मक हवए नाउ॥ आए दकारी॥
तत्ता विस्सम ताल इसत्ता एति॥ अत्ततवव लनदिताए दसाकव्वि विति लवति जगास त्ता॥ तत्थ अणुदियरित विद्धमाए सरकरहि जगए धी कदउव्वात॥ मए वयणकाए हि॥ कत्तत्ता॥
तसुमा त्तदिरक्काता झाएणो वत्ति॥ अन्नतवला तन सच्छपा एा सएादत्तादमिता तवति जगासद्दि ति जगासत्ता॥ तमिवधकदउव्वातजो अपएाय रक्सवा आवती पुविए॥ परिसय ति॥
सो वधलगवधा सुडविपरी संदेहो वस याद्दिसुय विद्धमा एणा विसा तसवधत्ता अपरिवयाता॥ एवि उसवे इति आता जगा वध॥ आनत वत्तु तनस इ - सतस्सस्स दधत्ता दसि त्ता सवति॥ पि
त्ता मदेत्ति॥ जाए उ पिता मदो॥ सो य सगव वुद्ध सज्जसत्ता ए पितामदो॥ कयंउच्यातामसत्ता एज्जहिमा दिलरक्काएगा धम्मा॥ पितारक्का गत्ता तात्ता तालगवधम्म पिता एव दस्सहस्ता एा तगश्पिव
मदो तवति॥ आनतवलात धम्मपउवेआदि विरिया तात्तलवति पतीगमा ज्ञा॥ पुवस्य पाठंतरं इम जिएवसत्तो सलतिय वसतवि॥ सो य धम्मा तगवता पाएरी॥ ता॥ वत्ता सगती मदा वीएरा जिए
य वसरो॥ रनिरसजमता सव्व दए॥ वक्कमा ताउलाय संवारए॥ किया मगिलातएति॥ वामदा हिएाए वा उरिमे पो छिमवलएा ए ज कस्सर के वक्करएा सविक्कमो तसाति॥ ज्ञयद सउ

सर्व्वक॥ पुउयसअएगा उसपदे लववनत्रे॥ एव रय उप्पणकाल यस्त्ता जीना इति अएता॥ असोरवहा यस्तवति॥ ततिमउयाएं सुस्सहत्तएता तिसु विज्ञा रागाए सु तसुयत्वा स्वव नन्ना ए
कयामीएासीत्वा दि॥ इक्कालता सिन्नलावइति छधक सूत्रं॥ उविवइत्यादि॥ रक्काल अभित्ततावकसउ॥ त्रिकालतादसएतावेव अधलतत विहा॥ छव्वमधिदिवत धुक्कएताव
जीवादिएा वपदेसु इति सुक्क तियता जधालाकव्वतेग वासिका यद्धिवएियत्वएतावेवसा सयंजासजवतीति॥ समया वलिकसुक्कहत्ता धिताद्धिविकालं मासयत्वएता वेवावाय
एाद्दिसु अरकयता सिज्झयो अक्खयं॥ गगामिंउव दिह्वि पिपाउरीकक्खवत्तु अरकयत्वएताव॥ अव्वयं ता सव्वाया अव्वयं॥ सातणग्गराव द्वियस्स इवत्ता अद्धयत्वएताववा
सुपमाए अवट्ठितजवद्दीपा दिवत्तु अरकयत्वएता वलवसवद्धा विविच्छमाएा शिद्धा अन्ता सावत्ता अविनद्धीता॥ अहवा एातच्छया दिया परा दिया॥ वा दक आह॥ इह दउवालसग धुवा
दिपदए ह्व वित्त॥ किमा एागग्झंग आचार्यादि॥ जस्य जिएगए सददा वादिएा तहा तमितयएं सवज्ञाएा तवे वगसी कहि विदिहं॥ तागज्ञा॥ इह उवालसग सधुवा हिएह वित्तसमा साधको
इमाहिंता॥ सम्जधाए मातसादि कव्वा॥ तहजवा लसमसुत्तं उद्धिदेदवाहि॥ याएत्ता सुयएाएा केवलं तप उच्चतएिवे॥ दत्ता ता पसुयएाएाएा सुयएाएाएाएा व उ तसुत्त विसा
एा सवदहा दिजाएति॥ पामइति विराधो उव्वाता॥ जसा अदिहाए विमसमा॥ रियाएायामएावापआगारमा तिद्दशाएावादिह॥ तस्कइ याम सएापयसलएि तस्सुयएाएाएासा॥
एातसिाए विरोहा अरता उए लसुएाएी तमसद्दवएाएायमाएा तासु तज्यत्साय सयएाए मति विसस ताजाएियत्वो॥ पवस्वत्तकालतता वसुविल्लाएितवाउतए॥
एादसएउतसति॥ अरकरगादा इमायो इस विदसुतलावपक्वएामसतापद्ध॥ आयारादिगएाधयागम एएीत सपत्तयवउद्दसामितसमवा॥ तधा स्वदोएि कालएितावातावल
उहिमधावन्ताएि साएि कए जयसुयता वस्यायरिप दिएिसूदा॥ तसुमदएवि॥ दीदमिद्धगआगमगा दा॥ इमा तस्स इववहिंगमएा उसमइ गाथा॥ विएायस्स अज्झयमव एा॥ इमा स्थिर
सतवगारस्वुगा॥ जत तएियसुएा वाह्यति रित्त वा विअस्वा विवरीय तसमएयो गधरादेइहा उमसकति॥ ७॥ एिरएगा मसमदा मक्कसदाजिमापसुयती॥ सवजोग हिता कल
कम हिता वामं तच्छित रक्ता जउकडे य स त्त्विधिएक उएा॥ ॥ सक्का जाय उवसि तउव्यति का एउ अप्पतवति सुन्दधायतहएी ममाप्ता॥ ॥ प्रथं १५५५॥ श्री॥ ॥ श्री॥

नन्दिसुत्तचुण्णी ● सं० प्रतिके प्रथम पत्रकी और अंतिम (१५१) पत्रकी द्वितीय पृष्ठि।

॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महइ-महावीर-वद्धमाणसामिस्स ॥

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुण्णीए संजुयं ।



॥ नमो भगवते वर्द्धमानाय ॥

सव्वसुतक्खंधगादीण मगलाधिकारे णंदि त्ति वत्तव्वा । णंदणं णंदी, णंदंति वा अणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः । तस्स य चतुव्विहो निक्खेवो । गताम्रु णाम-ट्ठवणासु दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो वारसविधो तूरसंघातो इमो—

भंभा १ मकुंद २ मद्दल ३ कडंब ४ झल्लरि ५ हुडुक्क ६ कंसाला ७ ।
काहल ८ तलिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य वारसमो ॥१॥

[ ]

भावणंदी णंदिसद्दोवयुत्तभावो । अहवा इमं पंचविहणाणपरूवगं णदि त्ति अज्झयणं, तं च सुतंसेण सव्वसुतब्भंतरभूतं । तं च सव्वसुतारंभेसु विग्घोवसमणत्थमादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलट्ठाणावसरपत्तस्स गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुतगोरवुप्पादणत्थं अविच्छेदसंताणागतसुतप्पदरिसणत्थं च इमं थेरावलिं कहेत्ता ततो से अत्थं कहयंति । सव्वसुतत्था य जतो तित्थगरप्पभवा, अतो भत्तीए पण्णवग-सावग-पढग-चिंतगा य पढमताए णमोकारं करेत्ता भणंति—

[सुत्तं १]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।
जगणाहो जगबंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयति० गाहा । सोतिंदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसग्ग-चउघातिकम्म-ऽट्ठप्पगारं वा परप्पवादिणो य जिणमाणो जितेसु वा जयति त्ति भण्णाति। जगं ति—खेत्तलोगो तम्मि जे जीवा तेसिं जाओ जोणीओ—सच्चित्त-सीत-संवुडादियाओ चउरासीतिलक्खविहाणा वा विविहपगारेहिं जाणमाणो वियाणओ । अहवा जो जहा जेहिं कम्मेहिं जाए जोणीए उववज्जति तं तहा जाणति त्ति विसिट्ठो जाणगो वियाणगो । अहवा जगग्गहणातो धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगास-पुग्गलग्गहणं, जीव त्ति सव्वजीवग्गहणं, जोणि त्ति—जीवा-ऽजीवुप्पत्तिठाणं, जहा य जं उप्पज्जति विगच्छति धुवं वा तं तहा सव्वं जाणइ त्ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवलनाणसामत्थतो सव्वभावे सव्वहा जाणति

---

१ °क्खधतादीण आ० दा० ॥ २ अणाए त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ गयाओ णाम-ट्ठवणाओ । दव्व° आ० दा० ॥ ४ °मादीय मंगलट्ठं पयु° आ० ॥ ५ °वलिय कहेत्ता आ० दा० ॥ ६ कथयंति आ० दा० ॥ ७ पण्णावग° आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सललियवसभविक्कमगती महावीरो इत्युत्तरार्धपाठभेदश्चूर्णौ । नाय पाठभेदः कस्मिंश्चिदपि सूत्रादर्शे उपलभ्यते ॥ ९ °सग्गावघाति° आ० । °सग्गुवघाति° दा० ॥ १० खेत्तभावो तम्मि आ० दा० ॥

•ति स्थापितं भवति । 'जगगुरु' त्ति जगं ति–सण्णिलोगो, तस्स भगवानेव गुरुः । कथम् ? उच्यते— [पि० १८६ प्र०] गृणाति शास्त्रार्थमिति गुरुः, प्रवीतीत्यर्थः, तिरिय-मणुयं-देवा-ऽसुराए परिसाए धम्ममक्खाति । जो य ण मुज्झति तं सम्मं कहयति त्ति तेण गुरू, अनेन वचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति । जगा–सत्ता तासु णंदकारी जगाणंदो । कहं ? उच्यते–सव्वेसिं सत्ताणं अभयदाणोवदेसकरणत्तातो । अतो भणितं–"सव्वे सत्ता ण हंतव्वा ण परियावेतव्वा ण परिघेत्तव्वा ण अज्जावेतव्व" [आचा० श्रु १ अ ४ उ २ सू २] त्ति । विसेसतो सव्वीणं धम्मकहणत्तातो आणंदकारी, ततो वि विसेसतो भव्वसत्ताण त्ति । अनेन वचनेन हितोपदेशकर्तृत्वं दर्शितं भवति । जगा–सत्ता ते अण्णेहिं परिभविज्जमाणे रक्खइ त्ति जगणाहो । कहं ? उच्यते–मणो-वयण-काएहिं कत-कारिता ऽणुमतेहिं रक्खतो जगणाहो भवति । अनेन वचनेन सव्वपाणीणं सणाहता दंसिता भवति । 'जगबंधु' त्ति जगा–सत्ता तेसिं बंधू जगबंधू । कहं ? उच्यते–जो अप्पणो परस्स वा आवतीए वि ण परिच्चयति सो बंधू, भगवं च छउमत्थो वि परीसहोवसग्गादिसु बाहिज्जमाणो वि सत्तेसु बंधुत्तं अपरिच्चयंतो ण विराहेति त्ति अतो जगबंधू, अनेन वचनेन सव्वसत्तेसु सबंधुता दंसिता भवति । पितामहो त्ति जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगवं चेव । सव्वसत्ताणं पितामहो कहं ? उच्यते–सव्वसत्ताण अहिंसादिलक्खणो धम्मो पिता रक्खणत्तातो, सो य धम्मो भगवता पणीतो अतो भगवं धम्मपिता, एवं च सव्वसत्ताणं भगवं पितामहो त्ति । अनेन वचनेन धम्मं पडुच्च आदिपुरिसत्तं स्थापितं भवति । एतीए गाहाए पच्छद्धस्स पाढंतरं इमं–"जिणवसभो सक्कणिव्वसमविक्कम [पि० १८६ द्वि०] भद्दो महावीरो ।" जिण एव वसभो जिणवसभो । वसभो त्ति समत्थभावत्थवाणे । धवलतो सुभा गायसंठाणकिरिया सलक्खिता भण्णति । वाम-दाहिणाणं वा पुरिम-पच्छिमचलणाण वा अणुक्खेवकरणं स विक्कमो भण्णति, दुपदस्स पुण एगचलणुक्खेवो चेव विक्कमो । सेसं कंठं ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ ।
जयइ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

जयति सुताणं० गाहा । राग-दोसादिअरी जिणतो अरिंदेसु वा जयति त्ति । ['सुताणं'] सव्वसुताणं ति, सुतधम्मस्स भगवंताता पभवो । 'पभवो' त्ति पसूती । भविट्ठवयणपरिहारातो पच्छिमो वि अपच्छिमो भण्णति, अहवा पच्छाणुपुव्वीए अपरिछिमो, रिसभो पच्छिमो । अविसिट्ठजीवलोगस्स विसिट्ठसण्णिजीवलोगस्स वा, अहवा सम्मदिट्ठिमादिसंमता ऽसमत्तलोगस्स गुरू । महं आता जस्स सो य अकम्मवीरियसमत्थतो महात्मा, केवलादि विसिट्ठलद्धिसामत्थतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स ।
भद्दं सुरा ऽसुरणमंसियस्स भद्दं धुयरयस्स ॥ ३ ॥

भद्दं सव्व० गाहा । भायते भाति वा भद्रम्, तं भगवतो भवतु त्ति । सव्वजग त्ति–लोगा । अद्धविहो वि लोगनिक्खेवो भाणितव्वो [आव० नि० गा० १ ९७] । सेसं कंठं ॥ ३ ॥ इमं संघस्स थयलग्गं—

---

१ धन्सवेया चे० श० ॥ २ ण पवत्तमप्पा जे० ॥ ३ "सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हंतव्वा न अज्जावेतव्वा न परियावेतव्वा न परिघेतव्वा न उद्दवेयव्वा" इतिरूपं सूत्रमाचारांगे ॥ ४ विसेसेण श० ॥ ५ भद्दो भवति । अनेन श० ॥ ६ रयणाता चं० ॥ ७ भाणत्ताणं अण श० ॥ ८ च्छिमो वीरो रिसभो श० ॥

[सुत्तं २]

भद्दं सीलपडागूसियस्स तव-णियमतुरगजुत्तस्स ।
संघरहस्स भगवओ सज्झायसुणंदिघोसस्स ॥ ४ ॥

भद्दं सील० गाहा । रहो सामण्णतो पंचमहव्वतमइओ । उस्सितो त्ति तस्सऽट्ठारससीलंगसहस्सूसिता ज्ञतपडागा । वारसविहो तवो-इंदिय-णोइंदियो य णियमो एते अस्सा । सज्झायसद्दो णंदिघोसो । सेसं कंठं ॥४॥

संघस्सेव इमं चक्करूवगं—

संजम-तवतुंबा-ऽरयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।
अप्पडिचक्कस्स जओ होउ सया संघचक्कस्स ॥ ५ ॥

संजम० गाहा । विसुद्धभावचक्कस्स सत्तरसविधो संजमो तुंबं । तस्स वारसविहतवोमता अरगा । पारियल्लं ति–जा वाहिरपुट्ठयस्स वाहिरभमी, सा से सम्मत्तं कतं, जम्हा अण्णेहिं चरगादिएहिं जेतुं [जे० १८७ प्र०] ण सक्कति तम्हा एयं जयति, अप्पडिचक्कं च एतं । णमो एरिसस्स [संघ]चक्कस्सेति ॥ ५ ॥ इमं संघस्सेव णगररूवगं—

गुणभवणगहण ! सुयरयणभरिय ! दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।
संघणगर ! भद्दं ते अक्खंडचरित्तपागारा ! ॥ ६ ॥

गुणभवणगहण० गाहा । तम्मि पुरिससंघणगरे इमे गुणा—पिंडविसुद्धि-समिति-गुत्ति-दव्वादिअभिग्गह-मासादिपडिमा-गोयरे य चरगादिया, एमादिउत्तरगुणा तम्मि संघणगरे भवणा कता, भवण त्ति घरा, तेहिं गहणं ति–निरंतरं संठिता घणा । तं च संघपुरिसणगरं अंगा-ऽणंगादिविचित्तसुतरयणभरितं । खयोवसमितादि-सम्मत्तमइयरच्छाओ य, मिच्छत्तादिकयारवज्जितत्तणतो विसुद्धाओ । मूलगुणचरित्तं च से पागारो, सो य अखंडो त्ति–अविराधितो निरतिचार इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ६ ॥ इमं पि संघस्सेव पउमरूवगं—

कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयरयणदीहणालस्स ।
पंचमहव्वयथिरकण्णियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥
सावगजणमहुयरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयबुद्धस्स ।
संघपउमस्स भद्दं समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥　　[जुम्मं]

कम्मरय० गाहा । कम्म एव रयो कम्मरयो । अहवा जं पुव्वबद्धं तं कम्मं, वज्झमाणं रयो, तं सव्वं पि

---

१ **भद्द सील०** इति **संजमतव०** इति **गुणभवण०** इति च सूत्रगाथात्रिक श्रीहरिभद्रसूरिवृत्तौ श्रीमलयगिरिपादवृत्तौ च पश्चानुपूर्व्या व्याख्यातमस्ति ॥ २ हरि०वृत्तौ मलय०वृत्तौ च °**सुणेमिघोसस्स** इति पाठभेदो निर्दिष्टोऽस्ति । **अगविज्जाशास्त्रे**ऽपि– "तत्थ सरसपक्खे हिरक्ष-मेघ-दुदुभि-वसभ-गय-सीह-सद्दूल-भमर-रथ**णेमिणिग्घोस**-सारस-कोकिल-उक्कोस-कोंच-चक्काक-हस-कुरर-बरिहिण-ततीसर-गीत-वाइत-तलतालघोस-उक्कुट्ठ छेलित-फोडित-किंकिणिमहुरघोसपादुब्भावे सरसपण्ण बूया । " इत्यत्र **णेमिणिग्घोस** इति पद वर्त्तते ॥ ३ °**पडाता** आ० ॥ ४ ख० मो० आदर्शयो केनापि विदुषा °**वारयस्स** स्थाने °**धारस्स** इति सशोधित वर्तते । एतत्पाठानुसार्येव **मलयगिरि**पादव्याख्यान वर्त्तते ॥ ५ °**तवो महाअरगा** जे० दा० ॥ ६ **अखडचारित्त**° मु० ॥ ७ °**च्छाया य** आ० दा० ॥ ८ °**कतवर**° आ० दा० ॥ ९ **णिरइचार** आ० ॥ १० **पउम**° आ० दा० ॥ ११ °**यरपरि**° हे० ल० ॥

णलोहमिव कल्प्यते । अहवा पुव्वबद्धं कम्म पंको, पव्वज्जमाणं जलोहो, ततो विणिग्गतो संघपउमो । तस्स णालो, सुत एव रयणं सुतरयणं तं से णालो कतो । पचमहव्वता य से थिर त्ति–दढा ते कण्णिय त्ति–बाहिरपत्ता कता । गुणा–मूलुत्तरगुणा य से अणेगविहा [केसरा] तेहिं गुणेहिं भासस्स त्ति–भविकयोगयुक्तस्य गुणकेसराभस्स मूलादिगुणकेसरयुक्तस्य इत्यर्थः ॥ ७ ॥

पितियगाहाए–परिवुड त्ति–परिवारित, जिणसूरस्स धम्मकहणवयणतेयेण पबोधितं । अणेगसमण सहस्सा य से अब्भंतरपत्ता कता । परिसस्स संघपदुमस्स भद्दं भवतु ॥ ८ ॥ इमं चंदसंघरूवगं—

तव-संजममयलंछण ! अकिरियराहुमुहदुद्धरिस ! णिच्चं ।
जय संघचंद ! णिम्मलसम्मत्तविसुद्धजोण्हागा ! ॥ ९ ॥

तवसंजम० गाहा । संघचंदस्स मियो तव-संजमा, तेहिं लंछितो । अकिरिय त्ति–णत्थियवादी ते राहुमुहं, तेहिं दुण्णपरिसो त्ति–ण सक्कते चेतुं । 'णिच्चं' ति सव्वकालं । संकादिविसुद्धसम्मत्तं से जोण्हा । सेसं कंठं ॥ ९ ॥

सूरसंघरूवगं इमं—

परतित्थियगहपहणासगस्स तवतेयदित्तलेसस्स ।
णाणुज्जोयस्स जए भद्दं दमसंघसूरस्स ॥ १० ॥

परतित्थिय० गाहा । हरि-हर-हिरण्ण-सक्कोलूक-चरग-तावसादयो परतित्थिया गहा, तेसिं णाणतेयप्पभं सुतादिणाणप्पभाते णासेति । [पि० १८७ द्वि०] तव-णियमकरणातो य भासादिदित्तलेसो । लेस्स त्ति–रस्सीयो । सुतादिणाणुज्जोवसपण्णस्स य इमम्मि जए संघसूरस्स भद्दं भवतु । सेसं कंठं ॥ १० ॥ इमं संघसमुद्दरूवगं—

भद्दं धिईवेलापरिगयस्स सज्झायजोगमगरस्स ।
अक्खोभस्स भगवओ संघसमुद्दस्स रुंदस्स ॥ ११ ॥

भद्दं धिति० गाहा । जैले-वेतिपत्तरे जं रमणं सा वेला, सा य मेरा वि भण्णति, एवं संघसमुद्दस्स धिती वेला, ताए परिवुडो त्ति–वेढितो । वायणादिसज्झायणाणकरणं मगरो । परवादोपसर्गादिभिर्न क्षुभ्यते । रुंदो महंतो । सेसं कंठं ॥ ११ ॥

इमं संघस्स मेरुरूवगं–तस्स य पव्वतस्स इमे रूवगा, तस्स य पव्वतस्स इमे अवयवा–पेढं मेहला उस्सयो सिला, मेहलाहिं कूडा, मेहलाए वणं गुहा, गुहासु य मइंदा सुवण्णादिधातवो, णाणाविधवीरियोसहिपज्जलितो, णिज्झरा य सम्मिस्सुत्ता, कुहरा य से मयूरादिपक्खिउवसोभिता, अणुसम्पातितिपिज्जुस्सवोवसोभितो य सो, कप्पादिरुक्खुवसोभितो य, अंतरतरेसु य वेरुलितादिरतणसोभितो । एतेसिं पदार्थ पडिरूवेण इमाहिं छहिं गाहाहिं उवसंहरेति—

१ पयुमो खा । पउमो दा ॥ २ गुणेहिं अब्भहितस्स त्ति भणित खा ॥ ३ परिकरियस्स जिण खा ॥ ४ इमं संघस्स चंदरूवगं खा ॥ ५ जोण्हागा शु । जुण्हागा वे ॥ ६ मियो णाम तव खा ॥ ७ संघस्स सूररूवगं तिमं खा ॥ ८ धीवेला वे वे ल ॥ ९ परिगयस्स वर्णितु सूत्रार्थेषु । हरिभद्रपादिभक्तगिरिपादौ व्याख्यातयानुमारेण व्याख्यातमस्ति । चूर्णिकृत्सम्मतस्तु पाठः पुस्तकावलौ नोपलभ्यते ॥ १० जल(पदि) (? इदिपं) खा ॥ ११ सुक्खरा वे दा ॥ १२ मिगिरा खा ॥ १३ णाणादिविविधदित्तोसहि खा ॥ १४ संघा(पा)ते खा ॥

सम्मद्दंसणवइरदढरूढगाढावगाढपेढस्स ।
धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलागस्स ॥ १२ ॥
णियमूसियकणयसिलायलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।
णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधुद्धुमायस्स ॥ १३ ॥
जीवदयासुंदरकंदरुद्दरियमुणिवरमइंदइण्णस्स ।
हेउसयधाउपगलंतरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥
संवरवरजलपगलियउज्झरपविरायमाणहारस्स ।
सावगजणपउररवंतमोरणच्चंतकुहरस्स ॥ १५ ॥
विणयमयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।
विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥
णाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।
वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥[10]　[छहिं कुलयं]

सम्मद्दंसण० गाहा । णियमू० गाहा । जीवदया० गाहा । संवर० गाहा । विणय० गाहा । णाणवर० गाहा । संघपव्वतस्स सम्मद्दंसणं चेव वइरं । तं च संकादिसल्लरहियत्तणयो दढं ति[13] रूढं ति—वड्ढितं, कहं ? विसुज्झमाणत्तणयो । गाढं ति—अतीव, अवगाढं ति—ओगाढं, सद्दहाणत्तणतो जीवादिपदत्थेसु अतीवओगाढं ति वुत्तं भवति । एत पेढं । धम्मो दुविहो मूलुत्तरगुणेसु । सो य दुविहो वि वरो त्ति—पधाणो । तत्थुत्तरगुणधम्मो रयणा, तेहिं मडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवण्णं, तम्मयी मेहला, तया जुत्तस्स मेहलागस्स ॥१२॥

नियमो त्ति इंदिय-णोइंदिएसु अणेगविधो, सो य णियमो सिलातला तेहिं चेव उस्सितो, असुभज्झवसाणविरहितत्तणतो कम्मविसुज्झमाणत्तणतो वा उज्जलसुत्त-ऽत्थाणुसरणत्तणतो य जलति चित्तं, चिंतिज्जइ जेण तं चित्तं, तं चेव कूडं ति चित्तकूडं तस्स । [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोतिस-भवण-वेमाणिया विज्जाहर-मणुया य तेण णंदणं, वणं ति—वणसंडं । तं च लता-वल्लि-वितोणाणेगोसहिसतेहिं गहणं, पत्त-पल्लव-पुप्फ-फलोवेवेतेहिं मण-

१ °सणवरवइरदढरूढ° डे० शु० ल० मु० । °सणथोयरद्दरूढ° स० ॥ २ °ढपीढ° सं० ॥ ३ °लायस्स स० ॥ ४ °यलज्ज° शु० ॥ ५ °गंधुद्धमा° सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु । °गधद्धमा° हरि० वृत्तौ ॥ ६ °मयदद्दधस्स डे० । °मइंदद्ददस्स ल० ॥ ७ °तरयणदित्तो° मो० मु० । °तरित्थदित्तो° डे० ॥ ८ विणयणयपवर° मसूप्र० । चूर्णिकृत्सम्मत सूत्रपाठः कुत्राप्यादर्शे नोपलभ्यते ॥ ९ विविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ससूप्र० । चूर्णिकृत्सम्मत सूत्रपाठः कुत्राप्यादर्शे नोपलभ्यते ॥

१० सप्तदशगाथानन्तरं चूर्णिकृदादिभिरव्याख्यात गाथायुगलमिदमधिक सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषूपलभ्यते—
गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुयधतवमंडिउद्देसं । सुयवारसंगसिहरं सघमहामदर वंदे ॥१॥
नगर रह चक्क पउमे चंदे सूरे समुद्द मेरुम्मि । जो उवमिज्जइ सयय तं संघ गुणायर वंदे ॥२॥
अत्रार्थे जेसू० आदर्शे इय टिप्पणी वर्त्तते—"गुणेत्यादि गाथा २ वृत्तावव्याख्यातम्" ॥

११ णाणावरण० गाहा जे० दा० । अशुद्धोऽयं पाठभेदः ॥ १२ °इसण से वइर जे० ॥ १३ °ति चिरवड्ढित आ० ॥ १४ य उज्जलं-दित्तिमं चिंतिज्जइ तेण दित्त, तं चेव आ० । असङ्गतोऽशुद्धश्चाय पाठः ॥ १५ °विताणणेगसंठाणसंठि- तेहिं गहणं जे० दा० ॥ १६ °लोव्वतेहिं आ० ॥

हारित्तणतो मणहरं, गंधतो सुरभिगंध। सीतलवणसंडे वि जम्हा सावयो णंदंति मणोरंति रमतीत्यर्थः। विविहलद्धि-विसेसतो य मणहरं सीलवणं, विसुद्धभावत्तणतो य सुगंधं, जहा दव्ववणसंडं गंधेण उउमात वि–व्याप्तं तहा सीलगंधेण संघस्स गंधुदुमायस्से ॥१३॥ किंच—

जं पव्वतासण्णं सिलाफलगरणं तं कडगं ति। भावे जीवेसु दयाकरणसुंदरं जं त कडगं ति। तस्स य उं–प्पाबल्ले, दरितो चि–दप्पितो, जीवदयाकरणदप्पितो त्ति वुत्त भवति। को य सो? सुभिगमो। सो चेव सुभिगमो भद्दो परप्पवादिसासयसंपमयाण इंदो। कहं? सितभावउंपमभावत्तणतो। हेतु त्ति–पक्खधम्मो कारणं वा, ते सतम्मतो सुत्ते समवति। ते य हेतवो धातू, ते य पगलंति परूवणगुहाए। सा य परूवणगुहा णाणादिर-तणादिपहिं दित्ता, खेलोसहिमादिओसहीहिं वा दित्ता ॥१४॥

एव दिपोसहिजुत्तस्स संघस्स सवरो त्ति–पच्चक्खाण, त चेव सम्मिल, किंचि पव्वतम्गातो ओसरितं उच्छरं, इहावि रत्ताइगभावातो खयोवसमिप उच्छरं, ततो पलंबिता खओवसमितसंवरवगधारा, स चेव धारा हारो, तेण विरायते–सोमति त्ति। सावगजणो पउरो त्ति–बहू मयुरा सो य गीतद्दणीए रवति त्ति–रवती, ते चेव मोरा णाडगादीहि य णच्चंति। जं पव्वतस्स कंदे समप्पदेसं रुक्खाकुलं [चं०१८८ द्वि०] च त कुहरं। एवं संघपव्वतस्स गंहवणमंडवादी कुहरं ति ॥१५॥

विणयकरणातो विणयेणतो मुणी। सो य विणयकरणचेण कुरते, त चेव कुरितं विज्जुतं ति–ज्जोरितं, तं च उज्जलं ति–निम्मलं, तेण उज्जलत्तेण संघसिहरं जस्सितमिव लक्खिज्जति। संघसिहरं च पावयणिपुरिसा दट्ठव्वा। तत्थ य विविहकुलुप्पण्णा साहवो कप्परुक्खा, खीरासवादिलद्धिफलेहिं ये णयमरा, लद्धिरहिता साहवो कुसुमितो कुलवग त्ति दट्ठव्वा ॥१६॥

मति-सुतादिनाणा वर त्ति–पहाणा, ते चेव णाणावरलियादिरयणा इव कंता, कंता इति–कंतिजुत्ता। कंतिजुत्तणातो चेव सविसतेण जीवादिपदत्थसब्भावलंभतो दिप्पंति। नाणस्स य भक्तो णाणावरणं, तम्मिगमातो य विगतमलं। चूलामणिरिव सिहरोवरि चूला, सा य णाणातिसयगुणेहिं जुत्ता, जुगप्पहाणो पुरिसो चूला इति। एवं संघपव्वतस्स पेरादिचूलपव्वतसावकप्पियस्स वदामि विणयपणतो त्ति इम वि गाहत्थं एवं क्रियापदं ति ॥१७॥

एवं परमतित्थगरस्स संघस्स य पणामे कते इमा अवसेसप्पणा आवली भण्णति—सा तिविहा तित्थकर १ गणहर २ थेरावली ३ य। तत्थ तित्थकरावलिदरिसणत्थं इमं भण्णति—

[सुत्त २]

वंदे उसभ अजिअ संभवमभिणदणं सुमति सुप्पभ सुपास।
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज च ॥१८॥

---

१ रुम किया। जं आ ॥ २ हत्– प्रावल्ये इत्यर्थः ॥ ३ °दप्पिता आ ॥ ४ इयाचि आ ॥ ५ बहु आ ॥ ६ गीतगुणीए आ ॥ ७ कंदे आ ॥ ८ पदाण° आ ॥ ९. पणातो आ ता ॥ १० य पणमरा आ ॥ ११ ता गुणपय ति आ ॥ १२ कंतादिजुत्त आ ॥ १३ सो य णाणातिसयरयसरूपावकमगुणोहजुया जुगप्पहाणा पुरिसा चूला आ ॥ १४ त आ ॥ १५ भरतपण्णा आ आ ॥ १६ सेज्जंसं चं ह। सेयंसं पं ॥

विमलमणंतइ धम्मं संतिं कुंथुं अरं च मल्लिं च ।
मुणिसुव्वय णमि णेमी पासं तह वद्धमाणं च ॥ १९ ॥ [जुम्मं]

वंदे उसभ० गाहा । [विमल० गाहा य] कंठा ॥१८॥१९॥ चरमतित्थगरस्स इमा गणहरावली—

[सुत्तं ४]

पढमेत्थ इंदभूती बितिए पुण होति अग्गिभूति त्ति ।
ततिए य वाउभूती ततो वितत्ते सुहम्मे य ॥ २० ॥
मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चेव अयलभाता य ।
मेतज्जे य पभासे य गणहरा होंति वीरस्स ॥ २१ ॥ [जुम्मं]

एत्थ गणहरावली ॥२०॥२१॥ तो सुधम्मातो थेरावली पवत्ता, जतो [जे०१८९ प्र०] भणति—

[सुत्तं ५]

सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंवूणामं च कासवं ।
पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥

सुहम्मं अग्गिवेसाणं० सिलोगो। समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुधम्मे अंतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंवुणामे कासवे गोत्तेणं । जंवुणामस्स अंतेवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते । पभवस्स अंतेवासी सेज्जभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥

जसभद्दं तुंगियं वंदे संभूयं चेव माढरं ।
भद्दबाहुं च पाइण्णं थूलभद्दं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभद्दं० गाहा । सेज्जभवस्स अंतेवासी जसभद्दे तुगियायणे वग्घावच्चसगोत्ते । जसभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा– भद्दबाहू पाँयीणग्गिसगोत्ते, सभूतविजए य माढरसगोत्ते । सभूतविजयस्स अंतेवासी थूलभद्दे गोतमसगोत्ते ॥२३॥

एलावच्चसगोत्तं[11] वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।
तत्तो [13]कासवगोत्तं वहुलस्स सरिव्वयं वंदे ॥ २४ ॥

---

१ °मणंतय डे० ल० मु० ॥ २ णेमिं ख० जे० मु० ॥ ३ इद गाथायुगल चूर्णिकृता चूर्णौ स्वयमेवेत्थमुल्लिखितमस्ति । पढमित्थ इंदभूई बीए पुण होइ अग्गिभूइ त्ति । तइए य वाउभूई तओ वियत्ते सुहम्मे य ॥ मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिए चेव अयलभाया य । मेयज्जे य स० डे० शु० मो० ॥ ४ वायभूई डे० ल० ॥ ५ तहा मो० ॥

६ एकविंशति-द्वाविंशतिगाथयोरन्तराले चूर्णिकृताऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभद्रसूरि-श्रीमलयगिरिपादाभ्यां स्वस्ववृत्तौ व्याख्याता जिनशासनस्तुतिरूपा इयमेका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु वर्त्तते—

णेव्वुइपहसासणय जयइ सया सव्वभावदेसणयं । कुसमयमयणासणयं जिणिंदवरवीरसासणयं ॥
जयति शु० । जयउ डे० ल० । जिणंद° ल० ॥

७ जंवुणाम स० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायन्नं डे० ल० ॥ १० वाईणतिसगोत्ते आ० ॥ ११ °वच्छस° स० डे० ल० । °वत्सस° शु० ॥ १२ °गुत्तं शु० ल० ॥ १३ कोसियगोत्तं सम्प्र० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिपादाभ्यामेतत्पाठानुसारेणैव व्याख्यातमस्ति । चूर्णिकृत्सम्मत सूत्रपाठो नोपलभ्यते कुत्राप्यादर्शे ॥

एलावच्च० गाहा । थूलभद्दस्स अंतेवासी इमे दो थेरा—महागिरी एलावच्चसगोत्ते, सुहत्थी य वासिट्ठसगोत्ते । सुहत्थिस्स सुट्ठिय-सुपडिबुद्धादयो आवलीते जेहा दसासु [अ० ८ सुत्तं २१०] तहा भाणितव्वा, इहं तेहिं अहिगारो णत्थि, महागिरिस्स आवलीए अधिकारो । महागिरिस्स अंतेवासी बहुले बलिस्सहो य दो जमलभातरो कोसियसगोत्ता । तत्थ बलिस्सहो पावयणी जातो, तस्स पुत्तिकरणे भण्णति—"बहुलस्स सरिव्वयं वंदे" । 'सरिव्वयं' ति सरिसव्वयो, वयो य जम्मकालं पडुच्च जा जा सरीरपरिवड्ढिअवत्था सा सा वतो भण्णति ॥ २४ ॥

हारियगोत्तं साइं च वंदिमो हारियं च सामज्जं ।
वंदे कोसियगोत्तं संडिल्लं अज्जजीयधरं ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । बलिस्सहस्स अंतेवासी सातो हारियसगोत्तो । सातिस्स अंतेवासी सामज्जो हारितसगोत्तो चेव । सामज्जस्स अंतेवासी संडिल्लो कोसियसगोत्तो, सो य अज्जजीतधरो त्ति अज्ज त्ति—आर्यं साधु वा जीत त्ति—सुत्तं धरति, सुत्तत्थस्स अविच्चुतिधरणधातो, वंदे त्ति वक्कसेसं । पाढंतरं वा "जीयधरं" ति, आर्यत्वात् जीतं धरेति—रक्षतीत्यर्थः । अण्णे पुण भणंति—संडिल्लस्स अंतेवासी जीयधरो अणगारो, सो य अज्जसगोत्तो ॥२५॥ संडिल्लस्स सीसो—

तिसमुद्दखायकित्तिं दीव-समुद्देसु गहियपेयालं ।
वंदे अज्जसमुद्दं अक्खुभियसमुद्दगंभीरं ॥ २६ ॥

तिसमुद्द० गाहा । पुव्व-दक्खिणा-ऽवरा ततो समुद्दा, उत्तरतो वेयड्ढो, एतदंतरे खातकित्ती । सेसं कंठं ॥२६॥ तस्स सीसो [जे० १०९ द्वि०] इमो—

भणगं करगं झरगं पभावगं णाण-दंसणगुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥ २७ ॥

भणगं० गाहा । कालियपुव्वसुत्तत्थं भणतीति भणको । चरण-करणक्रियां करातीति कारको । सुत्तत्थे य मणसा झायंतो झरको । परप्पवादिजयेण पवयणप्पभावको । णाण-दंसण-चरणगुणाणं च पभावको आधारो य । सेसं कंठं ॥२७॥ तस्स सीसो—

णाणम्मि दंसणम्मि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।
अज्जाणंदिलखमणं सिरसा वंदे पसण्णमणं ॥ २८ ॥

---

१ अत्र चूर्णिकृता हरिभद्रपादैश्च सुहस्ती भगवान् वृद्धसम्प्रदायानुसारेण वासिष्ठगोत्रीयः स्थापित इति मलयगिरिसूरिवरैस्तु सूत्रपाठानुसारेण वेलापत्यसगोत्रीयः स्थापितः, तदत्र तत्त्वं बहुश्रुता एव प्रमाणम् ॥ २ कोसियगोत्ता वा ॥ ३ मणियं खा ॥ ४ वगुलं सावं च डे० ह० म० ॥ ५ जीयधरं इति चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ६ तेषां शाण्डिल्याचार्याणां आर्यजीतधर-आर्यसमुद्राख्यौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यसमुद्रस्याऽऽर्यमङ्गुनामाऽभवत् शिष्यो जातः" इति हिमवत्स्थविरावल्याम् पत्र १ ॥ ७ खातकित्ति च ॥ ८ पारगं खं ॥ ९ अज्जमंगुं च ॥ १० अत्रान्तरे निम्नलिखितं गाथायुगलं मु० प्रतौ निर्दिष्टं सूत्रप्रतिषु गाथायुगलमिदमधिकमुपलभ्यते—

वंदामि अज्जधम्मं वंदे तत्तो य भद्दगुत्तं च । तत्तो य अज्जवइरं तव-नियमगुणेहिं वइरसमं ॥
वंदामि अज्जरक्खियखमणे रक्खियचरित्तसव्वस्से । रयणकरंडगभूओ अणुओगो रक्खिओ जेहिं ॥

एतद्गाथायुगलविषये जेस० प्रतावियं टिप्पणी— वंदामि अज्जधम्मं० "एतदपि गाथाद्वयं न चूर्णौ विवृतम्, वाचनान्तरे तत्सत्त्वादिति सम्भाव्यते । ११ अज्जाणंदिलख० च ॥

णाणम्मि दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।
वागरण-करण-भंगी-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ २९ ॥

वड्ढतु० गाहा । 'वड्ढतु' त्ति वृद्धिं यातु । को य सो ? 'वायगवसो' वायेंति सिस्साणं कालिय-पुव्वसुतं ति वातगा—आचार्या इत्यर्थः, गुरुसंण्णिहाणे वा सिस्सभावेण वाऽतं सुतं जेहिं ते वायगा, वंसो त्ति—पुरिसपव्व-परंपरेण ठितो वंसो भण्णति । सो चेव जसोवज्जणतो संजमोवज्जणतो वा जसवंसो भण्णति, सो य अणागतवंसो इत्यर्थः । कस्स सो एरिसो वंसो ? भण्णति, अज्जणागहत्थीणं ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भण्णति—जीवादिपदत्थ-पुच्छासु वाकरणे सद्दपाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे कालकरणेसु वा सव्वभंगविकप्पणासु य तप्परूवणे य तहा कम्मप्पगडिपरूवणाए पधाणाणं पुरिसाणं वड्ढतु वायगवसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चंजणधाउसमप्पहाण मुद्दीय-कुवलयनिहाणं ।
वड्ढउ वायगवंसो रेवइणक्खत्तणामाणं ॥ ३० ॥

जच्चजण० गाहा । जच्चजणग्गहणं कित्तिमवुदासत्थं, सरीरवण्णेण तन्निभो । तहा सरस-पक्कमुद्दियफलसण्णिभो य । कुच्छितो उवलो कुवलयो, सो य कण्हकायो, कुवलयं वा—णीलुप्पलं, कुवलयं वा—रयणविसेसो । रेवतिवायगो त्ति । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
बंभद्दीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । बंभद्दीवगसाहीणं आयरियाणं समीवे निक्खंतो सीहवायको, उत्तमवायकत्तणं च तक्का-लसुतसंभवं पडुच्च । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

जेसि इमो अणुओगो पयरइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।
बहुनगरनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३२ ॥

जेसि इमो० गाहा । कहं पुण तेसिं अणुओगो ? उच्यते—बारससंवच्छरिए महंते दुब्भिक्खकाले भत्तट्ठा अण्णण्णतो फिडिताणं गहण-गुणणा-ऽणुप्पेहाभावातो सुते विप्पणट्ठे पुणो सुभिक्खकाले जाते मधुराए महंते साहु-समुदए खंदिलायरियप्पमुहसंघेण 'जो जं संभरति' त्ति एवं संघडितं [जे० १९० प्र०] कालियसुतं । जम्हा य एतं मधुराए कतं तम्हा माधुरा वायणा भण्णति । सा य खंदिलायरियसम्मय त्ति कातुं तस्संतियो अणुओगो भण्णति । सेसं कंठं । अण्णे भणंति जहा—सुतं ण णट्ठं, तम्मि दुब्भिक्खकाले जे अण्णे पहाणा अणुओगधरा ते विणट्ठा, एगे खंदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुयोगो पुणो साधूणं पवत्तितो त्ति माधुरा वायणा भण्णति, तस्संतितो य अणियोगो भण्णति ॥ ३२ ॥

---

१ °भगिय-कम्म° स्त० मो० विना । हारि० वृत्तौ अयमेव पाठ आदृतोऽस्ति ॥ २ °सण्णिधे वा आ० ॥ ३ रेवयण° डे० ल० ॥ ४ कुच्छितओ वलयो कुवलयो आ० ॥ ५ जेसि तिमो ल० ॥ ६ अणुयोगो दा० ॥

तत्तो हिमवंतमहंतविक्कमे धिइपरक्कममहंते[1] ।
सज्झायमणंतधरे हिमवंते वंदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

तत्तो हिम० गाहा । हिमवंतपव्वतेण महंतत्तणं तुल्लं जस्स सो हिमवंतमहंतो, इह भरहे णत्थि अण्णो तत्तुल्लो त्ति, एस थुतिवादो[2] । उत्तरतो वा हिमवंतेण सेसदिसासु य समुद्देण णिवारितो भरहो, हिमवंतणिवारणो भरहो महंतो त्ति अतो हिमवंतमहंतो[3] । महंतविक्कमो कहं ? उच्यते–सामत्थतो, महंते वि कुल-गण-संघप्पयोयणे वट्टति त्ति, परप्पवादिजयेण वा विसेसमद्धिसंपण्णत्तणतो वा महंतविक्कमो । अहवा परीसहोवसग्गे तवविसेसे वा धितिबलेण परक्कमतो महंता[4] । अणंतगम-पज्जवत्तणेता अणंतधरो त, महंत हिमवंतणाम वंदे । सेसं कंठं ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुओगस्स[5] धारए धारए य पुव्वाणं ।
हिमवंतखमासमणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

कालिय० गाहा । हिमवंतो चेव हिमवंतखमासमणो । तस्स सीसा णागज्जुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा गुणकित्तणा—

मिउ[6]-मद्दवसंपण्णे अणुपुव्वि वायगत्तणं पत्ते ।
ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वंदे ॥ ३५ ॥[7]

मिउ-मद्दव० गाहा । 'अणुपुव्वी' सामाइयादिसुतमहणेण, कालतो य पुरिमपरियायत्तणेण[8] पुरिसाणुपुव्वितो य वायगत्तणं पत्तो, ओहसुत च उस्सग्गो, तं च आयरति । सेसं कंठं ॥ ३५ ॥

णागज्जुणवायगस्स सीसो भूतदिण्णो आयरितो । तस्सिमा गुणकित्तणा तिहिं गाहाहिं—

तवियवरकणग-चंपग-विमउलवरकमलगब्भसरिवण्णे[9] ।
भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥

अड्ढभरहप्पहाणे बहुविहसज्झायसुमुणियपहाणे[10] ।
अणुओगियवरवसभे[11] णाइलकुलवंसणंदिकरे ॥ ३७ ॥

---

१ मणंते खं० सं० ल० । जेसू० प्रतौ 'महंते' इति पाठस्योपरि टिप्पणी यथा— "अनन्ते इति वृत्तौ व्याख्यातम् ।" इति ॥ २ थुतिवादो आ० ॥ ३ भरहो हिमवंतो त्ति अतो हिमवंते महंतविक्कमो कहं ? आ० ॥ ४ अतो भणंतं वा सुतं महंतं आ० ॥ ५ सुओग ख० ॥ ६ मिय म० डे० ॥ ७ एतद्गाथानन्तरं P प्रतिं विहाय सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु अनुपलभ्यमानं इदं गाथायुगलमधिकम्—

गोविंदाणं पि णमो अणुओगे विउलधारणिंदाणं । णिच्चं खंति-दयाणं परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥

तत्तो य भूयदिण्णं णिच्चं तव-संजमे अणिव्विण्णं । पंडियजणसामण्णं वंदामी संजमविहण्णुं ॥

गाथायुगलमिदं "इदमपि गाथाद्वयं न चूर्णौ वृत्तौ च" इति जेसू० प्रतौ टिप्पणी ॥ ८ पुरिमपरि° आ० । पूरपरि° डे० ॥ ९ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु वरकणगचंपगविमउलवरकमल० इति पाठ उपलभ्यते । अनयता हरिभद्रपादेन 'वरकणग० गाहा' इति प्रतीक-दर्शनेन एष पाठः स्वीकृतोऽस्ति । चूर्णौ पुनः "तविय० गाहा" इति प्रतीकदर्शनात् चूर्णिकृता तवियवरकणगचंपग० इति पाठ आदृतः सम्भाव्यते । श्रीमलयगिरिपादैस्तु "वरतवियेत्यादि गाथात्रयम्" इति प्रतीकनिर्देशेन वरतवियकणगचंपग इति पाठोऽङ्गीकृतो भवेत् । न पुनरेतच्चूर्णिकृन्-मलयगिरिपादनिर्दिष्टः पाठोऽस्मत्सुलभ सूत्रादर्शेषु दृश्यते ॥ १० प्पहाणं सं० । °प्पहाणमुणियपहाणे डे० ॥ ११ सुओगिय ल० । सुओइय ख० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिव्याख्यानुसारेण पाठः अत्रत्यो स्वीकृतोऽस्ति ॥

भूयहिययप्पगब्भे वंदे हं भूयदिण्णमायरिए ।
भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥ ३८ ॥ [विसेसयं]

तेविय० गाहा । गब्भो त्ति—पोमकेसरा । सेसं कंठं ॥ ३६ ॥

अड्ढभरह० गाहा । बहुविहो सज्झायो त्ति—अंगपविट्ठो बारसविधो, अणंगपविट्ठो य कालिय-उक्कालितो अणेगविहो । सो य पधाणो त्ति, सुगुणितत्तणेण निस्संको त्ति कातुं । सेसं कंठं ॥ ३७ ॥

भूतहितय० गाहा । भूतहितं ति अहिंसा । [जे०१९० द्वि०] पगब्भं ति—धारिट्ठं । अहिंसाभावे पागब्भता, अतीवअप्पमत्तताए अहिंसाभावपरिणता इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ३८ ॥

भूतदिण्णस्स सीसो लोहिच्चो । तस्स इमा थुती—

सुमुणियणिच्चा-ऽणिच्चं सुमुणियसुत्त-ऽत्थधारयं णिच्चं ।
वंदे हं लोहिच्चं सब्भावुब्भावणातच्चं ॥ ३९ ॥

सुमुणित० गाहा । सुट्ठु मुणितं सुमुणितं । किं तं ? भण्णति—जीवो जीवत्तणेण निच्चो, गतिमादिएहिं अणिच्चो । परमाणू अजीवत्तणेण मुत्तत्तेण य निच्चो, दुप्पदेसादिएहिं वण्णादिपज्जवेहि य अणिच्चो । सुट्ठु तं मुणितं सुत्त-ऽत्थं धरेति । णिच्चकालं पि स्वे भावे ठितो सब्भावो, सं—सोभणो वा भावो सब्भावो, सं—विज्जमाणो वा भावो सब्भावो, तं उब्भासए तच्चत्तेण, तथ्यत्वेन इत्यर्थः । तं च लोहिच्चणामं आयरियं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३९ ॥

तस्स लोहिच्चस्स सीसो दूसगणी । तस्स इमा थुती—

अत्थ-महत्थक्खाणिं सुसमणवक्खाणकहणणेव्वाणिं ।
पयतीए महुरवाणिं पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४० ॥[11]
सुकुमाल-कोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।
पादे पावयणीणं पडिच्छगसएहि पणिवइए ॥ ४१ ॥

अत्थ-महत्थ० गाहा । खाणि त्ति—आगरो । सा य अत्थस्स खाणी । किंविसिट्ठस्स ? महत्थस्स । महत्थो य अणेगपज्जायभेदभिण्णो । अहवा भासगरूवो अत्थो, विभासग-सव्वपज्जववत्तीकरो य महत्थो । एरिसस्स अत्थस्स खाणी । का सा ? 'वाणि' त्ति संवज्झति । सुभो समण(णो) सुस्समण(णो), तस्स सुस्समणस्स वक्खा[णकह]णं ति—अत्थकहणं, तम्मि अत्थकहणे सोताराण करेति वाणी णेव्वाणी । अहवा वक्खाणं ति—अणुयोगपरूवणं,

१ वरकणग० गाहा आ० । वरकणगतविय० गाहा दा० ॥ २ धारेयव्व । अहिंसा° आ० । धारेव्वं मो० ॥ ३ °धारयं वंदे । सब्भावुब्भावणया, तत्थ लोहिच्चनामाणं ॥ इति मु० पाठः । नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मतः, नापि च सूत्रप्रतिषूपलभ्यते ॥ ४ सन् शोभनो वा भावः सद्भावः, सन्-विद्यमानो वा भावः सद्भावः इत्यर्थः ॥ ५ संघेज्जमाणो आ० ॥ ६ °क्खाणी डे० ल० ॥ ७ सुसवण° चूर्णौ पाठान्तरम् ॥ ८ °व्वाणी डे० ल० ॥ ९ °वाणी डे० ल० ॥ १० °गणी डे० ल० ॥ ११ चत्वारिंशत्तमगाथानन्तरं P प्रतिं विहाय सर्वासु सूत्रप्रतिषु गाथेयमधिकोपलभ्यते—

तव नियम-सच्च-संजम-विणय-ऽज्जव-खंति-मद्दवरयाणं । सीलगुणगद्दियाणं अणुओगजुगप्पहाणाणं ॥

अत्र "गद्दियाणं' इति 'गर्दितानां' ख्यातानाम्" इति आवश्यकदीपिकाकृता व्याख्यातमस्ति। एतद्गाथाविषये जेसू० प्रतौ "एषाऽपि गाथा न वृत्तौ कुतश्चित्" इति टिप्पणी वर्त्तते ॥ १२ पडि° मु० ॥ १३ खाणी, दूसगणि त्ति संघ° आ० ॥

करग त्ति–असेसमादियाहि कदाहि धम्मकरणं । तस्स कुद्धाण वि आगताण तस्स पासी गेज्झाणि जणेति, किमंग पुण धम्मस्सवणट्ठमागताण ? । अहवा पाठो–"सुसवण" त्ति तत्थ सवण त्ति–कण्णा, तेसु सुहं जणेइ त्ति सुस्सवणा, एवं इकारलोपातो भण्णति । अहवा सुस्सवणा सुश्रवा इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ४० ॥ इमा वि दूसगणिणो थेय सम्थुती–

सुकुमाल० गाहा । पवयण–दुवालसंगं गणिपिडगं जस्स अत्थि सो पावयणी, गुरवो त्ति काउं बहुवयण भणितं । सेसं कंठं ॥ ४१ ॥ एस णमोक्कारो आयरियपुरिसपरंपरापुरिसाण विसेसक्खातो कतो । इमा पुण [जे० १९१ प्र०] सामण्णतो सुयविसिट्ठाण कज्जइ–

जे अण्णे भगवंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।
ते पणमिऊण सिरसा णाणस्स परूवणं वोच्छं ॥ ४२ ॥

॥ थेरावलिया सम्मत्ता ॥

जे अण्णे० गाहा । कंठा ॥ ४२ ॥

एवं च नाणपरूवणज्झयणं अरिहस्स देज्जति, णो अणरिहस्स देज्जइ । अतो भणितं–

[सुत्त ६]

सेलघण १ कुडग २ चालणि ३ परिपूणग ४ हंस ५ महिस ६ मेसे ७ य ।
मसग ८ जलूग ९ बिराली १० जाहग ११ गो १२ भेरि १३ आभीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिविहा पण्णत्ता, तं जहा–जाणिया १ अजाणिया २ दुब्वियड्ढा ३ ।[1]

६ सेलघण० गाहा । एत्थ अरिहा इमे कुडेसु–अप्पसरयसमसारिच्छा, पसत्थभावितेसु य अप्पसा रिच्छा । तहा हंस-मेस-जलूग-जाहगसारिच्छा अरिहा, गो-भेरी-आभीरेसु य पसत्थोवमतोवणीता अरिहा । सेसा अणरिहा ॥ ४३ ॥

इमस्स य नाणपरूवणज्झयणस्स पकवणे परिसा जाणिगाइ तिविहा जाणियव्वा । तत्थ जाणिया–

गुण-दोसविसेसण्णू अणभिग्गहिया य कुस्सुइ-मतेसु । सा खलु जाणगपरिसा गुणतत्तिल्ला अगुणवज्जा ॥१॥

[कप्पभा गा ३६५]

१ किसह् दा ॥ २ वेडिल्ला व । वेविलुगा P n ॥ ३ पकुव्वणं व ॥ ४ आमीरी सर्वासपि सूत्रप्रतिषु । एष एव पाठः श्रीहरिभद्र मलयगिरिभ्यां व्याख्यातोऽस्ति ॥ ५ एतत्सूत्रानन्तरं जे० डे० मो० मु० अ० प्रतिषु चूर्णि-वृत्तिकृद्भिरव्याख्यातोऽपि अयं अधिकः सूत्रांशः पाठ उपलभ्यते–

जाणिया जहा–

खीरमिव जहा हंसा जे घुट्टंति इह गुरुगुणसमिद्धा । दोसे य विवज्जंती तं जाणसु जाणियं परिसं ॥

अजाणिया जहा–

जा होइ पगइमहुरा मियछावय-सीह-कुक्कुडगभूया । रयणमिव असंठविया अजाणिया सा भवे परिसा ॥

दुब्वियड्ढा जहा–

न य कत्थइ निम्माओ न य पुच्छइ परिभवस्स दोसेणं । वत्थि व्व वायपुण्णो फुट्टइ गामेल्लयवियड्ढो ॥

एतद्गाथात्रयमेव जे० प्रतावपि टिप्पणी रूपेणापि लिखितं दृश्यते–"जाणियेत्यारभ्य एतद् गाथात्रयं चूर्णौ न व्याख्यातम्, अतोऽन्यकर्तृकं सम्भाव्यते ।" इति ॥ ६ आमीरीसु जा ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुद्धमजाणिय मियछावय-सीह-कुक्कुरगभूता[1]। रयणमिव असंठविता सुहसण्णप्पा गुणसमिद्धा ॥ २ ॥
[कल्पभा गा ३६७]

इमा दुव्वियड्ढा—

किंचिम्मत्तग्गाही पल्लवगाही य तुरियगाही[2] य। दुवितड्ढिया उ एसा भणिता तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥
[कल्पभा. गा. ३६९]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अरिहा॥ एवं कतमंगलोवयारो थेरावलिकमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुस्सगणिसीसो देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह —

७. णाणं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा–आभिणिबोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३ मणपज्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ ।

७. **नाणं पंचविहं०** इत्यादि । अस्य व्याख्या–णाती णाणं–अवबोहमेत्तं, भावसाधणो । अहवा णज्जइ अणेणेति नाणं, खयोवसमिय-खाइएण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जंति इति णाण, करणसाधणो । अहवा णज्जति एतम्हि त्ति णाणं, नाणभावे जीवो त्ति, अधिकरणसाहणो । पंच इति संखा । विधिरिति भेदो । पण्णत्तं पण्णवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम् , अत्थतो तित्थकरेहिं, सुत्ततो गणधरेहिं । अहवा पण्णा–बुद्धी, पहाणपण्णेण अवासं पण्णत्तं, सम्मदिट्ठिणा[3] लद्धमित्यर्थः । अहवा पहाणपण्णातो अवासं पण्णत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरेहिं लद्धं ति वुत्तं भवति । अहवा पण्णा–बुद्धी, तीए अवासं पण्णत्तं, तित्थकर-गणधरा-ऽऽयरिएहिं कहिज्जंतं [जे० १९१ द्वि०] बुद्धीए पण्णत्तमिति । तंदित्तणेण[4] अधिकतत्थं नाणं संवज्झति । जे पुव्वमुवण्णत्था पंच णाणभेदा तेषा प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासद्दो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिबोधः, स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिबो-धिकम् । अहवा अभिनिबोधे भवं, तेण निव्वत्तं, तम्मतं तप्पयोयणं वाऽऽभिणिवोधिकं। अहवा आता तदभिनिबुज्झए, तेण वाऽभिणिबुज्झते, तम्हा वा[ऽभिणि]बुज्झते, तम्हि वाऽभिनिबुज्झए इत्ततो[5] आभिनिबोधिकः । स एवाऽऽभि-णिवोधिकोपयोगातो अनन्यत्वादाभिनिबोधिकम् १ । तहा तन्छृणोति, तेण वा सुणेति, तम्हा वा सुणेति, तम्हि वा सुणेतीति सुतं । आत्मैव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वाच्छृणोतीति श्रुतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाऽवधीयते, तम्हि वाऽवधीयते, अवधाणं वा अवधिः, मर्यादेत्यर्थः । ताए परंपरोपणिबंधणातो दव्वादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि–सव्वतोभावेण गमणं पज्जवण पज्जवः, मणसि मणसो वा पज्जवो मणपज्जवो, स एव नाणं मणपज्जवनाणं । तहा पज्जयणं पज्जयः, मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्ययः, स एव नाणं मणपज्जयणाणं । तहा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम् , सव्वतो आतो पज्जातो, मणसि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो, स एव नाणं मणपज्जव(?पज्जाय)णाणं । अहवा मणसि मणसो वा पज्जवा मणपज्जवा, तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जवनाणं । तहा मणसि मणसो वा पज्जया [मणपज्जया], तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जयनाणं ।

गमणपरावत्तेगो लाभो भेदा य बहुपरावत्ता । मणपज्जवम्मि नाणे णिरुत्तवयणऽत्थ पंचेते ॥ १ ॥ ४ ।
[ ]

१ **जे होंति पगयमुद्धा मिग°** इति कल्पभाष्ये ॥ २ **तुरिय°** आ० दा० ॥ ३ **सतदिट्ठिणा** आ० ॥ ४ तदित्यनेन अधिकृतार्थम् इत्यर्थ । "त जहा ' इति सूत्रांशे विद्यमान 'तद्' इति पदमनुलक्ष्येद वचनम् ॥ ५ इत्यतः इत्यर्थः ॥

"केवलमेगं सुद्धं सकलमसाधारणं अणंतं च।" [विशेषा गा० ८४] इत्यर्थः ५। नाणसद्दो य सव्वत्थाऽऽभिनिबोधिकादीण समाणाधिकरणो [जे० १९२ प्र०] दट्ठव्वो, तं जहा–आभिनिबोधिकं च तं नाणं च आभिनिबोधिकनाणं। एवं सव्वेसु वेदव्वं। पुच्छा य–किमेस मतिनाणादियो कमो? एत्थ उत्तरं भण्णति–एस सकारणो उवन्नासो। इमे य से कारणा–तुल्लसामित्तणतो सव्वकालाविच्छेदट्ठितित्तणतो इंदिया ऽणिंदियणिमित्तणतो तुल्लखतोवसमकारणत्तणतो सव्वदव्वादिविसयसामण्णत्तणतो परोक्खसामण्णत्तणओ य तब्भावे य सेसणाण संभवातो अतो आदीए मति-सुताइं कताइं। तेसु वि य "मतिपुव्वगं सुतं" [सुत्तं ४२] ति पुव्वं मतिणाणं कतं, तस्स य पिट्ठतो सुतं ति। अहवा इंदिया-ऽणिंदियनिमित्तत्तणमविसिट्ठे वि मति-सुतेसु परोवदेसत्तणमेत्तमंतरातो परिहरवयणकारणत्तणतो य मतिविसेसत्तणतो य सुतस्स मतिअणंतरं सुतं ति। मति-सुयसमाणकालत्तणतो मिच्छदंसणपरिग्गहत्तणतो तव्विवज्जयसाहम्मत्तणतो सामिसाहम्मत्तणतो य कत्थइ कालेगत्तणतो य मति-सुताणंतरं अवधि त्ति भणितो। ततो य छउमत्थसामिसामण्णत्तणतो य पुग्गलविसयसामण्णत्तणतो य खयोवसमभावसामण्णत्तणतो य पच्चक्खभावसामण्णत्तणतो य अवहिसमणंतरं मणपज्जवनाणं ति। सव्वनाणुत्तमत्तणतो सव्वविसुद्धत्तणतो य विरतसामिसामण्णत्तणतो य सव्वावसाणलाभत्तणतो य सव्वुत्तमलद्धित्तणओ य सव्वंते केवलं भणितं॥

८ तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–पच्चक्खं च परोक्खं च।

८ तस्स पेवं समासतो दुविधं–पच्चक्खं च परोक्खं च० इत्यादि। इह अप्पवत्तव्वत्तणतो पुव्वं पच्चक्ख पण्णविज्जति। इह जीवो अक्खो। कहं? उच्यते–"अश् व्याप्तौ" इति, णाणप्पणताए अत्थे असइ त्ति इच्चेव जीवो अक्खो, णाणमावेण वावति त्ति भणितं भवति। अहवा "अश भोजने" इच्चेतस्स वा सव्वत्थे असइ त्ति अक्खो, पाल्यति भुङ्क्ते चेत्यर्थः। अक्खं पति वट्टति त्ति पच्चक्खं, अणिंदिय ति वुत्तं भवति। वत्तव्वओ य से अवधिमादि भेदा दट्ठव्वा। अक्खातो [जे० १९२ द्वि०] परेसु जं णाणं उप्पज्जति तं परोक्खं समेदं वत्तव्वओ इंदिय-मणोनिमित्तं दट्ठव्वमिति।

९ से किं तं पच्चक्खं? पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–इंदियपच्चक्खं च णोइंदियपच्चक्खं च।

१० से किं तं इंदियपच्चक्खं? इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा–सोइंदियपच्चक्खं चक्खिदियपच्चक्खं घाणिंदियपच्चक्खं रसणेंदियपच्चक्खं फासिंदियपच्चक्खं। से त्तं इंदियपच्चक्खं।

९ से किं तं पच्चक्खं? पुच्छा। 'से' त्ति स पच्चक्खनामनिद्देसो। 'किं तं' ति परिपण्हे, कतिमदं ति वुत्तं भवति। तं च किंसरूवं? ति आयरियो पणयसुवपासितु तस्सरूवकहणेण पच्चक्खसरूवं कहितुकामो आह–पच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं ति।

१० इंदियं ति–पुग्गलेहिं सठाणनिव्वत्तिरूवं दव्विंदियं, सांइंदियमाविंदियाणं सव्वातप्पदेसेहिं स्वावरणक्खतोवसमातो जा लद्धी तं भाविंदियं, तस्स पच्चक्खं ति इंदियपच्चक्खं। तं पंचविहं। पर आह–ननु

१ वत्तव्वं मो ॥ २ 'ट्ठितित्त' खा ॥ ३ 'त्तणेण अविसिट्ठे वि सति सुते वि परो खा ॥ ४ अतो सम्मत्त इकाले' खा ॥ ५ वैस्वर्यः खा ॥ ६ परोक्खं तं भेदं, वत्त खा ॥ ७ वत्तव्विंदिय मो ॥ ८ णिव्विंदिय मो ॥

दव्विंदियावत्थियपदेसमेत्तग्गहणतो सेसप्पदेसेसु अणुवलद्धी खयोवसमनिरत्थता वा भवति । आयरिय आह–ण एवं, पदीवदिट्ठंतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तहा दव्विंदियमेत्तपदेसविसयपडिवोधओ सव्वातप्पदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमसाफल्लया य भवति त्ति ण दोसो। भाविंदियोवयारपच्चक्खत्तणतो एत पच्चक्खं, परमत्थओ पुण चिंतमाणं एतं परोक्खं। कम्हा ? जम्हा परा दव्विंदिया, भाविंदियस्स य तदायत्तप्पणतो ॥

११. से किं तं णोइंदियपच्चक्खं? णोइंदियपच्चक्खं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–ओहिणाणपच्चक्खं १ मणपज्जवणाणपच्चक्खं २ केवलणाणपच्चक्खं ३ ।

१२. से किं तं ओहिणाणपच्चक्खं? ओहिणाणपच्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–भवपच्चतियं च खयोवसमियं च। दोन्हं भवपच्चतियं, तं जहा–देवाणं च णेरतियाणं च। दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा–मणुस्साणं च पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं च ।

११-१२. णोइंदियपच्चक्खं ति इंदियातिरित्तं। त तिविहं ओहिमादी। अवहि त्ति–मज्जाया, सा य रूविदव्वेसु त्ति, "रूविस्सऽवधे" [तत्त्वा अ १ सू. २८] त्ति वयणातो, तेसु णाणं ओहिनाणं। 'भवपच्चई[2]तो' त्ति भणिते भण्णति–णणु ओधी खयोवसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कहं भवपच्चइतो भण्णाति? त्ति, उच्यते–सो वि खयोवसमितो चेव, किंतु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेसु अवस्सं भवति त्ति, दिट्ठंतो पक्खीणं आगासगमणं व, एवं भवपच्चइतो भण्णति। खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेसु णावस्सं उप्पज्जति त्ति खयोवसममवेक्खति॥ खयोवसमसरूवं च सुत्तेणेव [जे० १९३ प्र०] भणितं—

१३. को हेऊ खायोवसमियं? खायोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जति। अहवा गुणपडिवण्णस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जति।

१३. को हेतु त्ति इच्चादि। सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवत्तितो वा भवति। गुणमंतरेण जहा गगण०भच्छादिते अहापवत्तितो छिद्देणं दिणकरकिरण व्व विणिस्सिता दव्वमुज्जोवंति तहाऽवधिआवरणखयोवसमे अवधिलंभो अधापवत्तितो विण्णेतो। गुणपडिवत्तितो— गुणपडिवण्ण० इत्यादि। उत्तरुत्तरचरणगुणविसुज्झमाणमवेक्खातो अवधिणाण-दंसणावरणाण खयोवसमो भवति। तक्खयोवसमे य अवधी उप्पज्जति ॥

१४. तं समासओ छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–आणुगामियं १ अणाणुगामियं २ वड्ढमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ ।

१४. आणुगामियं ति। अणुगमणसीलो अणुगामितो, तदावरणखयोवसमाऽऽतप्पदेसविसुद्धगमणत्तातो लोयणं व ॥

---

१ सुत्रमिद प्रश्न-निर्वचनात्मकमपि उपलभ्यते–से किं तं भवपच्चइयं? २ दुण्ह, तं जहा-देवाण य णेरइयाण य। से किं तं खयोवसमियं? २ दुण्हं, तं जहा–मणूसाण य पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण य। जे० मो० हे० मु०। किन्तु–चूर्णि-वृत्तिकृता नेद पश्नोत्तरात्मक सूत्र सम्मतम् ॥ २ °इयं' ति आ० दा० ॥ ३ °दियाणं ख० ॥

१५ से किं तं आणुगामिय ओहिणाण? आणुगामिय ओहिणाण दुविह पण्णत्तं, तं जहा–अंतगय च मज्झगयं च।

१५. अंतगयं ति। जहा मस्सं मणंतं पज्जंतं, अविसिट्ठो अंतसद्दो। एवं ओरालियसरीरंते ठितं गतं ति एगट्ठं, तं च आतप्पदेसफड्डगावहि, एगदिसावभासा य अंतगतमोधिण्णाणं भण्णति। अहवा सव्वातप्पदेसविसुद्धेसु वि ओरालियसरीरेगंतेण एगदिसिपासणगतं ति अंतगतं भण्णति। अहवा फुडतरमत्थो भण्णति–एगदिसावधिउवलद्धखेत्तातो सो अवधिपुरिसो अंतगतो त्ति जम्हा तम्हा अंतगतं भण्णति। मज्झगतं पुण ओरालियसरीरमज्झे फड्डगविसुद्धीतो सव्वातप्पदेसविसुद्धीतो वा सव्वदिसोवलंभत्तणतो मज्झगतो त्ति भण्णति। अहवाऽवधिउवलद्धखेत्तस्स वा अवधिपुरिसो मज्झगतो त्ति अतो वा मज्झगतं भण्णति॥

१६ से किं तं अंतगय? अंतगयं तिविह पण्णत्तं, तं जहा–पुरओ अंतगयं १ मग्गओ अंतगयं २ पासतो अंतगयं ३।

१७ से किं तं पुरतो अंतगय? पुरतो अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चुडलिअं वा अलाय वा मणि वा जोइं वा पदीव वा पुरओ काउं पणोल्लेमाणे पणोल्लेमाणे गच्छेज्जा। से तं पुरओ अंतगयं।

१८. से किं तं मग्गओ अंतगयं? मग्गओ अंतगय से जहाणामए केइ पुरिसे उक्क वा चुडलियं वा अलाय वा मणि वा जोइं वा पईव वा मग्गओ काउं अणुकड्ढेमाणे अणुकड्ढेमाणे गच्छेज्जा। से त्त मग्गओ अंतगयं २।

१९. से किं तं पासओ अंतगय? पासओ अंतगय से जहाणामए केइ पुरिसे उक्कं वा चुडलियं वा अलाय वा मणि वा जोइं वा पईव वा पासओ काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छेज्जा। से त्त पासओ अंतगयं ३। से त्त अंतगयं।

२० से किं तं मज्झगय? से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चुडलियं वा अलाय वा मणि वा जोइं वा पईवं वा मत्थए काउं गच्छेज्जा। से तं मज्झगय।

१६–२० उक्क त्ति–दीविया। चुडलि त्ति–तणपिंडी अग्गे पज्जलिता। अलातं ति–दारुयं जलंतं। मणि त्ति मणी। जोइ त्ति–मल्लगादिठितं अगणिं जलंतं। पदीवो त्ति–दीवगो। 'पुरतो' त्ति अग्गतो 'पणोल्लयं' ति

१ सं० प्र० १६–१९ सूत्रेषु सर्वत्र अन्तगये इति पाठो दृश्यते॥ २ १७–१९ सूत्रेषु चडुलियं इति पाठ: खं० मो०॥ ३ सर्व० १७–१९ सूत्रेषु चडुलियम्मा अलायम्मा पईवम्मा मणिम्मा जोतिम्मा इत्येवंरूपः पाठः सं० प्र० दृश्यते॥ ४ १७–१९ सूत्रेषु अलायं वा पईवं वा मणिं वा जोतिं वा पुरओ इति पाठः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु दृश्यते। अत्र चूर्णि-वृत्तिकृत्सम्मतः पाठः सूत्रप्रतिषु नोपलभ्यते तथापि व्याख्याक्रमानुसारेणास्माभिः स एव मूले पाठ उद्धृतोऽस्ति। अलायं वा मणिं वा पईवं वा जोतिं वा पुरओ इति सू० पाठस्तु ... दृश्यते॥ ५ काउं समुव्वहमाणे समुव्वहमाणे गच्छिज्जा जे० मो० सु०॥

"णुद प्रेरणे" हत्थगहितस्स दंडग्गहितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । 'मग्गतो' त्ति पिट्ठतो 'अणुकड्ढणं' ति हत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा अणु-पच्छयो कड्ढणं ति । 'पासतो' त्ति दाहिणे वामे वा पासे सा(दो)पासय[जे० १९३ द्वि०]जमलट्ठित । परिकड्ढियं ति-हत्थ-डंडगट्ठितं वा परि-पासतो ट्ठितस्स कड्ढणं परिकड्ढणं ॥

सीसो पुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो? पुरओ अंतगएणं ओहिनाणेणं पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, मग्गओ[1] अंतगएणं ओहिनाणेणं मग्गओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ समंता[3] संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ । से त्तं आणुगामियं ओहिणाणं ।

२१. अंतगतस्स० इच्चादि। आयरियाऽऽह-पुरतो० इच्चादि। 'सव्वतो' त्ति सव्वासु वि दिसि-विदिसासु 'समता' इति सव्वातप्पदेसेसु सव्वेसु वा विसुद्धफड्डगेसु। अहवा 'सव्वतो' त्तिसव्वासु दिसि-विदिसासु सव्वातप्पदेसफड्डगेसु य । 'से' इति निद्देसे अवधिपुरिसस्स, 'मंता' इति णाता । अहवा "समत्ता" इति समं-दव्वादयो तुल्ला अत्ता इति-मासा इत्यर्थः ॥

२२. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं[5]? अणाणुगामियं ओहिणाणं[6] से जहाणामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं[7] काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स[8] परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं[9] पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ, एवमेव[10] अणाणुगामियं ओहिणाणं[11] जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणाइं जाणइ पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ । से त्तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ।

२२. णो गच्छंतमणुगच्छति त्ति अणाणुगामिकं, संकलापडिबद्धट्ठितप्पदीवो व्व, तस्स य खेत्तावेक्खखयोवसमलाभत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरंतं ति-समंततो अगणिमासण्णं, तस्स य जोइस्स सव्वतो दिसि-विदिसासु समंता परिवोलणं ति-पुणो पुणो इतो इतो परिसक्कणं ॥

२३. से किं तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं? वड्ढमाणयं ओहिणाणं पसत्थेसु[13] अज्झ-

---

१ पासे दोसु वा सय जमं आ० दा० ॥ २ मग्गओ अंतगएणं० इत्यादिसूत्रांशः पासओ अंतगएणं० इत्यादिसूत्रांशश्च ख० स० प्रत्यो पूर्वापरक्रमव्यत्यासेन वर्तते ॥ ३ समत्ता इति पाठमेन्चूर्णौ निर्दिष्टोऽस्ति ॥ ४ "सव्वायप्पएसेसु इत्यादौ तृतीयार्थे सप्तमी" इति नन्दिवृत्तौ श्रीमलयगिरिपादैरेतत्पाठोद्धरणे व्याख्यातमस्ति पत्र ८५-२ ॥ ५-६-११ ओहिन्नाण डे० ल० ॥ ७-८ अगणिट्ठा° ख० स० ल० शु० ॥ ९ सर्वासु सूत्रप्रतिषु अत्र जोइट्ठाण इत्येव पाठो वर्त्तते ॥ १० एवामेव सु० ॥ १२ अगणिपासेणं, तस्स आ० । अगणिपासण, तस्स दा० ॥ १३ पसत्थेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं खं० मो० ॥

वसाणट्ठाणेसु वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स विसुज्झमाणस्स विसुज्झमाणचरित्तस्स सव्वओ समता ओही वड्ढइ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुहुमस्स पणगजीवस्स।
ओगाहणा जहन्ना ओहीखेत्तं जहन्नं तु ॥ ४४ ॥

सव्वबहुअगणिजीवा णिरंतरं जत्तिय भरेज्जंसु।
खेत्तं सव्वदिसागं परमोही खेत्तनिद्दिट्ठो ॥ ४५ ॥

अंगुलमावलियाणं भागमसंखेज्ज दोसु संखेज्जा।
अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥ ४६ ॥

हत्थम्मि मुहुत्तंतो दिवसंतो गाउयम्मि बोद्धव्वो।
जोयण दिवसपुहत्तं पक्खंतो पण्णवीसाओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अद्धमासो जंबुद्दीवम्मि साहिओ मासो।
वासं च मणुयलोए वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

संखेज्जम्मि उ काले दीव समुद्दा वि होंति संखेज्जा।
कालम्मि असंखेज्जे दीव-समुद्दा उ भइयव्वा ॥ ४९ ॥

काले चउण्ह वुड्ढी कालो भइयव्वु खेत्तवुड्ढीए।
वुड्ढीए दव्व-पज्जव भइयव्वा खेत्त-काला उ ॥ ५० ॥

सुहुमो य होइ कालो तत्तो सुहुमयरयं हवइ खेत्तं।
अंगुलसेढीमेत्ते ओसप्पिणिओ असंखेज्जा ॥ ५१ ॥

से त्तं वड्ढमाणयं ओहिणाणं।

२३ वद्धमाणं ओही, पुव्वावत्थातो उवरुवरिं वड्ढमाणं ति, तं च तस्सुप्पण्णं चरणगुणविसुद्धिमवेक्खति, ततो पसत्थज्झवसाणट्ठाणा तस्सादिपसत्थलेसाणुगता भवंति, पसत्थदव्वलेसादि अणुरंजितं चित्तं पसत्थज्झवसाणो भण्णति, पसत्थज्झवसाणातो य चरणाऽऽतविसुद्धी, चरणाऽऽतविसुद्धीतो य चरणपच्चतसुद्धीयं वड्ढी भवति।

इमाओ य अण्णुक्कोस-विमज्झिमाधिकरिदसणगाहाओ अहा भणियाओ ॥ ४४-५१ ॥

---

१ सामइ ऐ ॥ २ वड्ढमाण ज ॥ ३ वीसं तु ज । वीसंतो जे ॥ ४ वि इ । य मो ॥ ५ भावयं ऐ ॥ ६ पक्खंतमतो पसत्थं खा ज ॥ ७ आवश्यकनिर्युक्तिगतगाथा ३०-३७ ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं? हायमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं[1] अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही[2] परिहायति । से त्तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२४. हाणि त्ति–ह्रस्समाणं, पुव्वावत्थातो अधोऽधो ह्रस्समाणं। तं च वड्ढमाणविपक्खतो भाणितव्वं। अप्पसत्थलेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगासुभत्थ[3]चिंतणपर चित्तं संकिलिट्ठ भण्णति ॥

२५. से किं तं पडिवाति ओहिणाणं? पडिवाति ओहिणाणं जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्ज[4]तिभागं वा संखेज्ज[5]तिभागं वा वालग्गं वा वालग्गपुहत्तं[6] वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियत्थिं[7] वा वियत्थिपुहत्तं वा रयणिं वा रयणिपुहत्तं वा कुच्छिं वा कुच्छिपुहत्तं वा धणुयं[8] वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसयपुहत्तं वा जोयणसहस्सं वा जोयणसहस्सपुहत्तं वा जोयणसतसहस्सं[9] वा जोयणसतसहस्सपुहत्तं वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहत्तं वा [10]→जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा← उक्कोसेण लोगं[11] वा पासित्ता णं पडिवएज्जा । से त्तं पडिवाति ओहिणाणं ।

२५. उप्पण्णोहिनाणस्स पुणो पातो त्ति पडिवाती, नाशेत्यर्थः । तं च खेत्तविसेसोवलंभेणं भण्णति । ते य इमे–असंखेयंगुलभागादिया । दुप्पभिति जाव णव त्ति अंगुलपुहत्तं भण्णति । दो हत्था कुच्छी । पडिवातिणो जाव उक्कोसो लोगमेत्ते एव ॥

२६. से किं तं अपडिवाति ओहिणाणं? अपडिवाति ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगासपदेसं[12] पासेज्जा तेण परं अपडिवाति ओहिणाणं । से त्तं अपडिवाति ओहिणाणं ।

२६. अपडिवाति त्ति, सो वि क्खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जति, अतो भण्णति अलोगस्स एगमवि त्ति। 'अवि'[13] पदत्थसंभावणे, किमुत दुपदेसादिउपलंभे? इत्यर्थः । [जे० १९४ प्र०] ॥

२७. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ[14] दव्वओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंताणि रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं

---

१ अप्पसत्थेसुं अज्झवसायट्ठाणेसु स० ॥ २ ओही हायति ख० स० जे० मो० ॥ ३ °गासुतत्थ° जे० ॥ ४-५ °ज्जयभा° जे० मु० ॥ ६ पुहुत्त पुहत्त पहुत्त शब्दा सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु क्रमपरिहारेण आवृत्त्या दृश्यन्ते ॥ ७ विहत्थिं वा विहत्थि° मो० मु० ॥ ८ धणुं वा धणुपु° जे० मो० मु० ॥ ९ जोयणलक्खं वा जोयणलक्खपुहत्तं जे० मो० मु० ॥ १० → ← एतच्चिह्नमध्यगत पाठ- खं० स० नास्ति ॥ ११ °मेत्तए वा आ० दा० ॥ १२ स० विनाऽन्यत्र—°पदेसं पासति तेण ख० शु० । °पदेसं जाणइ पासइ तेण जे० डे० ल० मो० ॥ १३ अविपदत्थो संभा° आ० दा० ॥ १४ तत्थ इति ख० सं० ल० शु० नास्ति ॥

सव्वाइं रूविदव्वाइं जाणइ पासइ १। खेत्तओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असंखेज्जाइं अलोए लोयमेत्ताइं खंडाइं जाणइ पासइ २। कालओ ण ओहिणाणी जहण्णेणं आवलियाए असंखेज्जतिभागं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं असंखेज्जाओ उस्सप्पिणीओ अवसप्पिणीओ अतीत च अणागत च कालं जाणइ पासइ ३। भावओ ण ओहिणाणी जहण्णेणं अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण वि अणते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणंतभागं जाणइ पासइ ४।

२७ वित्थरेण खयोवसमविसेसतो असंखेज्जविधभाविण्णाण, ओधिमादिगतिपज्जवसाणं वा चतुद्दसविध-वित्थरो, ते पडुच्च इमं चतुविह समासतो भण्णति दव्वादि। दव्वतो ओधिण्णाणी जहण्णेण तेयाभासंतरे अणंते दव्वे उवलब्भति, उक्कोसतो सव्वरूविदव्वाई। जाणइ त्ति णाणं, तं च जं विसेसग्गाहगं तं णाणं, सागारमित्यर्थः। पासति त्ति दंसणं, तं च जं सामण्णग्गाहगं तं दंसणं, अणागारमित्यर्थः। खेत्त-कालतो य सुत्तसिद्धं। भावतो ओधिण्णाणी जहण्णेण अणते भावे उवलब्भति, उक्कोसतो वि अणंते, जहण्णपदातो उक्कोसपदं अणंतगुणं। उक्कोसपदे वि जे भावा ते सव्वभावाण अणंतभागे वट्टंति॥

२८ ओही भवपच्चतिओ, गुणपच्चतिओ य वण्णिओ एसो।
तस्स य बहू विगप्पा, दव्वे खेत्ते य काले यं॥ ५२॥

से त्तं ओहिणाणं।

२८ ओधी भव० गाधा। दव्वतो बहू विगप्पा परमाणुमादिदव्वविसेसातो। खेत्ततो वि अंगुलअसं-खेयभागविकप्पादिया। कालतो वि आवलियअसंखेज्जभागादिया। भावतो वि वण्णपज्जवादिया॥ ५२॥

मणपज्जवनाणमिदाणिं। तस्स सरूव भणितमादीए [पत्रम् १३]। इदाणिं सामी विसेसिज्जइ पुच्छुत्तरेहिं—

२९. [१] से किं त मणपज्जवणाणं? मणपज्जवणाणे णं भंते! किं मणुस्साणं उप्पज्जइ अमणुस्साण? गोयमा! मणुस्साणं, णो अमणुस्साणं। [२] जइ मणुस्साणं किं सम्मुच्छिममणुस्साणं गब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! णो सम्मुच्छिममणुस्साणं, गब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [३] जइ गब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं कम्मभूम

---

१ लोयप्पमाणमेत्ताइं ख चं विना॥ २ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ मो सं॥ ३ सेव्वे वि अणंते वं॥ ४ भागो ख। चूर्णिकृता हरिभद्रपादाभ्यां चाऽनेन पाठ सम्मतः॥ ५ ओही खेत्त परिमाणे इत्याद्यावश्यकनिर्युक्ति२७-२८ गाथायुगलोऽपि चतुर्षु सूत्रादर्शेषूपलभ्यते॥ ६ वण्णिओ दुविहो इति हरिभद्रवृत्ती निर्दिष्ट पाठभेदः॥ ७ दस्सेय वं॥ ८ इतः सूत्रपाठानन्तरं सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु हरिभद्रसूरिपाद-मलयगिरिभिर्व्याख्याता एषा गाथाऽधिका उपलभ्यते—
नेरतिय-देव-तित्थंकरा य ओहिस्सऽबाहिरा होंति। पासंति सव्वओ खलु सेसा देसेण पासंति॥
९ सम्मत्तं ओहि[illegible]॥ १० [illegible]॥ ११ पुच्छासुत्तेहिं [illegible]॥ १२ [illegible] भंते! [illegible]॥ १३ मणूसाणं [illegible]। एवमग्रेऽपि [illegible] (२९) [illegible]॥ १४ उप्पज्जइ इति [illegible] नास्ति॥ १५ कम्मभूमिय [illegible]। एवमग्रेऽपि [illegible] (२९) [illegible]॥

गगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [४] जइ कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [५] जइ संखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अपज्जत्तगसंखेज्जवामाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [६] जइ पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भक्कंतियमणुस्साणं किं सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो मिच्छद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो सम्मामिच्छदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [७] जइ सम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो असंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो संजयासंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं। [८] जइ[१] संजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं? गोयमा! अपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो पमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयक-

१ जति खं० । जदि स० ॥

म्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं । [९] जइ अपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं किं इड्ढिपत्तअपमत्तसंजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं अणिड्ढिपत्तअपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! इड्ढिपत्तअपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं, णो अणिड्ढिपत्तअपमत्तसजयसम्मद्दिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्साणं मणपज्जवणाणं समुप्पज्जइ ।

२० किं मणुस्सा० इत्यादि । सम्मुच्छिममणुस्सा गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव वंत-पित्तादिसु संभवंति । कम्मभूमगा पंचसु भरहेसु पंचसु एरवएसु पंचसु महाविदेहेसु य । हेमवतादिसु मिहुणा ते अकम्मभूमगा । तिण्णि जोयणसते लवणजलमोगाहित्ता चुल्लहिमवतसिहरिपादपतिट्ठिता एगूरुगादि छप्पण्णं अंतरदीवगा । किं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं ? ति । पज्जत्ती णाम–सत्ती सामत्थं । सा य पुग्गलदव्वोवचया उप्पज्जति । ताओ य छ पज्जत्तीओ– आहार-सरीर-इंदिय आणापाणू भासा-मणपज्जत्ती चेति । तत्थ एगिंदियाणं चउरो, विगलिंदियाण पंच, सण्णीणं संववहारतो पंच चेव, अण्णीण य छ । तत्थ आहारपज्जत्ती नाम खल-रसपरिणामणसत्ती आहारपज्जत्ती । सत्तधातुतया परिणामणसत्ती सरीरपज्जत्ती । पंचण्हमिंदियाणं [पे० १९४ द्वि] जोग्गा पोग्गला चिणित्तु अणाभोगनिव्वत्तितविरियकरणेण तब्भावणयणसत्ती इंदियपज्जत्ती । [उस्सास]जोग्गाण्णोग्गाणापाणूण गहण-णिसिरणसत्ती आणापाणुपज्जत्ती । वइजोग्गे पोग्गले घेत्तूण भासत्ताए परिणामेत्ता वइजोगत्ताए निसिरणसत्ती भासापज्जत्ती । मणजोग्गे पोग्गले घेत्तूणं मणत्ताए परिणामेत्ता मणजोगत्ताए निसिरणसत्ती मणपज्जत्ती । एताओ पज्जत्तीओ पज्जत्तयणामकम्मोदयेणं णिव्वत्तिज्जंति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया । अपज्जत्तयणामकम्मोदयेणं अणिव्वत्ताओ जेसिं ते अपज्जत्तया । अप्पमत्तसंजता जिणकप्पिया परिहारविसुद्धिया अहालंदिया पडिमापडिवण्णगा य, एते सततोवयोगोवउत्तत्ततो अप्पमत्ता । गच्छवासिणो पुण पमत्ता, कम्हा ? अणुवयोगसंभवातो । अहवा गच्छवासी णिग्गता य पमत्ता वि अप्पमत्ता वि भवंति परिणामवसओ । 'इड्ढिपत्तस्स'त्ति आमोसहिमादिअण्णतरइड्ढिपत्तस्स मणपज्जवनाणं उप्पज्जइ त्ति । अहवा 'ओहिनाणिणो मणपज्जवनाणं उप्पज्जति' त्ति अण्णे नियमं भणंति ॥

३० तं च दुविहं उप्पज्जइ, तं जहा–उज्जुमती य विउलमती य ।

३० रिजू मती उज्जुमई, सामण्णग्गाहिणि त्ति भणितं होति । एस मणोपज्जायविसेसो त्ति । भोसण्णं विसेसविमुहं उवलब्भति, णातीवबहुविसेसविसिट्ठं अत्थं उवलभइ त्ति भणितं होति, घडो णेण चिंतितो त्ति जाणति । विपुला मती विपुलमती, बहुविसेसग्गाहिणि त्ति भणितं भवति । मणोपज्जायविसेसे जाणति, चिंतितो णेण घडो चिंतितो, तं च देस-कालादिअणेगपज्जायविसेसविसिट्ठं जाणति ॥ अहवा रिजु विपुलमतीणं इमं दव्वादीहिं विसेससरूवं भण्णति—

१ सामत्थतो य खं ॥ २ खं चिणिचिणित्तु खं० खं ॥ ३ तब्भावणयण खं दा ॥ ४ अणिड्ढिपत्ता जेसिं खं ॥ ५ तं च दुविहं उप्पज्जइ इति सं० डे० नास्ति ॥ ६ उप्पज्जइ इति शु० नास्ति ॥ ७ विउलमती पु० ॥

३१. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–[1]दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। [2]तत्थ दव्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमती [3]अब्भहियतराए जाणति पासति। खेत्तओ णं [4]उज्जुमती अहे जाव [5]इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए [6]उवरिमहेट्ठिल्लाइं खुड्डागपयराइं उड्ढं जाव जोतिसस्स उवरिम[7]तले तिरियं जाव अंतोमणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-[8]समुद्देसु सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अड्ढाइज्जे[9]हिं अंगुलेहिं [10]अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं [11]खेत्तं जाणति पासति। कालओ णं उज्जुमती जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अतीयमणागयं [12]वा कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती [13]अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ। भावओ णं उज्जुमती अणंते भावे जाणइ पासइ सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती [14]अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

३२. मणपज्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपायडणं।
माणुसखेत्तणिबद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ५३ ॥
से त्तं मणपज्जवणाणं।

---

१ दव्वओ ४। दव्वओ ल० ॥ २ तत्थ इति खं० सं० ल० नास्ति ॥ ३ अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति जे० डे० मो० ल०। अब्भहियतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति ख० स०। एतयो पाठभेदयो प्रथमः सूत्रपाठभेद श्रीमलयगिरिपादैः स्ववृत्तावादृतोऽस्ति। द्वितीय पुन पाठभेदो भगवता श्रीअभयदेवसूरिणा भगवत्या-ष्टमशतकद्वितीयोद्देशके मनःपर्यवज्ञानविषयकसूत्रव्याख्यानावसरे जहा नंदीए इति सूत्रनिर्दिष्टनन्दिसूत्रपाठोद्धरणे तद्व्याख्याने चादृतोऽस्ति। चूर्णि-हरिभद्रवृत्तिसम्मतस्तु सूत्रपाठः शु० आदर्श एव उपलभ्यते ॥ ४ उज्जुमती जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेणं अहे जाव मु०। नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शेऽय पाठ, नापि चूर्णिकृता वृत्तिकृद्भ्यां वाऽय पाठः स्वीकृतो व्याख्यातो वा वर्तते। अपि च श्रीअभयदेवाचार्येणापि भगवत्या अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीपाठोद्धरणे नाय पाठ उल्लिखितो व्याख्यातो वाऽस्ति। नापि विशेषावश्यकादौ तट्टीकादिषु वा मनःपर्यवज्ञानक्षेत्रवर्णनाधिकारे जघन्योत्कृष्टस्थानचिन्ता दृश्यते ॥ ५ इमीए ल० ॥ ६ उवरि-महेट्ठिलेसु खुड्डागपयरेसु उड्ढ ख० स०। उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे उड्ढ ख० स० विना मलयगिरिवृत्तौ च ॥ ७ °तलो खं० स० शु० ॥ ८ °समुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पण्णाए अंतरदीवगेसु सण्णीणं डे० शु० मो० मु०। श्रीमद्भिरभयदेवाचार्यैर्भगवत्यामष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे एष एव सूत्रपाठ आदृतोऽस्ति। ॥ ९ °जेहिमंगु° मो० मु० ॥ १० अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं इति हरिभद्र-मलयगिरिवृत्तिसम्मत सूत्रपाठः जे० मो० मु० ॥ ११ खेत्तं इति जे० स० डे० शु० नास्ति। भगवत्यामभयदेवाचार्योद्धृते नन्दीपाठेऽपि नास्ति। १२ च भगवत्यां श ८ उ २ नन्दीपाठोद्धरणे ॥ १३ अब्भहियतरागं विउलतरागं इति पदद्वय ख० स० लसं० नास्ति। भगवत्यामपि नन्दीपाठोद्धरणे एतत् पदद्वय नास्ति ॥ १४ अत्र अब्भहियतरागं विउलतरागं वितिमिरतरागं इति पदत्रय ख० सं० ल० भगवत्या नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे च नास्ति, केवल विसुद्धतराग इत्येकमेव पद वर्तते ॥

३१-३२. सण्णिणा मणयेण मणिते मणोलब्भे अणंते अणंतपदेसिए दव्वक्खताए तगाते य वण्णादिए भावे मणपज्जवनाणेण पच्चक्खं पवन्नमाणा जाणाति त्ति भणितं। मणितमत्थं पुण पच्चक्खं ण पक्खवि, जेण मणालंबणं मुत्तममुत्तं वा, सा य छदुमत्था त अणुमाणता [पं० १९५ प्र०] पेक्खति त्ति भतो पासणता मणिता। अहवा छदुमत्थस्स एगविसयपावसमत्थं ति निविधापयोगसभवो भवति, जदेत्थव रिजु विपुलमतीण उवयोगा, भतो विसस-सामण्णत्थसु उवउज्जतो जाणति पासइ त्ति मणित, ण दोसो। विपुलमती पुण दव्वक्खताए वण्णादिएहि य अधिगतर जाणतीत्यर्थः। उवरिमहेट्ठिल्लाइ खुड्डागपतराइं ति इमस्स भासणत्थं इम पण्णविज्जति–तिरियलोगस्स उड्ढाऽहअट्ठारसजायणसतायामस्स बहुमज्झ एत्थ असंखेयंगुलभागमेत्ता लोगागासप्पयरा अण्णोणेण संवट्टिता सव्वखुड्डगयरा खुड्डागपतर त्ति मणिता, ते य सव्वतो रज्जुप्पमाणा। तेसिं जे बहुमज्झ दो खुड्डागपतरा तेसिं पि बहुमज्झ जंबुदीवे रतणप्पभपुढविबहुसमभूमिभागे मंदरस्स बहुमज्झ एत्थ अट्ठपदेसा रुयगा,–जतो दिसि-विदिसिविभागो पवत्तो,–एवं तिरियलोगमज्झं। एतातो तिरियलोगमज्झातो रज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतो उवरि तिरियं असंखेयगुलभागअसंखेयंगुलभागवड्ढी, उवरिहुत्तो वि अंगुलअसंखेयभागारोहो चेव, एवं तिरियमुवरिं च अंगुलअसंखेयभागवड्ढीए ताव लोगवड्ढी णेतव्वा जाव उड्ढलोगमज्झं, ततो पुणो तेणेव कमेणं संवट्टो कातव्वो उवरिलोगता रज्जुपमाणो। ततो य उड्ढलोगमज्झातो उवरिं हेट्ठा य कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव जाव रज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतर त्ति। तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणखुड्डागप्पतरेहिंतो वि हेट्ठा अंगुलअसंखेयभागवड्ढी तिरियं, अहावगाहेण वि अंगुलस्सअसंखभागा चेव, एवं अहेलोगो वड्ढेतव्वो जाव अहेलोगंतो सत्त रज्जूओ। सत्तरज्जुपयरेहिंता उवरुवरिं कमेण खुड्डागप्पतरा भाणितव्वा जाव तिरियलोगमज्झरज्जुप्पमाणा खुड्डागप्पतर त्ति। एवं खुड्डागपरूवणे कत इम भण्णति–उवरिम ति–तिरियलोगमज्झातो [पं० १९५ द्वि०] उड्ढं जाव णव जोयण सता ताव इमीए रयणप्पभपुढवीए उवरिमखुड्डागपतर त्ति भण्णति। तद्दहा अहेलोगे जाव अहेलाइयगामवत्तिणो ते हेट्ठिमखुड्डागप्पतर त्ति भण्णति, रिजुमती अधो ताव पस्सतीत्यर्थः। अहवा अहलोगस्स उवरिमा खुड्डागप्पतरा तिरियलोगस्स य हेट्ठिमा खुड्डागप्पतरा ते जाव पस्सतीत्यर्थः।

अण्णे भणंति— उवरिम त्ति–अंतोलोगापरिच्छिन्ना जे ते उवरिमा। के य ते? उच्यते— सव्वतिरियलोगवत्तिणो तिरियलोगस्स वा अहो पव्वमाणसमतलाणिणा ताव चेव जे हेट्ठिमा ते जाव पस्सतीत्यर्थः, इम च पढति, अहेलोइयगामसमणपज्जवप्पमाणमंभवपासण्णणता। उक्तं च—

इहापार्थीकृता ग्रामा न विषयाद्भर्विन। मनागतांस्तसौ भावान् पश्यति तद्दर्शिनामपि ॥ १ ॥

[ ]

अइरातिरियंगुलप्पमाणा उम्मातंगुलप्पमाणता। कहं णज्जति? उच्यते—"उस्सेहपमाणतो मिणे देहं" [बृहत्संग्रहणी गा० ३३५] त्ति वयणातो। अंगुलादिया य जे पमाणा ते सव्वे दइनिप्फण्णा इति, भावविसयणता य णं स्स। रिजुमतिस्स जारिसभणमाणाना विपुलमती अंतमतिणमराग खेत्ते उवलभइ त्ति। एगदिसिं पि अण्णतिपसंभरा भवति त्ति गयनता भग्ग अण्णइयं त्ति जत्ता विपुलमतरां भण्णति। अहवा जहा पडा पडागा जपारणनता अण्णतिरा सा पुण निपमा पडागागसंभव रिज्जतरा भवति एवं विउलमती अण्णतिपतराग मणोमद्दिलीरद्धाभावं गयत जाणति, तं च नियमा विपुलतरं इच्चय। अहवा आयाम विक्खंभं अण्णइयतराग वाहेण विउलतरं पासे

१ अंतेसोगावरिट्ठिता पि० ॥ २ गोमवणाद्दणमणता जा० दा० होविवहणी च॥ ३ ण दासो। रिज दा० अरायदीरहत्ती च। ण दो पा० रिजु० अ० ॥ ४ जा० दा० आयाबोइ त्यागूवप्पोतम मणमिण रणे अण्णहिय रं० रणे॥

उपलभत इत्यर्थः। अहवा दो वि पदा एगट्ठा। विसिट्ठविसुद्धिविसेसदंसगो तरसद्दो त्ति, यथा शुक्लः शुक्लतर इति। किंच–जहा पगासगदव्वविसेसातो खेत्तविसुद्धि(द्धी) विसेसेणऽक्खिज्जति तहा मणपज्जवनाण-चरणविसेसातो रिजुमणपज्जवणाणिसमी[जे० १९६ प्र०]वातो विपुलमणपज्जवणाणी विसुद्धतरागं जाणति, मणपज्जवनाणावरणखयोवसमुत्तमलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागं ति भण्णति। अहवा पुव्वबद्धमणपज्जवनाणावरणखयोवसमुत्तमलंभत्तणतो विसुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽऽवरणवज्झमाणस्सऽभावत्तणतो पुव्वबद्धस्स य अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागं–ति भण्णति। अहवा दो वि एते एगट्ठिया पदा। मणपज्जवनाणस्स सेसं कंठं ॥ इदाणिं केवलनाणं भण्णति, मणपज्जवनाणाणंतरं सुत्तकमुद्दिट्ठत्तणतो विसुद्धिलाभुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलणाणं? केवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च

३३. से किं त केवलेत्यादि सूत्रम्। केवलनाणमभेदे वि भेदो भव-सिद्धावत्थादिएहिं अणेगधा इमो कज्जति–मणुस्सभवट्ठितस्स जं केवलनाणं तं भवत्थकेवलनाणं। चसद्दो उस्सण्णं भेददंसणे। सव्वकम्मविप्पमुक्को सिद्धो, तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवलनाणं ॥

३४. से किं तं भवत्थकेवलणाणं? भवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–सजोगिभवत्थकेवलणाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवातो, तेण सह जोगेण सजोगी, तस्स जं नाणं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं। अजोगी–सव्वजोगनिरुद्धो सइलेसभावट्ठितो, तस्स जं णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलनाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं? सजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च। से त्तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं।

३६. से किं तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं? अजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च। से त्तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं।

३५–३६. पढमसमयो–केवलणाणुप्पत्तिसमयो चेव, अपढमो वितियादिसमयो–जाव सजोगित्तस्स चरमसमएत्यर्थः। अहवा एसेवऽत्थो समयविकप्पेण अण्णहा दंसिज्जति–सजोगिकालचरिमसमए चरिमो त्ति–पच्छिमो, ततो परं अयोगी भविष्यतीत्यर्थः। अचरिमो त्ति–चरिमो न भवति, चरिमस्स आदिसमयातो आरब्भ ओमत्थगं जाव पढमसमयो ताव अचरमसमया भण्णति, एतेसु जं णाणं तं अचरमसमयभवत्थकेवलनाणं। सेसं कंठ ॥

१ °विसुद्धिविसेसो लक्खि° आ० दा० ॥ २ °चरमयो आ० दा० ॥

३७ से त किं सिद्धकेवलणाणं? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–अणंतरसिद्धकेवलणाणं च परंपरसिद्धकेवलणाणं च ।

३७ से किं तं सिद्धकेवलनाणेत्यादि सूत्रम् । तस्स सिद्धकेवलणाणं दुविहं–अणंतरं परंपरं । तत्थ अणंतरं णा समयंतर पत्त, सिद्धत्वप्रथमसमयवर्तिन इत्यर्थ ॥

३८. से किं तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं? अणंतरसिद्धकेवलणाणं पण्णरसविहं पण्णत्तं, तं जहा–तित्थसिद्धा १ अतित्थसिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थिलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ णपुंसगलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अण्णलिंगसिद्धा १२ गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५ । से त्तं अणंतरसिद्धकेवलणाणं ।

३८. ते पंचदसविधा तित्थसिद्धादयो । 'तित्थसिद्धा' इति जे तित्थे सिद्धा ते तित्थसिद्धा, तित्थं च–चातुवण्णो समणसंघो पढमगणधरो वा, भणितं च भगवतीए–"तित्थं भंते! तित्थं? [जं० १९६ द्वि०] अरहा तित्थं? गोतमा! अरहा ताव तित्थंकरे, तित्थं पुण चातुवण्णो समणसंघो" [भग श० २० उ० ८ सू० ६८२] तम्मि तित्थकालभावे उप्पण्णे तता वा तित्थकालभावातो जे सिद्धा ते तित्थसिद्धा १ । अतित्थं–चातुवण्णसंघस्स अभावो तित्थकालभावस्स वा अभावो। तम्मि अतित्थकालभावे अतित्थकालभावातो वा जे सिद्धा ते अतित्थसिद्धा। तं च अतित्थं तित्थकर तित्थे वा अणुप्पण्णे जहा मरुदेविसामिणिप्पभितयो २ । तित्थमाइयो तित्थकरा, ते जम्हा तित्थकर णामकम्मुदयभावे ठिता तित्थकरभावातो वा सिद्धा तम्हा ते तित्थकरसिद्धा ३ । अतित्थकरा सामण्णकेवलिणो गोतमादि, तम्मि अतित्थकरभावे ठिता अतित्थकरभावातो वा सिद्धा अतित्थकरसिद्धा ४ । स्वयमेव बुद्धा स्वयंबुद्धा, सतं अप्पणिज्जं वा जाइसरणादि कारणं पडुच्च बुद्धा सतंबुद्धा । स्फुटतरमुच्यते–बाह्यप्रत्ययमन्तरेण ये प्रतिबुद्धास्ते स्वयंबुद्धा । ते य दुविहा–तित्थगरा तित्थगरवतिरित्ता वा । इह वतिरित्तेहिं अधिकारो । किंच–सयंबुद्धस्स बारसविहो वि उवधी भवति, पुव्वाधीतं से सुतं भवति वा ण वा । जति से नत्थि ता लिंगं नियमा गुरुसन्निधे पडिवज्जइ, गच्छे य विहरति । अह पुव्वाधीतसुतसंभवो अत्थि ता से लिंगं देवता पयच्छति, गुरुसन्निधे वा पडिवज्जति । जइ य एगविहारविहरणसमत्थो, इच्छा य से तो एक्को चेव विहरति, अन्यथा गच्छे विहरतीत्यर्थः । एतम्मि भावे ठिता सिद्धा पत्तातो वा भावातो सिद्धा सयंबुद्धसिद्धा ५ । 'पत्तेयबुद्धा' पत्तेयं–बाह्य वृषभादि कारणमभिसमीक्ष्य बुद्धाः प्रत्येकबुद्धा । बहिःप्रत्ययप्रतिबुद्धानां च पत्तेयं नियमा विहारो जम्हा तम्हा य ते पत्तेयबुद्धा, जहा करकंडुमादयो । किंच–पत्तेयबुद्धाणं जहण्णेण दुविहो उक्कोसेण णवविधो उवधी नियमा पाउरणवज्जो भवति । किंच–पत्तेयबुद्धाणं पुव्वाधीतं सुतं णियमा भवति, जहण्णेणं एक्कारसंगा, उक्कोसेण भिन्नदसपुव्वा । लिंगं च से देवता पयच्छति, लिंगवज्जिता वा भवति । जतो [जं० १९७ प्र०] भणितं–"रूप्पं पत्तेयबुद्धा" [आव० गा० ११२९] इति । एतम्मि भावे पत्तातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धबोधिता–जे सयंबुद्धेहिं तित्थकरादिएहिं बोधिता, पत्तेयबुद्धेहिं वा कपिलादिएहिं बोधिता ते बुद्धबोधिता । अहवा बुद्धबोधिएहिं बोधिता बुद्धबोधिता, एवं जम्बूस्वाम्यादिएहिं प्रभवादयो भवंति । अहवा बुद्ध इति–प्रतिबुद्धा, तेहिं प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता, प्रभवादिभिराचार्यैः ।

१ अण्णया तं या आह जा रा ॥ २ मिसमा मो ॥ ३ एगविहारविहरणजोग्गो जा ॥ ४ विहार एकः ॥

एतभावे ट्ठिता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा ७। 'सलिंगसिद्धा' दव्वलिंगं पति रजोहरण-मुहपोत्ति-पडिग्गह-धारणं सलिंगं, एतम्मि दव्वलिंगे ट्ठिता एतातो वा सिद्धा सलिंगसिद्धा ८। 'अण्णलिंगसिद्धा' तावस-परिव्वाय-गादिवक्कल-कासायमादिदव्वलिंगट्ठिता सिद्धा अण्णलिंगसिद्धा ९। एवं गिहिलिंगे वि—केसादिअलंकरणादिए दव्व-लिंगे ट्ठिता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा १०। इत्थिलिंगं ति—इत्थीए लिंगं इत्थिलिंगं, इत्थीए उवलक्खणं ति वुत्तं भवति। त तिविहं—वेदो सरीरनिव्वत्ती णेवच्छं च, इह सरीरनिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेद-णेवच्छेहिं। तत्थ वेदे कारणं—जम्हा खीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देसूणपुव्वकोडीतो सिज्झति, णेवच्छस्स य अणियत-त्तणतो, तम्हा ण तेहिं अहिकारो। सरीराकारणिव्वत्ती पुण णियमा वेदुदयातो णामकम्मुदयाओ य भवति तम्मि सरीरनिव्वत्तिलिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थिलिंगसिद्धा ११। एवं पुरिस-णपुंसकलिगा वि भाणितव्वा १२-१३। एकसिद्ध त्ति—एकम्मि समए एक्को चेव सिद्धो १४। अणेगसिद्ध त्ति—एकम्मि समए अणेगे सिद्धा, दुगादि जाव अट्ठसत ति। भणितं च—

बत्तीसा अडयाला सट्ठी बावत्तरी य बोधव्वा। चुलसीती छण्णउती दुरहित अट्ठुत्तरसतं च ॥१॥१५।

[वृहत्सं गा ३३२]

चोदक आह—णणु एते पण्णरस भेदा छभेदट्ठिताअण्णोण्णनिरवेक्खा ण भवंति कहं पंचदसभेद त्ति पण्णत्ता? आचार्य आह—णणु तित्थाऽतित्थपुरिसवि[जे० १९७ द्वि०]भागुप्पण्णा-ऽणुप्पण्णकालभेदतो वा दो भेदा परोप्प-रविरुद्धा १, तहा तित्थगरणामकम्मुदयातो अभावतो य दो भेदा परोप्परविरुद्धा २, तहा लिंगादिया दव्वलिंग-पडिवत्तिभेदा परोप्परविरुद्धा ३, तहा मोहुत्तरपगडिवेदभेदोदयतो त्थिमादिसरीरलिंगणिव्वत्ती परोप्परविरुद्धा ४, एगा-ऽणेगा वि एक्ककालसहचरिता-ऽचरितत्तणतो भिण्णा ५, सयबुद्धादयो वि णाणावरणक्खओवसमविसेसपडि-बोधविसेसत्तणतो प्रतिविसिट्ठा ६, एवं तित्थादियाण अण्णोण्णलक्खणसभावट्ठिताणं पंचदस भेदा पण्णत्ता, किंच—जहा मतिणाणे गंधादियाण चरिमपज्जवसाणाणं अण्णोण्णाणुवेधत्तणे वि भेदो इह पि जइ तहा तो को दोसो?, किंच—णाणाणयाभिप्पायत्तणतो सुत्तस्स य अणेगगम-पज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदसभेदकरणं ति ण दोसो ॥ इदाणिं तं चेव सिद्धकेवलणाणं समतभेदतो अणेगधा विसेसिज्जति—

३९. से किं तं परंपरसिद्धकेवलणाणं? परंपरसिद्धकेवलणाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से त्तं परंपरसिद्धकेवलणाणं। से त्तं सिद्धकेवलणाणं।

३९. पढमसमयसिद्धस्स जो वितियसमयसिद्धो सो परो, तस्स वि य अण्णो, एवं परंपरसिद्धकेवलण्णाणं भाणितव्वं। तं च 'अपढमसमय' इत्यादि। नास्य प्रथमः समयो विद्यत इत्यप्रथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः, स च परंपरसिद्धविसेसणस्स प्रथमः, तस्स परतो वितियादिसमया भाणितव्वा ॥

---

१ भेदा विभेद° आ० दा०। अत्रेदमवधेयम्—श्रीमद्भिर्हरिभद्रपादैः मलयगिरिचरणैश्च स्वस्ववृत्तौ तीर्थसिद्धा-ऽतीर्थसिद्धरूपभेदद्वयान्त पञ्चदशभेदान्तर्भावं सङ्कल्प्यैव चालना-प्रत्यवस्थाने उपन्यस्ते स्त तदनुसारी पाठभेदोऽपि चूर्ण्यादर्शेषु दृश्यते। किञ्च—चूर्णीसत्कप्राचीनतमे आदर्शे षड्भेदान्त पञ्चदशभेदान्तर्भावावेदकः छब्भेदट्ठिता० इत्यादि पाठो वरीवृत्यते, आचार्यप्रतिविधानमपि षड्विभागावेदकमेव विद्यते इत्यस्माभिः छब्भेदट्ठिता० इति पाठ एव मूले आदृतोऽस्ति। अत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥ २ गत्यादिकाना चरमपर्यवसानानाम् "-गइ इंदिए य०" तथा "भासग परित्त०" इति आवश्यकनिर्युक्तिगाथा १४-१५ निर्दिष्टाना द्वाराणाम् इत्यर्थ ॥ ३ °णुवेक्खंताण वि आ० दा० ॥ ४-५-६-७ °सिद्धकेवलणाणं ल० ॥ ८ °समयो तम्मि सिद्धो आ० दा०॥

४० तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं केवलणाणी सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खेत्तओ णं केवलणाणी सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं केवलणाणी सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं केवलणाणी सव्वे भावे जाणइ पासइ।

४० तं सव्वं पि चतुव्विहं दव्वादिय। 'सव्वदव्व' त्ति धम्मा ऽधम्मा ऽऽगासादया, तेहिंतो जीवदव्वा अणंतगुणा, तेहिंतो वि पुग्गलदव्वा अणंतगुणा, एत सव्वं सरूवता जाणति। खेत्तं पि लोगा-ऽलोगभेदभिण्णमणंतं सरूवतो जाणति। कालं पि समया-ऽऽवलियादियं तीयमणागतसव्वद्धं वा सरूवतो सव्वं जाणति। भावा वि दुविधा भावा—जीवभावा अजीवभावा य। तत्थ जीवभावा कम्मुदयसतखयपरिणामियलक्खणा गति-कसायादिया कम्मुदयलक्खणा अणेगविधा, उवसम[जे० १९८ प्र०]-खय-खयोवसमजीवसतलक्खणा अणेगविहा, पारिणामिता य जीव भव्वा-ऽभव्वत्तादिया, अजीवाऽमुत्तदव्वेसु धम्मा-ऽधम्मा-ऽऽगासा गति ठिति अवगाहलक्खणा, अगुरुलहुगा य अणंता, पुग्गलदव्वा य सुहुम-बादर-विस्ससापरिणता अब्भिंदधणुमादिया अणेगविधा। परमाणुमादीण य वण्णादिपज्जवा एगादिया अणंता। एते दव्वादिया सव्वे सव्वधा सव्वत्थ सव्वकालं उवयुत्तो सागारा-ऽणागारलक्खणेहिं णाण-दंसणेहिं जाणति पासति य। एत्थ केवलणाण-दंसणोवयोगेहिं बहुधा समयसब्भावं आयबुद्धीए परूवेंता इमं भणंति—

केयी भणंति जुगवं जाणइ पासति य केवली नियमा।
अण्णे एगंतरियं इच्छंति सुतोवदेसेणं ॥ १ ॥
अण्णे ण चेव वीसुं दंसणमिच्छंति जिणवरिंदस्स।
जं चिय केवलणाणं तं चिय से दंसणं बेंति ॥ २ ॥ [विशेषण. गा १५३ ५४]

तत्थ जे ते भणंति 'जुगवं जाणति पासति य' ते इमं उववत्तिं उवदिसंति—

जं केवलाइं सादी-अपज्जवसिताइं दो वि भणिताइं।
तो बेंति केइ जुगवं जाणति पासति य सव्वण्णू ॥ ३ ॥

किंच—

इहराऽऽदी-णिहणत्तं मिच्छाऽऽवरणक्खयो त्ति व जिणस्स।
इतरेतरावरणया अहवा णिक्कारणावरणं ॥ ४ ॥
तह य असव्वण्णुत्तं असव्वदरिसित्तणप्पसंगो य।
एगंतरोवयोगे जिणस्स दोसा बहुविधीता ॥ ५ ॥ [विशेषण. गा १९३ १९५]

एवं परेण बहुधा भणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह—

भण्णति, भिण्णमुहुत्तोवयोगकाले वि तो तिनाणिस्स।
मिच्छा छावट्ठी सागरोवमाइं खयोवसमो ॥ ६ ॥ [विशेषण. गा २०२]

---

१ दव्वओ ४। दव्वओ क ॥ २ तत्थ इति क खं ल सु नास्ति ॥ ३ भणंति ला सु ॥ ४ सव्वभावे खं ॥ ५ सु-सुमगुणादीण ला दा ॥

जहा छउमत्थस्स मति-सुता-ऽवधिणाणेसु अंतमुहुत्तकालोवयोगसंभवे उवयोगा-ऽणुवयोगेण य छावट्ठिसागरा से ठितिकालो दिट्ठो, तहा जति जिणस्स णाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-ऽणुवयोगेण भवंति तो को दोसो ? । जति एतं ते णाणुमतं तो इमं ते कहं अणुमतं भविस्सइ ?—

अह ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराइओ अरहा ।
संते वि अंतरायक्खयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥

सततं ण देइ [जे०१९८ द्वि०] लभइ व भुंजइ उवभुंजई य सव्वण्णू ।
कज्जम्मि देइ लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

किंच—

दिंतस्स लभंतस्स व भुंजंतस्स व जिणस्स एस गुणो ।
खीणंतराइयत्ते ज से विग्घं ण संभवति ॥ ९ ॥

उवउत्तस्सेमेव य णाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स ।
खीणावरणगुणोऽयं, जं कसिणं मुणइ पासति वा ॥ १० ॥ [विशेषण गा. २०३–६]

पुणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं च ण पासती जति जिणिंदो ।
एवं ण कदाइ वि सो सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ ११ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि हु चतुर्हि वि नाणेहिं जह चतुण्णाणी ।
भण्णइ, तहेव अरहा सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽऽह—

तुल्ले उभयावरणक्खयम्मि पुव्वयरमुब्भवो कस्स ।
दुविधुवयोगाभावे जिणस्स जुगवं ? ति चोदेति ॥ १३ ॥

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एस नियमो जुगवुप्पण्णेसु जुगवमेवेह ।
होयव्वं उवओगेण, एत्थ सुण ताव दिट्ठंतं ॥ १४ ॥

जह जुगवुप्पत्तीय वि सुत्ते सम्मत्त-मति-सुतादीण ।
णत्थि जुगवोवयोगो सव्वेसु तहेव केवलिणो ॥ १५ ॥

किंच—

भणितं पि य पण्णत्ती-पण्णवणादीसु जह जिणो समयं ।
जं जाणती ण पासति तं अणुरतणप्पभादीणि ॥ १६ ॥ [विशेषण गा २१५–२०]

१ पुव्वं समुब्भवो आ० दा० ॥

जे भणंति केवलणाण दंसणाण एगत्तं ते इम हेतुजुत्तिं भणंति —

जह किर खीणावरणे देसण्णाणाण संभवो ण जिणे ।
उभयावरणातीते तह केवलदंसणस्सावि ॥ १७ ॥

एस ते हेतुजुत्ती जहा भत्वसाधक न ससइ तहा उत्तर(रं) हेतुजुत्तीए चेव भण्णति —

देसण्णाणोवरमे जह केवलनाणसंभवो भणितो ।
देसदंसणविगमे तह केवलदंसणं होतु ॥ १८ ॥

अह देसनाण-दंसणविगमे तव केवलं मतं नाणं ।
ण मतं केवलदंसणमिच्छामेत्तं णणु तवेदं ॥ १९ ॥ [विशेषण गा १५५–५७]

किंच—

भण्णति अहोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते ।
ण य णाम ओहिदंसण-णाणेगत्तं तह इम पि ॥ २० ॥ [विशेषण. गा १७८]

एवं पराभिप्याये पडिसिद्धे एगतरोवयोगत्ता सिद्धा तह विमं भण्णति —

जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दंसणं तं से ।
जाणइ य जेण अरहा तं से णाणं ति घेत्तव्वं ॥ २१ ॥ [विशेषण. गा १९२]

किंच-सिद्धाधिकारे एगतरो[व १९९ प्र०]वयोगदंसिगा इमा कुडा गाहा —

नाणम्मि दंसणम्मि य एत्तो एगतरयम्मि उवउत्ता ।
सव्वस्स केवलिस्सा जुगवं दो णत्थि उवयोगा ॥ २२ ॥ [विशेषण गा २२९]

किंच भगवतीए —

उवयोगो एगतरो पणुवीसतिमे सत सिणायस्स ।
भणितो विगडत्थो चिय छट्ठुद्देसे विसेसेतु ॥ २३ ॥ [विशेषण. गा २१२]

किंच—

कस्स व णाणुमतमिणं जिणस्स जति होज्ज दो वि उवयोगा ।
णूणं ण होंति जुगवं जतो णिसिद्धा सुते बहुसो ॥ २४ ॥ [विशेषण गा २१९]

४१ अह सव्वदव्वपरिणामभावविण्णत्तिकारणमणंतं ।
सासयमप्पडिवाती एगविहं केवलं णाणं ॥ ५४ ॥
केवलणाणेणऽत्थे णातुं जे तत्थ पण्णवणजोग्गे ।
ते भासइ तित्थयरो, वइजोग तयं हवइ सेसं ॥ ५५ ॥
से त्तं केवलणाणं । से त्त पच्चक्खणाण ।

१ वइजोग सुयं हवइ तेसिं इत्यत्र पाठः हरिभद्रवृत्तौ पाठान्तरत्वेन निर्दिष्टोऽस्ति । तथाहि– अन्ये त्वेवं पठन्ति–'वइजोग सुयं हवइ तेसिं' स वाग्योगः श्रुतं भवति 'तेषां' श्रोतृणाम् ।" इति हारि० वृत्तौ । "अन्ये त्वेवं पठन्ति–'वइजोग सुयं हवइ तेसिं' तत्रायमर्थः–'तेषां' श्रोतृणां भावश्रुतकारणत्वात् स वाग्योगः श्रुतं भवति, श्रुतमिति व्यवह्रियते इत्यर्थः । इति मलयगिरिः ॥ २ मये सु ॥ ३ अत्र चूर्णि-हरिभद्र से त्त पच्चक्खं इत्येव पाठः सम्मतः नोपलभ्योऽत्र कस्मिंश्चिदपि प्रतौ ॥

४१. अह सव्वदव्व० गाहा । केवलनाणेण० गाहा । एताओ जहा पेढियाए ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सेसं कंठं ॥ इदाणिं कमागतं वहुवत्तव्वं पारोक्खं भणति —

४२. से[1] किं तं परोक्खणाणं ? परोक्खणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आभिणिबोहियणाणपरोक्खं च सुयणाणपरोक्खं च ।

४२. अक्खस्स इंदिय-मणा परा, तेसु जं णाणं त परोक्ख । मति-श्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात्, अनुमानवत् । णणु सुत्ते इंदियपच्चक्खं भणितं ? उच्यते—सच्चमिणं, एत्थं जं इंदिय-मणेहिं वहिर्लिंगपच्चयमुप्पज्जति तमेगंतेणेव इंदियाण अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणतो, धूमाओ अग्गिणाणं व । जं पुण सक्खा इंदिय-मणोनिमित्तं तं तेसिं चेव पच्चक्खं, अलिंगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्खं । इंदियाणं पि तं संववहारतो पच्चक्ख, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा दव्विंदिया अचेतणा इति । तं दुविहं—मतिणाणं सुतनाणं च । इह मति-सुताणमुवण्णासक्कमे कारणं पुव्वुत्तं दट्ठव्वं ॥ मति-सुताण य अभेदसामिणिरूवणत्थं इमं सुत्तं—

४३. जत्था[2]ऽऽभिणिबोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तत्था[3]ऽऽभिणिबोहियणाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एत्था[4]ऽऽयरिया णाणत्तं पण्णवेंति[5]—अभिणिबुज्झइ[6] त्ति आभिणिबोहियं[7], सुणतीति[8] सुतं ।

“ मतिपुव्वयं सुयं, ण मती सुयपुव्विया । ”

४३. जत्थ मतिनाणेत्यादि । ‘जत्थ’ त्ति पुरिसे जत्थ व इंदिय-नोइंदियखयोवसमे मतिणाणमत्थि तत्थेव सुतनाणं पि । अहवा जत्थाभिनिबोधियसरूवं तत्थेव सुतं पि नियमा, अण्णोण्णाणुगता भवंतेते । आह—मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगतत्तणतो सामि-काल-कारण[जे० १९९ द्वि०]-खयोवसमतुल्लत्तणतो य एगत्तं पावति, णो दुगपरिकप्पणं ति, अत्रोच्यते, मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगताण वि आयरिया भेदमाहु दिट्ठंतसामत्थतो, जहा आगासपइट्ठिताणं धम्मा-ऽधम्माण अण्णोण्णाणुगताणं लक्खणभेदा भेदो दिट्ठो तहा मति-सुताण वि सामि-कालादिअभेदे वि भेदो भणति— अभिणिबुज्झतीत्यादि । एवं लक्खणा-ऽभिधाणभेदा भेदो तेसिं । अहवा इमो मति-सुतविसेसो—“मतिपुव्वयं सुतं, ण मती सुतपुव्विया ” इति, जतो सुतस्स मतिरेव पुव्वं कारणं । कहं ? उच्यते—मतीए सुतं पाविज्जति, ण मतिमंतरेण भापयितुं शक्यते, गदितं च मतीए पालिज्जति, परियत्तयतो णो पणस्सइ त्ति” जतो, मतिरेव सुतपुव्वा ण भवति । णणु सुतं पि सोतुं मती भवति ? उच्यते—त दव्वसुतं, न भावश्रुतादित्यर्थः । अहवा मति-सुताण भेदकतो विसेसो, मतिणाणं अट्ठावीसइभेदभिण्णं, सुतणाणं पुण अंगा-ऽ-

१ चूर्णि-वृत्तिकृता **से किं तं परोक्खं ? परोक्ख दुविह** इति पाठोऽत्र सम्मत, परोक्षज्ञानोपसहारेऽपि त **से त्त परोक्खं** इत्येव पाठ स्वीकृतोऽस्ति, किञ्च सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु उभयत्रापि **परोक्खणाण** इत्येव पाठ उपलभ्यते ॥ २ चूर्णि-वृत्तिकृद्भि किल **जत्थ मतिनाणं तत्थ सुतनाणं, जत्थ सुतनाण तत्थ मतिनाण** इतिरूप सूत्र मौलभावेनाङ्गीकृतमस्ति । किञ्च—श्रीचूर्णिकृदादिभि मौलभावेनाङ्गीकृतमेतद् **जत्थ मतिनाण** इत्यादि सूत्र साम्प्रतीनेष्वादर्शेषु नोपलभ्यते । अपि च चूर्ण्यवलोकनेनैतदपि ज्ञायते यत् चूर्णिकृत्समयभाविष्वादर्शेषु पाठभेदयुगलमप्यासीदिति ॥ ३ **तत्थ आभि°** ख० सं० ॥ ४ **इत्थ आय°** मो० मु० ॥ ५ **पण्णवति** शु० । **पण्णविंति** डे० ल० । **पण्णवयंति** मो० मु० ॥ ६ **अभिणिबोज्झतीति** ख० । **अभिणिबुज्झतीति** सं० शु० । **अभिणिबुज्झईइ** ल० ॥ ७ **°हियं णाण, सु°** ख० ल० विना ॥ ८ **सुणेइ त्ति** मो० मु० ॥ ९ **°पुव्वं जेण सुय** सं० डे० । चूर्णौ वृत्त्योश्च **जेण** इति पद नास्ति । **पुव्वं सुयं** ख० डे० विना ॥ १० **°ण-विधाण°** दा० ॥ ११ **त्ति, जतो मतिमेव सुतं पवण्णो भवति** आ० ॥

भगादिभेदभिण्णं भणेगहा। अहवा मति-सुताणं इंदियोवलद्धिविभागतो भेदो इमो–सोइंदियोवलद्धी० गाहा [विशेषा गा १२२] पूर्ववद् व्याख्येया। अहवा मति-सुतभेदं भणंति—बुद्धीद्दिट्ठे० गाहा। [विशेषा गा १२८] एतीए गाहाए भत्था मति-सुतविसेसो य जहा विसेसावस्सगे तहा भाणितव्वो। भण्णे भागसमं मतिणाणं सुंबसमं च सुतणाणं भवति त च ण घडति, जम्हा वाग-सुंबविद्दसेण महनाणस्सेव सुतं परिणामो दंसिज्जति, तम्हा त ण युज्यते इत्यर्थः। अहवऽण्णो मतिसुतभेदो—अक्खराणुगतं सुतं, अणक्खरं मतिनाणं ति। अहवाऽऽत्मप्रत्यायकं मतिणाणं, स्व-परप्रत्यायकं सुतनाणं। अहवा मति-सुताणं आवरणभेदातो [चे० २०० प्र०] भेदो दिट्ठो। तक्खतो-वसमविसेसातो चेव मति-सुताण भेदो भवति॥ भणितो मति-सुतविसेसो। इदाणिं जहा मति-सुतणाणाणं कज्ज-कारणभेदेहिं भेदो दिट्ठो तहा मतीए सुतस्स य सम्म-मिच्छविसेसो दंसणपरिग्गहातो भवइ त्ति अतो सुत्तं भण्णति—

४४ अविसेसिया मती मतिणाणं च मतिअण्णाणं च। विसेसिया मती सम्मद्दिट्ठिस्स मती मतिणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं। अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुय-अण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं।

४४ अविसेसिता मतीत्यादि। सामिणा अविसेसिता मती इम वत्तव्वा–आभिणिबोधिकेत्यादि। चसद्दो समुच्चये। विसेसिता मतीत्यादि। जदा पुण इमेण सामिणा विसेसिता मती भवति तदा इम वत्तव्वा–सम्मद्दिट्ठिस्स मतीत्यादि सुप्रसिद्धं। अविसेसितं सुतमित्यादि एत पि उक्कडुच्चिउं एव चेव वत्तव्वं। अहवा णाण-विसेसणेण अविसेसिता मती ताव मती चेव वत्तव्वा। सच्चेव मती णाण-ऽण्णाणसद्दविसेसणातो इमं वत्तव्वा–आभिणिबोधिकेत्यादि सुप्रसिद्धं। णाण-ऽण्णाणसद्दविसेसणं कह? भण्णति–सम्मत्त-मिच्छसामिगुणवयणतो सम्मद्दिट्ठिस्स मतीत्यादि सुप्रसिद्धं। सुते वि एवं चेव वत्तव्वं। पर आह–तुल्लखयोवसमत्तणतो घडाइवत्थूसु य सम्मपरिच्छेदत्तणतो सदादिविसयाण य समुवलम्भातो कहं मिच्छद्दिट्ठिस्स मति-सुता अण्णाणं ति भणिता? उच्यते—

सदसदविसेसणातो भवहेतु जदिच्छिओवलंभातो। णाणफलाभावातो मिच्छद्दिट्ठिस्स अण्णाणं॥१॥

मतिपुव्वं सुतं ति काउं मतिणाणं चेव पुव्वं भणामि—

४५. से किं तं आभिणिबोहियणाणं? आभिणिबोहियणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा–सुयणिस्सियं च असुयणिस्सियं च।

४५ से किं तं आभिणिबोधिकेत्यादि सुत्तं। तत्थ 'सुतनिस्सितं' ति सुत त्ति–सुत्तं, तं च सामाइयादि बिंदुसारपज्जवसाणं। एतं दव्वसुतं भणितं। त अणुसरतो जं मतिणाणमुप्पज्जति तं सुतणिस्साए उप्पण्णं ति सुतातो वा णिसृतं तं सुतणिस्सितं भण्णति। तं च उग्गहादी अट्ठावीसभेदं। 'असुतनिस्सितं च' त्ति जं पुण दव्व-भावसुतणिरवेक्खं आभिणिबोधिकमुप्पज्जति तं असुयभावातो समुप्पण्णं ति असुतनिस्सितं भण्णति। तं च उप्पत्तियादिबुद्धिचउक्कं॥ इम—

१ जम्हा चे० वा॥ २ विसेसणविसेसण भा० पा०॥ ३ अयं मूले स्थापितः सूत्रपाठः चे० मो० विशेषावश्यकमलधारीयवृत्तौ १६६ पत्रे नन्दीसूत्रपाठत्वेन उपलभ्यते। श्रीहरिभद्रसूरिणापि स्ववृत्तावयमेव सूत्रपाठो व्याख्यातोऽस्ति। विसेसिया सम्मद्दिट्ठिस्स मती मतिणाणं मिच्छद्दिट्ठिस्स मती मतिअण्णाणं। एवं अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयअण्णाणं च। विसेसियं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयं सुयणाणं मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयं सुयअण्णाणं। जे० डे० ल० शु०। अयमेव सूत्रपाठः श्रीमता मलयगिरिणा स्वीकृतो व्याख्यातश्चास्ति। विसेसिया मती सम्मद्दिट्ठिस्स मतिणाणं, मिच्छद्दिट्ठिस्स मतिअण्णाणं। अविसेसियं सुयं सुयणाणं सुयअण्णाणं च। विसेसियं सुयं सम्मद्दिट्ठिस्स सुयणाणं मिच्छद्दिट्ठिस्स सुयअण्णाणं। ख० ॥

४६. से किं तं असुयणिस्सियं ? असुयणिस्सियं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—
उप्पत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४ ।
बुद्धी चउव्विहा वुत्ता पंचमा नोवलब्भइ ॥ ५६ ॥
पुव्वं अदिट्ठमसुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।
अव्वाहयफलजोगा बुद्धी उप्पत्तिया णाम ॥ ५७ ॥
भरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुड्डग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।
गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२
खुड्डग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पंति १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥
भरह सिल १ मिंढ २ कुक्कुड ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ वणसंडे ७ ।
पायस ८ अइया ९ पत्ते १० खाडहिला ११ पंच पियरो १२ य ॥ ५९ ॥
महुसित्थ १८ मुद्दि १९ यंके २० य णाणए २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।
सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य महं २६ सतसहस्से २७ ॥ ६० ॥ १ ।
भरणित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।
उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६१ ॥
णिमित्ते १ अत्थसत्थे २ य लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से ६ य ।
गद्दभ ७ लक्खण ८ गंठी ९ अंगए १० रहिए य गणिया य ११ ॥ ६२ ॥
सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १२ ।
निव्वोदए १३ य गोणे घोडग पडणं च रुक्खाओ १४ ॥ ६३ ॥ २ ।
उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।
साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६४ ॥
हेरण्णिए १ करिसए २ कोलिय ३ डोए ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ ।
तुण्णाग ८ वड्ढती ९ पूतिए १० य घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

१ वेणयिया ख० शु० । वेणतिया स० ॥ २ ५८–५९ गाथे ख० शु० हे० ल० प्रतिषु पूर्वापरव्यत्यासेन वर्तेते ॥ ३ गड्डग ख० ॥ ४ पय ल० ॥ ५ कुक्कड ३ तिल ४ वालुय ५ हत्थि ६ अगड ७ इतिरूपः सूत्रपाठः सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषूपलभ्यते । आवश्यकनिर्युक्त्यादावपीत्थम्भूत एव पाठ उपलभ्यते, तथैव च तत्र सर्वैरपि चूर्णी-वृत्तिकृदादिभि व्याख्यातोऽस्ति । किञ्चात्र एतत्सूत्रचूर्ण्यादावव्याख्यानाद् मलयगिरिपादवृत्त्यनुसारी पाठो मूले आदृतोऽस्ति ॥ ६ पायस ८ पत्ते ९ अइया १० इति पाठानुसारेण मलयगिरिणा व्याख्यातमस्ति, न चोपलभ्यतेऽयं पाठः कुत्राप्यादर्शे ॥ ७ २० पणए २१ भिक्खू २२ य चेडग° इति प्रत्यन्तरे ॥ ८ आसे ल० ॥ ९ अगए १० गणिया य रहिए य ११ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिषु । आवश्यकनिर्युक्त्यादौ तद्वृत्त्यादौ च मूलगत एव पाठ उपलभ्यते ॥ १० निव्वोदएण १३ गोणे शु० ॥ ११ डोवे मो० मु० ॥

अणुमाण हेउ दिट्ठंतसाहिया वयविवागपरिणामा ।
हिय-णीसेसफलवती बुद्धी परिणामिया णाम ॥ ६६ ॥
अभए १ सेट्ठि २ कुमारे ३ देवी (?वे) ४ उदिओदए हवति राया ५ ।
साहू य णंदिसेणे ६ धणदत्ते ७ साव(?वि)ग ८ अमच्चे ९ ॥ ६७ ॥
खमए १० अमच्चपुत्ते ११ चाणक्के १२ चेव थूलभद्दे १३ य ।
णासिक्कसुंदरीनंदे १४ वइरे १५ परिणामिया बुद्धी ॥ ६८ ॥
चलणाहण १६ आमंडे १७ मणी १८ य सप्पे १९ य खग्गि २० थूभिं २१ दे २२ ।
परिणामियबुद्धीए एवमादी उदाहरणा ॥ ६९ ॥ ४ ।
से त्त असुयनिस्सियं ।

४६ पुच्छ० गाहा । [भरहसिल० गाहा] । भरह० गाहा । मधु० गाहा ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ उप्पत्तिया गता १ । इमा वेणतिया—

भरणि० गाहा । निमित्ते० गाहा । सीता० गाहा ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ विण[वे० २० द्वि०]यस्स सुत्था गता २ । इमा कम्मइया—

उवओग० गाहा । हेरण्णि० गाहा ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ कम्मइया गता ३ । इमा पारिणामिया—
अणु० गाहा । अभए० गाहा । खमए० गाहा । चलणा० गाहा । एताओ सव्वाओ जहा णमोक्कारे (आव० नि० गा० ९३८–५१) तहा वक्खाणा ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ४ । इयाणिं सुतणिस्सितं उग्गहाइयं सवित्थरं भण्णति—

४७ से किं त सुयणिस्सियं मतिणाणं ? सुयणिस्सियं मतिणाणं चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४ ।

४७ इह सामण्णस्स रूवादिअत्थस्स य विसेसनिरवेक्खस्स अणिद्देसस्स अवग्रहणमवग्रहः । तस्सेवऽत्थस्स विचारणविसेसण्णेसणमीहा । तस्स विसेसणविसिट्ठस्सऽत्थस्स अवसाताऽवायः, तव्विसेसावगतमित्यर्थः । तव्विसेसावगतस्सऽत्थस्स धरण—अविच्चुती धारणा इत्यर्थ ॥ तत्थ—

४८. से किं त उग्गहे ? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अत्थोग्गहे य वंजणोग्गहे य ।

४८. ओग्गहो दुविहो—अत्थोग्गहो वंजणओग्गहो य ॥ एत्थ वंजणोग्गहस्स पच्छाणुपुव्विता 'अत्थोग्गहातो वा पुव्वं वंजणोग्गहो भवइ' त्ति वंजणोग्गहमेव पुव्वं भणामि—

१ विवक्कपरि' ५ स खं ल मु ॥ २ थिरसेस सु मो मु ॥ ३ वयरी मो ॥ ४ गाहाचुक्कीए ल सु ॥ ५ रूवादिमसेसविसेसमिर आ दा । श्रीमलयगिरिपादैस्तु आवश्यकवृत्तौ नन्दिवृत्तौ चास्य चूर्णिपाठ एवम् उद्धृतोऽस्ति—तथाह चूर्णिकृत्—"सामण्णस्स रूवादिविसेसणरहियस्स अणिद्देसस्स अवग्गहणमवग्गह इति । [आव० टीका पत्र १ –१ नन्दिवृत्ति पत्र १६८–१] ॥ ६ यविसेसेवेहणमीहा आ दा ॥ ७ एस अवसातो आ दा ॥ ८ गम इत्यर्थः । तव्विसेसावगमस्स धरणं आ दा ॥

४९. से किं तं वंजणोग्गहे? वंजणोग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोतिंदियवंजणोग्गहे १ घाणेंदियवंजणोग्गहे २ जिब्भिंदियवंजणोग्गहे ३ फासेंदियवंजणोग्गहे ४। से त्तं वंजणोग्गहे।

४९. वंजणाणं अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण सद्दाइपरिणता दव्वा घेत्तव्वा। वंजणे अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण दव्विंदियं घेत्तव्वं। एतेसिं दोण्ह वि समासाणं इमो अत्थो—जेण करणभूतेण अत्थो वंजिज्जइ तं वंजणं, जहा पदीवेण घडो। एवं सद्दादिपरिणतेहिं दव्वेहि उवकरणिंदियपत्तेहिं चित्तेहिं संबद्धेहिं संपसत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जइ त्ति तम्हा ते दव्वा वंजणावग्गहो भण्णति। एस वंजणावग्गहो सुत्तसिद्धो चतुव्विहो॥

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहे? अत्थोग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियअत्थोग्गहे १ चक्खिंदियअत्थोग्गहे[1] २ घाणिंदियअत्थोग्गहे ३ जिब्भिंदियअत्थोग्गहे ४ फासिंदियअत्थोग्गहे ५ णोइंदियअत्थोग्गहे ६। [२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया[2] भवंति, तं जहा—ओगिण्हणया[3] १ उवधारणया[4] २ सवणता ३ अवलंबणता ४ मेहा ५। से त्तं उग्गहे।

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहेत्यादि सूत्रम्। अत्थस्स ओग्गहो अत्थोग्गहो। सो य वंजणावग्गहातो चरिमसमयाणंतरं एक्कसमयं अविसिट्ठिंदियविसयं[5] गेण्हतो अत्थावग्गहो भवति। चक्खिंदियस्स मणसो य वंजणाभावे पढमं चेव जं अविसिट्ठमत्थग्गहणं कालयो एगसमयं सो अत्थोग्गहो भाणितव्वो। सव्वो वेस विभागेण छव्विहो दंसिज्जति, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सद्दादिविसेसबुद्धी[6] अत्थि। णोइंदियो त्ति—मणो। सो य दव्वमणो भावमणो य। तत्थ मणपज्जत्तिणामकम्मुदयातो जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं मणजोग्ग(?ग)परिणामिता दव्वा दव्वमणो भण्णति। जीवो पुण मणणपरिणामक्रियावण्णो भावमणो। एस उभयरूवो मणदव्वालंबणो जीवस्स नाणवावारो भावमणो भण्णति। तस्स जो उवकरणिंदियदुवारनिरवेक्खो घडाइअत्थसरूवचिंतणपरो बोधो उप्पज्जति सो णोइंदियत्थावग्गहो भवति।

[२] घोस त्ति—उदत्तादिया सरविसेसा [जे० २०१ प्र०] घोसा भण्णंति। वंजणं ति—अभिलावक्खरा। ते इमे एगट्ठिया पंच—ओगिण्हणता इत्यादि। एते ओग्गहसामण्णतो पंच वि णियमा एगट्ठिता। उग्गहविभागे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवंति। सो य उग्गहो तिविहो—वंजणोग्गहो[7] सामण्णत्थावग्गहो विसेससामण्णत्थावग्गहो य। एगट्ठियाण इमो भिण्णत्थो—वंजणोग्गहस्स पढमसमयपविट्ठपोग्गलाण गहणता ओगिण्हणता भण्णति[8], 'उ—प्पावल्ले' त्ति कातुं १। बितियादिसमयादिसु जाव वंजणोग्गहो ताव उवधारणता भण्णति २। एगसामइगसामण्णत्थावग्गहकाले सवणता भण्णति ३। विसेससामण्णत्थावग्गहकाले अवलंबणता

१ चक्खुदिं° ख० सं० ॥ २ °घेज्जा मो० मु० ॥ ३ ओगेण्ह° मो० मु० ॥ ४ अवधा° जे० ॥ ५ अवि सव्विंदिय° आ० । अविसिट्ठसव्विंदिय° दा० ॥ ६ °बुद्धिमत्थि जे० ॥ ७ विसेसावग्गहो सामण्ण° आ० दा० । हारि० वृत्तौ "त्रिविधश्चावग्रह —सामान्यावग्रह विशेषावग्रह विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च" इति आ० दा० प्रतिगतचूर्णिपाठभेदानुसारि भेदनामत्रय दृश्यते । किञ्च जेसलमेरुदुर्गस्थप्राचीनतमे ताडपत्रीयादर्शे विसेसावग्गहो इति स्थाने वंजणोग्गहो इति पाठो वर्त्तते । मलयगिरिपादैरपि नन्दिवृत्तौ व्यञ्जनावग्रह इति जे० प्रत्यनुसारि नाम निष्टङ्कितमस्ति । तथाहि—"इहावग्रहस्त्रिधा, तद्यथा—व्यञ्जनावग्रह सामान्यार्थावग्रह विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च ।" पत्र १७४–२ ॥ ८ भण्णति, आपल्ले आ० दा० ॥

मण्णति ४। उत्तरुत्तरविसेससामण्णत्थावग्गहेसु जाव मेरया ताव सव्व मधा मण्णइ ५। जस्स मवणावग्गहो नत्थि तस्स सवणादिया तिण्णि एगट्ठिता भवति। आह—णणु भिण्णत्थेदसणे एगट्ठित त्ति विरुद्धं? उच्यते, ण विरुद्धं, जतो सव्वविकप्पेसु उग्गहस्सेव सरूवं दरिसिज्जति॥ इदाणिं उग्गहसमणंतरं ईहा—

५१ [१] से किं तं ईहा? ईहा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सोतेंदियईहा १ चक्खिंदियईहा २ घाणेंदियईहा ३ जिब्भिंदियईहा ४ फासेंदियईहा ५ णोइंदियईहा ६।

[२] तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—आभोगणया १ मग्गणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ वीमंसा ५। से त्तं ईहा।

५१ [१] सा छव्विहा सुपसिद्धा।

[२] इमे तस्सेगट्ठिया, ते वि ईहासामण्णतो एगट्ठिता चेव, अत्थविकप्पणातो पुण भिण्णत्था। इमेण विधिणा—आभोयणता इत्यादि। आग्गहसमयाणंतरं सब्भूतविसेसत्थाभिमुहमालोयणं आभोयणता भण्णति १। तस्सेव विसेसत्थस्स अण्णय-वइरेगधम्मसमालोयणं मग्गणा भण्णति २। तस्सेवऽत्थस्स वइरेगधम्म परिचाओ अण्णयधम्मसमालोयणं च गवेसणता भण्णति ३। तस्सेव तद्धम्माणुगतत्थस्स पुणो पुणो समालोयणतेण चिंता भण्णति ४। तमेवत्थं णिच्चा ऽणिच्चादिएहिं दव्व-भावेहिं विमरिसतो वीमंसा भण्णति ५। एवं बहुधा अत्थमालोयंतस्स उक्कोसतो अंतमुहुत्तकालं सच्चा ईहा भवति॥ ईहाणंतरं अवातो—

५२ [१] से किं तं अवाए? अवाए छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियावाए १ चक्खिंदियावाए २ घाणेंदियावाए ३ जिब्भिंदियावाए ४ फासेंदियावाए ५ णोइंदियावाए।

[२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—आउट्टणया १ पच्चाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णाणे ५। से त्तं अवाए।

५२ [१] सा छव्विहा सुपसिद्धा।

[२] तस्सेगट्ठिता इमे पंच, ते य अवायसामण्णतणता णियमा एगट्ठिता चेव, अभिधाणभिण्णत्तणतो पुण भिण्णत्था। [प्र० २०१ द्वि०] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि। ईहणभावनियत्तस्स अत्थसरूवपडिबोध बुद्धस्स य परिच्छेत्तुमुप्पादंतस्स आउट्टणता भण्णति १। ईहणभावणियट्टस्स वि तमत्थमालोयंतस्स पुणो पुणो णियट्टण पच्चाउट्टणा भण्णति २। सव्वहा ईहाए अवगयत्थं कार्तुं अवधारणावधारितत्थस्स अवधारयतो अवातो त्ति भण्णइ ३। पुणो पुणो तमत्थावधारणावधारितं बुज्झतो बुद्धी भवइ ४। तम्मि चेवावधारितमत्थे विसेस पेक्खतो अवधारयता य विण्णाणं त्ति भण्णति ५॥ अवायाणंतरं धारणा—

१ त्यत्ताभा पत्तं आ॰ ॥ २ विधिणा खं॰ ॥ ३ चक्खुंदिं° स॰ ॥ ४ °धेज्जा मो॰ मु॰ ॥ ५ दव्वं-भावेहिं डे॰। विमर्शनं विमर्शः, यथोत्पत्तिविशेषादिरोधो तदनन्तरमपोहा सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्माध्यासनरूपो विमर्शः, नित्या-ऽनित्यादिद्रव्य-भावालोचनमित्यर्थः।" इति हारि॰ वृत्तौ। "तत एवं यथोक्तप्रकारविशेषात् तदनन्तरं सद्भूतार्थविशेषाभिमुखमेव व्यतिरेकधर्मपरित्यागतोऽन्वयधर्माध्यासनरूपो विमर्शः" इति मलयगिरिवृत्तौ ॥ ६ चक्खुवाए डे॰ ॥ ७ चक्खुंदिय° ॥ ८ ९-१०-११-१२ °यावाए डे॰ ॥ १३ °धिज्जा मो॰ मु॰ ॥ १४ आवट्टणया पच्चावट्टणया ल॰ ॥ हारि॰ अवच॰ इत्येव। आउंटणया पच्चाउंटणया खं॰ ॥ १५ विण्णाणं ल॰ ॥

५३. [१] से किं तं धारणा ? धारणा छव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियधारणा १ चक्खिंदियधारणा २ घाणिंदियधारणा ३ जिब्भिंदियधारणा ४ फासिंदियधारणा ५ णोइंदियधारणा ६ । [२] तीसे णं इमे एगट्ठिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवंति, तं जहा—धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिट्ठा ४ कोट्ठे ५ । से त्तं धारणा ।

५३. [१] सा य छव्विहा सुत्तसिद्धा ।

[२] तस्सेगट्ठिता पंच । ते य सामण्णधारणं पडुच्च णियमा एगट्ठिया, धारणत्थविकप्पणताए भिण्णत्था । इमेण विधिणा—धरणा इत्यादि । अवायाणंतरं तमत्थं अविच्चुतीए जहण्णुक्कोसेणं अंतमुहुत्तं धरेंतस्स धरणा भण्णति १ । तमेव अत्थं अणुवयोगत्तणतो विच्चुतं जहण्णेणं अंतमुहुत्तातो परतो दिवसादिकालविभागेसु संभरतो य धारणा भण्णति २ । 'ठवण' त्ति ठावणा, सा य अवायावधारियमत्थं पुव्वावरमालोइयं हियतम्मि ठावयंतस्स ठवणा भण्णति, पूर्णघटस्थापनावत् ३ । 'पतिट्ठ' त्ति सो च्चित अवधारितत्थो हितयम्मि पभेदेन पइट्ठातमाणो पतिट्ठा भण्णति, जले उपलप्रक्षेपप्रतिष्ठावत् ४ । 'कोट्ठे' त्ति जहा कोट्ठगे सालिमादिवीया पक्खित्ता अविणट्ठा धारिज्जंति तहा अवातावधारितमत्थं गुरूवदिट्ठं सुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारयतो धारणा कोट्ठगसम त्ति कातुं कोट्ठे त्ति वत्तव्वा ५ ॥

५४. इच्चेतस्स अट्ठावीसतिविहस्स आभिणिबोहियणाणस्स वंजणोग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पडिबोहगदिट्ठंतेण मल्लगदिट्ठंतेण य ।

५४. इच्चेतस्सेत्यादि सुत्तं । 'इति' उपप्रदर्शने । 'एतस्स' त्ति जं अतिक्कंतं अट्ठावीसतिभेदं । ते य के अट्ठावीसं भेदा ? उच्यते—चउव्विहो वंजणावग्गहो, छव्विहो अत्थावग्गहो, छव्विहा ईहा, छव्विहो अवायो, छव्विधा धारणा, एते सव्वे अट्ठावीसं । एत्थ अट्ठावीसइविहस्स मज्झातो जो वंजणावग्गहो चउव्विहो तस्स दिट्ठंतदुगेण परूवणा ॥

५५. से किं तं पडिबोहगदिट्ठंतेणं ? पडिबोहगदिट्ठंतेणं से जहाणामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पडिबोहेज्जा 'अमुगा ! अमुग !' त्ति, तत्थ य चोयगे पन्नवगं एवं वयासी—किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? जाव दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? । एवं वदंतं चोयगं पण्णवगे एवं वयासी—णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमा-

१ °धिज्जा मो० मु० ॥ २ त्रिपञ्चाशत्तमसूत्रानन्तरं श्रीहरिभद्र-श्रीमलयगिरिभ्यां व्याख्याते सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु एकं सूत्रमधिकं वर्त्तते । तच्चेदम्—उग्गहे एक्कसामइए, अतोमुहुत्तिया ईहा, अतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । एवं अट्ठा° सं० डे० मो० शु० । उग्गहे एक्क समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं ति, धारणा संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । एवं अट्ठा° ल० । उग्गह एक्कं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमेत्तं तु । कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ १ ॥ एवं अट्ठा° खं० ॥ ३ एवं अट्ठा° सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृत्त्योश्च ॥ ४ एयस्स अट्ठा° आ० दा० ॥ ५ से ण जहा मो० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ एवं इति खं० सं० नास्ति ॥ ८ चोदगं सं० ॥ ९ वदासी खं० ॥

गच्छंति, जाव णो दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, असखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति । से त्तं पडिबोहगदिट्ठतेणं ।

५५. से जहाणामयेत्यादि । 'से' त्ति पडिबोधकस्स णिद्देसे । 'जहाणामये' त्ति जहाणा [जे० २०२ प्र०]म, सम्यक्तः भास्माभिभायकतादित्यर्थः । सम्यक्णुप्पमीपमत्थं तदणुसारि सुत्तं वा अप्पबुद्धिविण्णाय वणयो अपवक्तव्वमाणो सीसो पुच्छासामण्णातो चोदको, अहवा तमत्थ सुत्तमत्थं वा 'अघटमाणं' ति मण्णमाणो सदोसचोदयो य वादगो भण्णति । पवयणमविरुद्धं निद्दोसं सुत्तत्थ पण्णवेंतो पण्णवगा, विरुद्ध-पुणरुत्तसुत्त वा अत्थतो अविरुद्ध दरिसेंतो पण्णवति जो सो वा पण्णवको भण्णति, ययावत् सत्यपरूपकीत्यर्थः । वादको ससयमावण्णो पण्णवगं पुच्छति—'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि कंठं । एवं चोदक पुच्छाभिप्पायेण सव्वं पण्णवगाऽऽह—'णो एगसमयपविट्ठा' इत्यादि । णो एस पडिसद्दो कतो एस सराइकडविण्णाणजणगत्तेणं ति णो गहणमागच्छंति, इतरा पोग्गला गहणमागच्छंतस्येत्यर्थः । एवं एगादिसमयपविट्ठपोग्गलपडिसिद्धेसु इमा अणुण्णा—'असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति' त्ति । इमस्स अणणुयोगत्थो अणुयोगत्थो य । तस्स अणणुयोगो इमो—जहा पवासी सगिहमेंतो अद्धाणे पचारेण इसारेण वा वीतीवतित्ता सगिहं पविट्ठो त्ति, एवं असंखेज्जेहिं समएहिं आगता पविट्ठा कण्णविलेसु पोग्गला गेण्हति त्ति, एस अणणुयोगो भवति । इमो अणुयोगत्थो—पढमसमयादारब्भ पतिसमयं पविसमाणेसु असंखेज्जइमे समए जे पविट्ठा ते गहणमागच्छंति, ते य सदादिविण्णाणजणग त्ति काउं, अतो तेसिं गहणमुवदिट्ठं । सो य असंखेज्जइसमया किंपमाणे असंखेज्जए भवति ? उच्यते—जहण्णेण आवलियाए असंखेज्जइभागमेत्तेसु समयेसु गतेसु त्ति, उक्कोसेण [जे० २०२ द्वि०] संखेज्जासु आवलियासु आणापाणुकालपुहत्ते वा, उभयथा वि अविरुद्धं ॥ गतो पडिबोधकदिट्ठंतो । इदाणिं मल्लगदिट्ठंतो—

५६ [१] से किं त मल्लगदिट्ठतेण ? मल्लगदिट्ठतेणं से जहाणामए केई पुरिसे आवागसीसाओ मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खिवेज्जा से णट्ठे, अण्णे पक्खित्ते से वि णट्ठे, एवं पक्खिप्पमाणेसु पक्खिप्पमाणेसु होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं रावेहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि ठाहिति, होही से उदगबिंदू जे णं तं मल्लगं भरेहिति, होही से उदगबिंदू जे ण त मल्लगं पवाहेहिति, एवामेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्गलेहिं जाहे तं वजणं पूरित होति ताहे 'हुं' ति करेति णो चेव

१ गहणमागच्छंति' जे० ॥ २ आवाणदिट्ठंतो इति मलयगिरिसम्मतः पाठः ॥ ३ 'तेणं जहा का दिट्ठंतो ? से जहा' सं० ॥ ४ केयि डु० ॥ ५ अण्णे वि य गं० विना ॥ ६ मार्णे पक्खिप्पमाणे होही जे० ॥ ७-९ ११ होहिति सं० डु० । होहिइ ल० ॥ ८ रावेहिइ सं० ल० डु० ॥ ९ रवेहिइ जे० ॥ १० मल्लगे ल० सं० ॥ १२-१४ जो णं ल० गं० । सम्पूर्णं होहिती ॥ १३ भरेहिति इत्यनन्तरं हरिभद्रवृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ च पत्रे टीकायां होही से उदगबिंदू जे णं तंसि मल्लगंसि न ठाहिहिति इत्यधिकः पाठः आदर्शेषु ॥ १५ एवमेव गं० । एवमेव डु० ॥ १६ 'मेव पक्खिप्पमाणेहिं अणंतेहिं पोग्ग' ल० विशेषावश्यकटीका १७८ पत्रे टीकायां च । 'मेव पक्खिप्पमाणेहिं पोग्ग' गं० । 'मेव पक्खिप्पमाणेहिं पक्खिप्पमाणेहिं पोग्ग' जे० ॥ १७ 'हुं' ति ल० ॥ १८ ण चेव ल० गं० ॥

णं जाणति [1]के वेसं सद्दाइ ?, तओ ईहं पविसति तओ जाणइ अमुगे एस [2]सद्दाइ ?, [3]तओ अवायं [4]पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ णं धारणं पविसइ तओ णं धारेइ [5]संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[२] से जहाणामए [6]केइ पुरिसे अव्वत्तं सद्दं [7]सुणेज्जा तेणं [8]सद्दे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ के वेस [9]सद्दे त्ति, तओ ईहं अणुपविसइ ततो जाणति अमुगे एस सद्दे, ततो णं अवायं [10]पविसइ ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं [11]पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । →[12]एवं अव्वत्तं रूवं, अव्वत्तं गंधं, अव्वत्तं रसं, अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा← ।

[३] से जहाणामए [13]केइ पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं [14]पडिसंवेदेज्जा, तेणं [15]सुमिणे त्ति उग्गहिए[16] ण पुण जाणति के[17] वेस सुमिणे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणति अमुगे एस सुमिणे त्ति, ततो अवायं [18]पविसइ ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं [19]पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । से त्तं मल्लगदिट्ठंतेणं ।

---

१ के वि एस मो० मु० ॥ २ सद्दे त्ति ख० । सद्द त्ति स० ॥ ३ तओ उवयाणं गच्छति, तओ से उवग्गहो हवइ ख० ॥ ४ गच्छति खं० स० शु० ल० ॥ ५ संखेज्जकाल असंखेज्जकाल ल० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ सुणेइ तेण डे० ल० ॥ ८ सद्द त्ति स० शु० । सद्दो त्ति जे० डे० ल० मो० ॥ ९ सद्दाइ, तओ ईहं पविसइ सर्वासु सूत्रप्रतिषु हारि० मलय० वृत्त्योश्च ॥ १० गच्छति ख० स० शु० ल० ॥ ११ पडिवज्जेति खं० स० ॥

१२ → ←एतच्चिह्नमध्यवर्तिसूत्रस्थाने जे० मो० मु० प्रतिषु रूप-गन्ध-रस-स्पर्शविषयाणि चत्वारि सूत्राण्युपलभ्यन्ते । तानि चेमानि—

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रूवे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रूवे त्ति, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्घाइज्जा, तेणं गंधे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेइज्जा, तेणं फासे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसेइ तओ णं धारेइ संखिज्जं वा कालं असंखिज्जं वा कालं ॥

१३ केयि शु० ॥ १४ पासिज्जा मो० ल० शु० ॥ १५ सुमिणो त्ति डे० ल० । सुविणो त्ति मलयगिरिटीकायाम् ॥ १६ °ए नो चेव ण जा° मो० मु० ॥ १७ के वि सु° डे० ल० ॥ १८ गच्छति ख० स० शु० ल० ॥ १९ पडिवज्जति ख० स० ॥

५९ [१] तत्थ आवागसीसगं ति [आ]वागट्ठाणमेव, अहवा आवागट्ठाणस्स आसण्णं समंता परिपेरंतं, अहवा आवागमुवारियाण य ठाणं तं आवागसीसयं भण्णति। 'अणंतेहिं' ति प्रथमसमयादारभ्य प्रतिसमयं अणंता प्रविशन्तीत्यता अणंता। 'जाहे तं वंजणं पूरितं भवति' त्ति, एत्थ वंजणग्गहणेण सद्दाइपुग्गलदव्वा दव्विंदियं वा उभयसंबंधो वा घेत्तव्वं, तिधा वि ण विरोधो। वंजणं पूरियं ति कहं? उच्यते—जदा पुग्गलदव्वा वंजणं तदा पूरियं ति पभूता ते पोग्गलदव्वा जाता, स्व पमाणमागता सविसयपडिबोधसमत्था जाता इत्यर्थः १। जदा पुण दव्विंदियं वंजणं तदा पूरियं ति कहं? उच्यते—जाहे तेहिं पोग्गलेहिं तं दव्विंदियं आपूरितं भरितं वासितं तदा पूरियं ति भण्णति २। जदा तु उभयसंबंधो वंजणं तदा पूरियं ति कहं? उच्यते—दव्विंदियस्स पुग्गला अंगीभावमागता, पुग्गला य दव्विंदिए अनुषक्ताः, एस उभयभावो, एतम्मि उभयभावे पुग्गलेहिं इंदियं पूरितं, इंदिएण वि सविसयपडिबोधकप्पमाणा पुग्गला गहिता, एवं उभयसामत्थतो विण्णाणभावो भवतीत्यर्थः ३। 'हुं ति करेइ' त्ति वंजणे पूरिते तं अत्थं गेण्हइ त्ति वुत्तं भवति। एस एक्कसमयिओ अत्थावग्गहो। तं पुण किंपगारं गेण्हति? उच्यते—'णो चेव णं जाणति के वि एस सद्दादी' त्ति तक्काले सामण्णमणिद्देसं, सद्दादिविसेसं ण जाणइ त्ति वुत्तं भवति। किंच—सरूव-णाम-जाति-गुण-किरिया-विकप्पविमुहं अनाख्येयं गृह्णातीत्यर्थः। एत्थ पडिबोधकालातो [पे० २०१ प्र०] पुव्वं वंजणोग्गहो से भवति। एसा एव वंजणोग्गहस्स परूवणा कता। वंजणोग्गहस्स परतो 'हुं ति करेति' त्ति एतम्मि पडिबोधकाले एगसमइयो अत्थावग्गहो से भवति, ततो से कमेण ईहा-ऽवाय-धारणाओ त्ति। एत्थ पडिबोह-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजणोग्गहस्स अत्थोग्गहस्स य भिण्णकालत्ता फुडं दंसिता। पर आह—साधु मे पडिबोध-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजण-ऽत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, जागरओ पुण सद्दाइअत्थे पडुप्पण्णे ण वंजणोग्गहो लक्खिज्जति, जतो पुव्वामेव सद्दाइअत्थविण्णाणमुप्पज्जते, भणितं च सुत्ते 'से जहाणामए केयि पुरिसे' त्यादि। अहवा इमस्स सुत्तस्स इमो संबंधो—पर आह—यदुक्तं भवता सरूव-णाम-जाति-गुण-क्रियाविकल्पविमुखं अनाख्येयं गृह्णातीत्येतद् विरुध्यते, कुतः? यतः सूत्रेऽभिहितं—से जहाणामएत्यादि। अहवा इमो संबंधो—प्रसुप्तप्रतिबोधक-मल्लगदिट्ठंतेहिं वंजण-ऽत्थावग्गहाण भेदो दंसितो, इह पुण सुत्ते मल्लगदिट्ठंतेणेव वंजण-ऽत्थावग्गहाण भेदो दंसिज्जति—

[२] 'से जहाणामए' त्यादि। सुपुत्तास्यसमवबोधानंतरमेव पर आह—एत्थ सुत्ते वंजण-ऽत्थावग्गहा ण लक्खिज्जंति, जतो 'अव्वत्तं सद्दं सुणेइ' त्ति भणितं, सद्दमेवेऽवधारिते पढमतो अवाय एव लक्खिज्जति त्ति। आयरिय आह—ण तुमं सुत्ताभिप्पायं जाणसि, णणु अव्वत्तसद्दसवणातो अत्थावग्गहग्गहणं कतं, जतो अव्वत्तमणिद्देसं सामण्णं विकप्परहियं ति भण्णति, तस्स य पुव्वं वंजणावग्गहेण भवितव्वं, जेसा एतम्मारिणा सोतादिइंदियस्स अत्थग्गहो वंजणोग्गहपुरंगमो भवति त्ति णियमेसो, सो य कालसुहुमत्ततो उप्पलसतपत्तच्छेददिट्ठंततो ण लक्खिज्जति। चोदक आह—जति एवं तो जं सुत्ते भणितं "तेण सद्दे त्ति उग्गहिते" तं कहं? उच्यते—इहइं "तेणं सद्दे त्ति ओग्गहिते" त्ति यदुक्तं सूत्रकारोऽभिधत्ते इति करणनिरपेक्षता सव्वविसेसविमुहं अव्वत्तमात्रमुक्तं [पे० २०१ द्वि०] भवति, णो चेव णं जाणति के वेस सद्दे? त्ति, न तु शब्दोऽयमित्येवं बुध्यते, कम्हा? उच्यते—एक्कसमयत्तातो अत्थावग्गहस्स, किंच पण्णवेंतो य पण्णवगो संववहाराभिप्पायतो "तेणं सद्दे त्ति ओग्गहिते" त्ति सूते, ण दोसो। जति वा "सद्दोऽयं" मिति बुद्धी भवे तो अवायतो चेव भवे, तं च ण, कहं? उच्यते—जो जतो अत्थावग्गहसमयमेत्ते काले "सद्द" इति

१ पुण तदागर्दविदियं मध्य॰-अभिरुती चूर्णिपाठभेदाः ॥ २ आपूरुण्णं भरितं वा । "वासितं" इति हारि॰ वृत्तौ ॥ ३ अभिषक्ताः इत्यर्थः तदा पूरियं ति भण्णइ इति मध्य॰-अभिरुती चूर्णिपाठभेदाः ॥ ४ पदाई वा ॥ ५ जाति-किरिया वे ॥ ६ जतो पतम्मारिणो वे वा ॥

विसेसणाणमत्थि, अह तम्मि वि समए सद्दोऽयमिति बुद्धी हवेज्ज तो फुडं अवाय एव भवेज्ज, णो य तक्काले अवातो इच्छिज्जति, जतो अत्थपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवइ त्ति । अण्णे पुण आयरिया एतं सुत्तं → विसेसत्थावग्गहे भणंति–'अव्वत्तं सद्दं सुणेज्ज' त्ति एस← विसेसत्थावग्गहो, 'तेण सद्दे ति उग्गहिते' ति, एतं सुत्तखंडं सामण्णसद्दत्थावग्गहदंसगं, कहं ? उच्यते–जतो भण्णति "णो चेव णं जाणति के वि एस सद्दे" त्ति संख-संग-णाँलि-करयलादिको त्ति, एसो वि अविरुद्धो सुत्तत्थो । 'ततो' अत्थावग्गहसमयाणंतरं पढमसमयादिसु 'ईहं अणुपविसति' 'ईहं' ति केइ संसयं मण्णंते, तं ण भवति, संसयस्स अण्णाणभावत्तणतो, मतिणाणंसो य ईह त्ति । आह–को पुण संसयेहाण विसेसो ? उच्यते–इह जं थाणु-पुरिसादिअत्थेसु पेहितं चित्तं तदत्थपडिवोहत्तेण पडिहतं सुत्त इव चेतो संसयो भण्णाति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतूववत्ति-साधणेहिं सब्भूतमत्थस्स विसेसधम्माभिमुहालोयणं तस्सेवऽत्थस्स अधम्मविमुहं असम्मोहमविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णाति । अणु त्ति–अवग्गहातो पच्छाभावे असंखेज्जसमइयं परिमाणतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिट्ठमतिनाणखयोवसमभावत्तणतो अंतमुहुत्तकालब्भंतर एव जाणति 'अमुते एस सद्दे' संख-संगादिए त्ति । दुरवबोधत्तणतो पुण अत्थस्स अविसिट्ठमइण्णाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगअंतमुहुत्तचुतो अणवगतत्थो पुणो वि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहति, [जे० २०४ प्र०] [एवं] ईहोवयोगाविच्छेदसंताणतो वहुए वि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो । ततो ईहाणंतरं अवातो । सो य सद्दाइअत्थपडुप्पण्णस्स जे परधम्मा तेसु विमुहस्स सधम्मे य अवधारयतो 'ण एस संगसद्दो, णिद्ध-मधुर-गंभीरत्तणतो संखसद्दोऽय'मित्येवमवगतत्थो [जहण्णतो] असंखेज्जसमयितो उक्कोसतो णियमा एगंतमुहुत्तिओ जो अववोधो अत्थपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवायाणंतरं धारणं पविसइ त्ति । सा य धारणा जहण्णतो असंखेज्जसमते अविच्चुतीए तमत्थं धरेति, उक्कोसतो अतमुहुत्तं, अणुवयोगतो पुण तमत्थं विस्मृतं पुणो वि संभरइ त्ति धारणा । एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्त-दिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं भवेज्ज, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं ।

एवं चक्खिंदिए वि रूवं भाणितव्वं, वंजणोग्गहवज्जं । घाण-रस-फासिंदिएसु वि जहा सोइंदिते तहा सव्वं भाणितव्वं । 'संवेदेज्ज' त्ति एते सद्दादिइंदियत्थे पडुप्पण्णे इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आयखयोवसममणुरूवं सुभमसुभं वा वेदेज्जं त्ति । अहवा फरिसिंदियवज्जं सेसिंदिएहिं पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इट्ठमणिट्ठं वा स्वं आत्मानुगतं वेदनं वेदते, न शरीरेण अनुपलक्षं वा वेदयतीत्यर्थः । फासिंदियमत्थं पुण स्वं अनुगतं शरीरानुगतं च दुहा वि फुडं वेदइ त्ति संवेदेज्ज त्ति अतो भणितं ।

एवं मणसो वि सुविणे सद्दादिविसएसु अवग्गहादयो णेया, अण्णत्थ वा इंदियवावारअभावे मणेमाणस्स त्ति । इह सुत्तेण निदरिसणं मणे—

[३] से जहाणामतेत्यादि सुत्तं । कंठं । सुविणो मे दिट्ठो त्ति सुविणादिट्ठं अव्वत्तं सुमरइ । तच्च मतिवोधप्रथमसमये सुविणमिति संभरतो अत्थावग्गहो, तस्य प्रथमावस्थायां व्यञ्जनावग्रहः, परतो ईहादि । सेसं पूर्ववत् । जग्गतो अणिंदियत्थवावारे वि मणसो जुज्जते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखेज्जसमयत्तणयो, [जे० २०४ द्वि०] उवयोगद्धाए य मतिसमयमणोदव्वग्गहणतो, मणोदव्वाणं च वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जतिमे मनसो नियमा-

१ →← एतच्चिह्नान्तर्वर्त्ती पाठः जे० नास्ति ॥ २ °ण्णस्सऽत्था° आ० दा० ॥ ३ °णादिकर° आ० दा० ॥ ४ °सुपविट्ठं चित्त आ० ॥ ५ वेदेज्ज त्ति। पते सद्दाई चक्खुइंदियवज्जं सेसिंदिएहिं आ० दा० ॥ ६ °नुपलभ वा आ० दा० ॥ ७ तस्य पूर्वमवस्था° जे० दा० ॥

र्थग्रहणं भवेत् । तस्य च प्रथमसमयार्थप्रतिबोधकालेऽर्थावग्रहः, तस्य पूर्वमसङ्ख्येयसमयेषु व्यञ्जनावग्रहः । शेषमीहादि पूर्ववत् । सीसो पुच्छति–उग्गहादीणं उ कमातिक्कमे एगतरअभावे वा किं सद्दादिवत्थुपरिच्छेदो ण भवति ? आचार्याह–आमं, ण भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अणीहितं ईहति तम्हा पुव्वं उग्गहो, जम्हा य अणीहितं णो अवगच्छति ईहाणंतरं तम्हा अवायो, जम्हा य अणावाते ण धारिज्जति वत्थुं अवायाणंतरं तम्हा धारणा । जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सव्वो आभिणिबोधियनाणावगमो नियमा एव भवति, अत एव च कारणा सव्वे अवग्गहादयो मतिनाणभेदा भवंतीत्यर्थः ॥

५७ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा–दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ दव्वओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वदव्वाइं जाणति ण पासति १ । खेत्तओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं खेत्तं जाणइ ण पासइ २ । कालओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वं कालं जाणइ न पासइ ३ । भावओ णं आभिणिबोहियणाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ ण पासइ ४ ।

५७ तं समासतो चउव्विहेत्यादि सुत्तं । 'तं च' मतिनाणं खयोवसमभावतो एगविहं पि होतुं णेयभेदवसतो नाणाभेदा दव्वादिया से भवति । 'दव्वतो णं' ति दव्वतो वत्तव्वे 'णं' ति वयणालङ्कारे, देसीवयणतो वा 'णं' अहवा, अपादानान्ते पञ्चमी विभक्तिः, तत्थ पायसवयणसेलीता दव्वतो णं एवं आभिणिबोधियनाणी समति–'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम–प्रकारो । सो य सामण्णतो विसेसतो य । तत्थ दव्वजातिसामण्णादेसेणं सव्वदव्वाणि धम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विसेसतो वि जहा धम्मत्थिकाये धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसेत्यादि केयी जाणति, सव्वे ण याणति, जहा सुहुमपरिणता अविसयत्ता अणन्तपदेसादिया य । 'ण पस्सइ' त्ति सव्वे सामण्ण विसेसादेसट्ठिते धम्मादिए, चक्खु-अचक्खुदंसणेण रूव-सद्दादते केयि पासति त्ति वत्तव्वं । अहवाऽऽदेसो–सुतं, तस्सादेसतो सव्वदव्वे जाणतीत्यादि । चोदक आह–जति सुतं कहं मतिनाणं ? ति, उच्यते–सुतोवलद्धम अत्थं अणुसरतो तब्भावणबुद्धिसामत्थतो [वे २ ९ प्र०] सुतोवयोगाणिरवेक्खा वि मती पवत्तइ त्ति य सुतादेसो विरुज्झते १ । खेत्तं पि सामण्ण-विसेसादेसतो । तत्थ सामण्णतो लोयमलोगासं, त चेग सव्वग-

१ दव्वओ चं । दव्वतो ख ॥ २ तत्थ इति पदं ख सं डे ल नास्ति, जे शु मो मु [illegible] २१ पत्रे पुस्तके ८ ३-४-५ ३ अत्र द्रव्य-क्षेत्र-काल भावविषयकेषु चतुर्ष्वपि सूत्रांशेषु जाणति पासति इति पाठो जाणति ण पासति इति पाठभेदेन अत्र भगवत्यां अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके ३५५ १ पत्रे वर्तते । अभयदेवसूरिटीका–"दव्वओ णं" ति द्रव्याश्रित्य आभिनिबोधिकविषयद्रव्यं वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञानं तत्र 'आएसेणं' ति आदेश–प्रकारः सामान्य-विशेषरूपः तत्र च 'आदेसेन' ओघतो द्रव्यमात्रतया, न तु तद्गतसर्वविशेषापेक्षयेति भावः, अथवा 'आदेसेन' श्रुतपरिकर्मितया 'सर्वद्रव्याणि' धर्मास्तिकायादीनि 'जानाति' अवाय-धारणापेक्षयाऽवबुध्यते ज्ञानस्यावाय-धारणारूपत्वात्, 'पासइ' त्ति पश्यति अवग्रहेहापेक्षयाऽवबुध्यते अवग्रहेहयोर्दर्शनत्वात् । ... ... 'खेत्तओ' त्ति क्षेत्रमाश्रित्य आभिनिबोधिकज्ञानविषयं क्षेत्रं वाऽऽश्रित्य यद् आभिनिबोधिकज्ञानं तत्र 'आदेसेन' ति ओघतः श्रुतपरिकर्मितया वा 'सव्वं खेत्तं' ति लोका-ऽलोकरूपम् । एवं कालतो भावतश्चेति । इदं च सूत्र नन्द्यां इहैव च वाचनान्तरे 'न पासइ' त्ति पाठान्तरेणाधीतम् । एवं च नन्दिटीकाकृता [हरिभद्रसूरिणा] व्याख्यातम्–"आदेश–प्रकारः स च सामान्यतो विशेषतश्च । तत्र द्रव्यजातिसामान्यादेशेन सर्वद्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि जानाति विशेषतोऽपि यथा धर्मास्तिकायो धर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि, न पश्यति सर्वान् धर्मास्तिकायादीन्, शब्दादींस्तु योग्यदेशावस्थितान् पश्यत्यपीति ।" ३५८ पत्रे ॥ ७ अवि सत्तरया दव्वच्चायब्यादिया आ दा । [illegible] ॥ ८ खेत्ता एसविहे धम्मादिय आ दा ॥

तममुत्तं अवगाहलक्खणं सव्वं जाणति। विसेसतो वि लोगा-ऽलोगुड्ढ-ऽह-तिरियादिविसेसखेत्ते जाणति, ण जाणइ य केयी, क्षेत्रं न पश्यत्येव २। काले वि आदेसो सामण्ण-विसेसतो। तत्थ सामण्णतो इमं भण्णति, ण य दरिसणतो, णिच्चमणिच्चं वा मुत्तममुत्तं वा कलासमूहं सव्वदव्वाणि वा कलेइ त्ति कलणं वा कालो, तमेवंविहं सामण्णतो सव्वकालं जाणति। विसेसादेसो–समया-ऽऽवलिगादि उस्सप्पिणीमादि वा विसेसकाले केयि जाणति, ण जाणति केयिं, कालं ण पश्यत्येव ३। भाव इति भवनं भूतिर्वा भावः, एवं सव्वभावे भावजातिमेत्तसामण्णतो जाणति। विसेसादेसतो जीवा-जीवभावे। तत्थ णाण-कसायादिया जीवे, अजीवे वण्णपज्जवादिए अणेगहा वीसस-पयोगपरिणते, एत्थ मतिणाणविसयत्थे जे ते जाणति, सेसे ण याणति, सव्वभावे ण पासइ त्ति, मतिणाणस्स असव्वण्णेयविसयत्तणयो ॥

५८. उग्गह ईहा[1]ऽवाओ य धारणा एव होंति चत्तारि।
आभिणिबोहियणाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ ७० ॥
अत्थाणं[2] उग्गहणं तु उग्गहो, तह वियालणं ईहं।
ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ ७१ ॥
उग्गह एकं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं[3] तु।
कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ ७२ ॥
पुट्ठं सुणेति सद्दं, रूवं पुण पासती अपुट्ठं तु।
गंधं रसं च फासं च बद्ध-पुट्ठं वियागरे ॥ ७३ ॥
भासासमसेढीओ सद्दं जं सुणइ मीसयं[4] सुणइ।
वीसेढी पुण सद्दं सुणेति णियमा पराघाए ॥ ७४ ॥
ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा।
सण्णा सती मती पण्णा सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ७५ ॥
से[5] त्तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं।

---

१ ईह अवाओ स० शु० ल० मो० ॥ २ अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा। ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं बिंति ॥ मो० डे० ल० मु०। हरिभद्रपादैः मलयगिरिपादैश्चायमेव पाठभेदः निर्दिष्टो व्याख्यातश्चापि वर्त्तते ॥ ३ °त्तमतं तु हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः निर्दिष्टोऽयं पाठभेदः ॥ ४ मीसियं डे० मो० मु० ॥ ५ ख० स० शु० मो० प्रतिषु से त्तं आभिणिबोहियनाणपरोक्खं इति एकमेव निगमनवाक्यम्, जे० डे० ल० मु० प्रतिषु पुनः से त्तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं, से त्तं मतिणाणं इति निगमनवाक्यद्वयं दृश्यते। किञ्च हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः प्रथमं निगमनवाक्यं व्याख्यातमस्ति, चूर्णिकृता द्वितीयं निगमनवाक्यं व्याख्यातं वर्त्तते इति वृत्ति-चूर्णिकृतामेकतरदेव निगमनवाक्यमभिमतम्। अपि च चूर्णिकृता चूर्णौ– "से किं तं मतिणाणं ?" ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इमं परिसमत्तिदसगं णिगमणवाक्यम् —" से तं मतिणाणं ति " इत्यादि [पत्र ४४ पं० ४] यन्निगमनवाक्यव्याख्यानावसरे निष्टङ्कितमस्ति तत्रैतत् किल चिन्त्यमस्ति यत्–चूर्णावपि से किं तं आभिणिबोधिकेत्यादि सुत्तं [सुत्त ४५ पत्र ३२] इति आदिवाक्यमुपक्षिप्तं वर्त्तते तत् किमिति चूर्णौ निगमनवाक्यव्याख्यानावसरे "से किं तं मतिणाणं ?' ति एस आदीए जा पुच्छा" इत्यादि चूर्णिकृता निरदेशि ? इत्यत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥

५८. उग्गह ईहा० गाहा । अत्थाणं० गाहा । उग्गह एक्कं० गाहा । पुट्ठं सुणेइ० गाहा । भासा सम० गाहा । ईहा० गाहा । एताओ गाहाओ जहा पेढियाए [आव० नि० गा० २–६ तथा गा० १२] तहा भाणितव्वा इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

"से किं तं मतिणाणं ?" [सुत्तं ४५] ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इम परिसमत्ति-दंसगं णिगमणवाक्यम्—"से त्तं मतिणाणं" ति । अहवा सीसो पुच्छति—जो एस वण्णियसरूवेण ठितो णाणविसेसो सो किंसण्णो ? आचार्य आह—'स' इति निद्देसे, 'तं' ति पुव्वपण्णत्तपरिसणे, तं एतद् 'मतिणाणं' ति स्वनामाख्यानमित्यर्थः । अहवा 'से' त्ति अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एतं मतिणाणं ति भवति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥

इदाणिं सव्वचरण करणक्रियाधारं जधुद्दिट्ठ कमपत्तं सुतणाणं भण्णति—

५९ से किं त सुयणाणपरोक्खं ? सुयणाणपरोक्खं चोद्दसविहं पण्णत्तं, त जहा–अक्खरसुतं १ अणक्खरसुतं २ सण्णिसुयं ३ असण्णिसुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ सादीयं ७ अणादीयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अंगपविट्ठं १३ अणंगपविट्ठं १४ ।

६९. से किं [जे २०४ द्वि०] तं सुतणाणेत्यादि । तं च सुतावरणक्खयोवसमत्तणतो एगविहं पि तं अक्खरादिभावे पडुच्च जाव अंगबाहिरं ति चोद्दसविधं भण्णति । तत्थ अक्खरं तिविहं–णाणक्खरं अभिलावक्खरं वण्णक्खरं च । तत्थ णाणक्खरं "क्षर संचरणे" न क्षरतीत्यक्षरम्, न प्रच्यवते अनुपयोगेऽपीत्यर्थः, आतभावत्तणतो, तं च णाणं अविसेसतो चेतनेत्यर्थः । आह–एवं सव्वमविसेसतो णाणमक्खरं कम्हा सुतं अक्खरमिति भण्णति ? उच्यते–रूढिविसेसतो १ । अभिलावसण्णा अक्खरं भणिता, पङ्कजवत्, एवं ताव अभिलावहेतुभावत्तणता सुतविण्णाणस्स अक्खरता भणिता २ । इदाणिं वण्णक्खरं–वण्णिज्जति अणेणाभिधेयो अत्थो इति वण्णो, स चार्थस्य, द्रव्ये चित्रवर्णकवत्, अहवा द्रव्ये गुणविशेषवर्णकवत् । वर्ण्यते–अभिलप्यतेऽनेनेति वर्णोऽक्षरम् ३ ॥ एत्थ सुत्तं—

६० से किं तं अक्खरसुत ? अक्खरसुत तिविहं पण्णत्तं, तं जहा–सण्णक्खरं १ वंजणक्खरं २ लद्धिअक्खरं ३ ।

६० से किं तं अक्खरसुतं इत्यादि । अक्खरसद्दं सुणतो भासतो वा अक्खरसुतं । तस्सऽक्खरलंभो अभिलावो वा दव्वसुतं, खयोवसमलद्धी भावसुतं । तं च दव्वक्खरं तिविधं सण्णक्खरादि ॥ तत्थ—

६१ से किं तं सण्णक्खरं ? सण्णक्खरं अक्खरस्स संठाणाऽऽगिती । से त्तं सण्णक्खरं ।

६१ 'सण्णक्खरं' अक्खरागारविसेसो । सो य बंभादिलिविविधाणो अणेगविधो आगारो । तेसु अ(अ)कारादिआगारेसु जम्हा अकारे अकारसण्णा एव भवति, एवं सेसेसु वि, तम्हा ते सण्णक्खरा भणिता, जहा घडागारं दट्ठुं ठकारसण्णा उप्पज्जतीत्यर्थः १ ॥

१ चउद्दस मो ॥ २ अक्खरं ति तिविहं–णाणक्खरं अभिलाववण्णक्खरं च । तत्थ णाणं 'क्षर' दे ॥ ३ आवण्णा अक्खरं आ ॥ ४ ती सण्णक्खरं । से त्तं स ण्णं दे ल ह ॥

६२. से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स वंजणाभिलावो । से त्तं वंजणक्खरं ।

६२. व्यक्तीकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थ इति वा व्यञ्जनम्, यथा प्रदीपेन घटः, व्यञ्जनं च तदक्षरं चेति व्यञ्जनाक्षरम्, तच्चेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारान्तम्, अर्थाभिव्यञ्जकत्वाच्छब्दस्य । तमेवं अक्खरं अत्थाभिव्यंजकं वंजणक्खरं भवति, जहा घटः पटः इत्यादि २ ॥

६३. से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुप्पज्जइ, तं जहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं १ चक्खिंदियलद्धिअक्खरं २ घाणिंदियलद्धिअक्खरं ३ रसणिंदियलद्धिअक्खरं ४ फासिंदियलद्धिअक्खरं ५ णोइंदियलद्धिअक्खरं ६ । से त्तं लद्धिअक्खरं । से त्तं अक्खरसुयं १ ।

६३. 'लद्धक्खरं' ति अक्खरलद्धी जस्सऽत्थि तस्स इंदिय-मणोभयविण्णाणतो इह जो अक्खरलाभो उप्पज्जति तं लद्धिअक्खरं । तं च पंचविहं सोइंदियादि । जहा सोइंदियलद्धिओ सद्दं सोतुं संख इति अक्खरदुयलाभो भ[जे० २०६ प्र०]वति, एवं सव्वत्थ लद्धिअक्खरं भाणितव्वं ३ । इह सण्णा-वंजणक्खरे दो वि दव्वसुतं गहितं, सुतविण्णाणकारणत्तातो, लद्धक्खरं भावसुतं, लद्धीए विण्णाणमयत्तणतो भयणा वा १ ॥ इदाणिं अणक्खरसुतं—

६४. से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—

ऊससियं णीससियं णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।
णिस्सिंघियमणुसारं अणक्खरं छेलियादीयं ॥ ७६ ॥

से त्तं अणक्खरसुयं २ ।

६४. अणक्खरसद्दसवणतो करतो [? वा] अणक्खरसुतं भवति । तं च अणेगविहं इमं—

ऊससितं० गाहा । पूर्ववत् कंठा [आव० नि० गा० २०] ॥७६॥ २ । इदाणिं सण्णिमसण्णिसुतं—

६५. से किं तं सण्णिसुतं ? सण्णिसुतं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालिओवएसेणं १ हेऊवएसेणं २ दिट्ठिवादोवदेसेणं ३ ।

६५. सण्णिस्स सुतं सण्णिसुतं । असण्णिस्स सुतं असण्णिसुतं । तत्र संज्ञाऽस्याऽस्तीति संज्ञी । सो य सण्णी तिविहो—'कालिओवदेसेण' इत्यादि । चोदक आह—जइ सण्णासंबंधयो सण्णी तो सव्वे जीवा सण्णी, जतो एगिंदियाण वि दस आहारादिसण्णातो पढिज्जंति ? आचार्याह—इहोहसण्णा थोवत्तणतो णाधिक्रियते, जहा णो कैरिसावणेण धणवं भवइ त्ति, सेसआहारादिसण्णाओ वि भूयिष्ठतरा वि णाधिक्रियंते, अणिट्ठत्तणतो, जहेह हुंडसंठितो ण सुत्तित्तणतो रूववं भण्णति । एते अधिकतसण्णाए अणुवणयदिट्ठंता । इमे उवणयदिट्ठंता—जहा वहुधणो धणवं, पसत्थणिव्वत्ति-देहमुत्तित्तणतो य रूववं भण्णाति, तहेव महती सुभा य संज्ञाऽधिक्रियते । सा य संज्ञान संज्ञा—मनोविज्ञानम्, तत्सम्बन्धात् सञ्ज्ञीत्यर्थः ॥ उक्तः प्रसङ्गः । प्रकृतमुच्यते—

---

१ लावो वंजणक्खर । से त्त ख० स० ल० शु० ॥ २ अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र लद्धियक्खरं इति स० शु० मो० ॥ ३ °णतो कारणतो वा आ० दा० । अनक्षरशब्दश्रवणत 'कुर्वतो वा' मापत इत्यर्थ ॥ ४ कार्षापणेन ॥

६६. से किं तं कालिओवएसेणं? कालिओवएसेणं जस्स णं अत्थि ईहा अपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं सण्णि त्ति लब्भइ, जस्स णं णत्थि ईहा अपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमंसा से णं असण्णीति लब्भइ। से त्तं कालिओवएसेणं १।

६६ 'कालिओवदेसेणं' ति इहाऽऽदिपदलोवो द्रष्टव्यो, तस्सुच्चारणे 'दीहकालिओवदेसेणं' ति वत्तव्वं। दीह-आयत, कालिओ त्ति विसेसणं। कस्स? उच्यते—उवदेसस्स, जहा जिणमतेणं सुदुक्कालिओ दीहकालिओ वा पूयामंडवो कतो तहा दीहकालिओवदेसेणं ति भाणितव्वो। उवदिसणमुवदेसो, उपदेसो त्ति वा आदेसो त्ति वा पण्णवण त्ति वा परूवण त्ति वा एगट्ठा। दीहकालिआ उवदेसो दीहकालिओवदेसो, तेण दीहकालिओवदेसेणं जस्स सण्णा भवति सो आदिपदलोवातो कालिओवदेसेण सण्णीत्यर्थः। अहवा कालिय–आयारादि सुयं तदुवदेसेण सण्णी भण्णति। सो य इमरिसो—जो य अतीतकाले सुदीहे वि [जे० २०६ द्वि०] इदं तदिति करणभूयं वा सुमरति, पडुप्पण्णे य इंदिय-णोइंदिएण वा अण्णतरं सद्दाइअत्थमुवलब्भ अण्णत-वइरेगधम्मेहिं ईहइ त्ति ईहा। तस्सेव परधम्मपरिच्चागे सधम्माणुगतावधारणे य 'अपोहो' त्ति अवातो। विसेसधम्मण्णेसणा मग्गणा, जहा मधुर-गंभीरत्तणातो एस संखसद्द इति। बीसस-प्पयोगुप्पण्णमणिकम्मणिवे चेत्यादि गवेसणा। जो य अणागते य चिंतयति 'कहं वा तं तत्थ कातव्वं?' इति अण्णोण्णालंबणाणुगतं चित्तं चिंता। सीत-परत्त-परत्थपरिहत-अहितविमरिसो वीमंसा। अहवा 'किमेयं?' ति ईहा। पिच्छयावधारितो अत्थो अवाओ। अभिलसियत्थस्स मणो-वयण-काएहिं जाणणा मग्गणा। अभिलसितत्थे चेव अपईप्पज्जमाणे गवेसणा। मणोभावा संकप्पकरणं चिंता। इत्थमत्थेसु वीमंसा, जहा मिच्छमणिच्चं हितमहितं पुव्वं कयं थोवं बहु इत्यादि। अहवा संकप्पतो चेव विविधा आमरिसणा वीमंसा। अहवा 'अवोहा' त्ति अवातो। सेसा ईहापगहिता। जस्सेव अण्णयरविकप्पेण मणोदव्वमणुगतं चित्तं धावति एस कालिओवदेसेण सण्णि त्ति। सो य अणंते मणोजोगे खंधे घेत्तुं मणेति, एसलद्धिसंपण्णो मणविण्णाणावरणखयोवसमेणुववण्णतो य जहा चक्खुमतो पदीवादिप्पगासेण फुडा रूवोवलद्धी भवति तहा मणखयोवसमलद्धिमतो मणोदव्वपगासेण मणोछट्ठेहिं इंदिएहिं फुडमत्थं उवलभतीत्यर्थः। कालिओवदेससण्णीविवक्खा असण्णी, जहेह अविसुद्धचक्खुमतो मंदमंदप्पगासे रूवोवलद्धी असुद्धा एवं सम्मुच्छिमपंचेंदियअसण्णिस्स, उक्कोसखयोवसमे वि अप्पमणोदव्वगाहणसामत्थे भवपरिणामत्तणतो य असण्णिणो अविसुद्धमण्णा य अयोपलब्धीत्यर्थः। ततो वि अविसुद्धा चउरिंदियाणं, ततो तेइंदियाणं, ततो वि अविसुद्धा बेइंदियाणं अत्थुवलद्धी। जस्स य जा इंदिया स तहा तेसु अत्थमाहारादिसु पवत्तते। विगलिंदियाण वि आदेसंतरतो मणोदव्व[जे० २०७ प्र०]गहणं असुद्धमप्पत्तणतो य भाणितव्वं। सो य मणो तेसिं अणयो चेव दट्ठव्वो, असुद्धत्तणतो, असीलवद् भैषानवत्। तयो बेइंदियेहिंतो वि समीपातो अण्णतरं विण्णाणं एगिंदियाणं, जहा मत्त-मुच्छिय विसभावितस्स य तहा एगिंदियाण सव्वहा मणाभावे विण्णाणं सम्भवइ। कालिओवदेससण्णिणो एते सम्मुच्छिमादयो सव्वे असण्णी भवंतीत्यर्थः १॥ इदाणिं—

६७ से किं तं हेऊवएसेणं? हेऊवएसेणं जस्स णं अत्थि अभिसंधारणपुव्विया

१ जस्सऽत्थि ए खं० सं० डु० ॥ २ अवोहो जे० मो० सु० ॥ ३ सण्णीति जे० मो० सु० ॥ ४ जस्स णत्थि ए खं० सं० डु० ॥ ५ अवोहो जे० मो० सु० ॥ ६ ण्णी ल' ए खं० डे० ल० शु० ॥ ७ आत्म-परेह-परत्रहित-अहितविमर्श इत्यर्थः ॥ ८ 'इप्पवज्जमाणे खं० । इज्जमाणे ला० ॥ ९ तं वा धावति एस जे० ला० वा० । धावति इति पाठस्तु मो० चूर्णीप्रत्यन्तरेषु ॥ १० मणोणुगतो ला० वा० ॥ ११ णासा रूवो ला० ॥ १२ अघनघाता ला० ॥ १३ जस्सऽत्थि ए खं० सं० डु० ॥

करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ, जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णि त्ति लब्भइ। से त्तं हेऊवएसेणं २।

६७. 'हेतूवदेसेणं' ति हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम्, 'उवदेसेणं' ति पूर्ववत्। हेतूतो सण्णा भवति त्ति जेण तेण सो हेतुउवदेसेण सण्णी भवति। 'जस्स' त्ति जीवस्स, 'णं' वाक्यालंकारे देसीवयणओ वा आत्मस्वरूपप्रदर्शनवचनोपन्यासे वा, अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसन्धार्य पूर्वं ततः विज्ञानस्यैव 'करणशक्तिः' करणं-क्रिया शक्तिः-सामर्थ्यं, अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः, अथवा करण एव शक्तिः करणशक्तिः। तच्च अभिसंधारणं संचित्य संचित्य इट्ठेसु विसयवत्थूसु आहारादिसु पवत्तंते, अणिट्ठेसु य णियत्तंते। एवं सदेहपरिपालणहेतो पवत्तंति। ते य पायं पडुप्पण्णकाले, ण तीता-ऽणागतकालावलंबिणो भवंति, उस्सण्णमेवं, केयिं तु तीता-ऽणागतकालावलंबिणो वि भवंति, ते पुण ण दीहकालाणुसारिणो। किंच—तेसु वि आगतो सुहुमो संताणचोदको अविस्सरणहेतू दट्ठव्वो। एवं ते विकलेंदिया सम्मुच्छिमपंचेंदिया या(य) हेतुवायसण्णी भणिता, ते पडुच्च असण्णी जे णिच्चेट्ठा इट्ठा-ऽणिट्ठविसय[अ]विणियट्टवावारा मत्त-मुच्छिय-विसोवयुत्तादिसारिच्छचेतणट्ठिता पुढवादिएगिंदिया इत्यर्थः २॥

इदाणिं—

६८. से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भति, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भति। से त्तं दिट्ठिवाओवएसेणं ३। से त्तं सण्णिसुतं ३। से त्तं असण्णिसुतं ४।

६८. दिट्ठिवाओवदेसेणं ति दृष्टिः-दर्शनम्, वदनं वादः, उपदेशनमुपदेश इति, अनेन दृष्टिवादोपदेशेन संज्ञीत्यभिधीयते। सो य सम्मदिट्ठी सण्णी, तस्स सम्मदिट्ठिणो सण्णिस्स जं सुतं तं सण्णिसुतं, तेण सण्णिसुतखयोवसमभावेण जुत्तत्तणतो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति। अहवा दिट्ठिवायसण्णि त्ति मिच्छत्तस्स [जे० २०७ द्वि०] सुतावरणस्स य खयोवसमेणं कतेणं सण्णिसुतस्स लंभो भवति, एवं सो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति, तस्स सुतं दिट्ठिवातसण्णिसुतमित्यर्थः। तं खयोवसमियभावत्थं समद्दिट्ठिं सण्णिं पडुच्च मिच्छद्दिट्ठी असण्णी भणितो। सो य मिच्छत्तस्सुदयतो अस्सण्णी भवति, तस्स सुतं असण्णिसुतं। तं च सुतअण्णाणावरणखयोवसमेणं लब्भति, एवं दिट्ठिवातअसण्णीत्यर्थः, तस्स सुतं दिट्ठिवातअसण्णिसुतं। एवं दिट्ठिवाते सण्णि-असण्णिसु सुतखयोवसमभावो(वा) सुतं वेतव्वं इति। पर आह—खयोवसमभावट्ठित(तो) सण्णित्तणतो लक्खिज्जति खाइगभावट्ठितो केवली किण्ण सण्णि? त्ति, उच्यते—अतीतभावसरणत्तणतो पडुप्पण्णभावाण य बुज्झणतो अणागतभावचिंतणतो य सण्णि त्ति, तं तहा जिणे अणुसरणं णत्थि, जेण सो सव्वदा सव्वधा सव्वत्थ सव्वभावे जाणतीत्यर्थः, तम्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति। पुनरप्याह परः—इह मिच्छादिट्ठिणो वि केयिं हिता-ऽहितनाणवावारसण्णासंजुत्ता दीसंति किं ते असण्णिणो भणिता? उच्यते—तस्स जा सण्णा सा जतो कुच्छिता, जहेह कुच्छितवयणमवयणं कुच्छितसीलमसीलं वा, तहा तस्स सण्णा कुच्छितत्तणतो असंज्ञैव दट्ठव्वा, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिग्गहातो नाणमनाणमेव दट्ठव्वं। भणितं च—

१ सण्णि त्ति लं° डे० शु०। सण्णी लं° ज० स० जे०॥ २ असण्णी लं° ख० सु० डे० ल० शु०॥ ३ 'हेतुवाओवदेसेणं' आ० दा०॥ ४ सण्णी भवन्ति आ० दा०॥ ५ एवं तेसिं विकलेंदियाणं सम्मुच्छिमपंचेंदियाण या हेतुवायसण्णा भणिता आ० दा०॥ ६-७ °वादोव° ज०। °वातोव° स०॥ ८ 'स्सुययतो जे०॥ ९ °भावसुतं आ० दा०॥

"सदसदविसेसणातो०" [विसेसा० गा० ११५] गाहा। कंठा। एवं पि ते असण्णी। आह—एगिंदियाणं ओह सण्णो चेव अतो ते असण्णी चेव, तेहिंतो बेइंदियाइ जाव सम्मुच्छिमपंचेंदी एते विसिट्ठतरसण्णाए हेतुवायसण्णी भणिता, कालिओवदेसं पुण पडुच्च ते वि असण्णी, विण्णाणअविसिट्ठत्तणतो, दिट्ठिवातोवदेसं पुण पडुच्च कालिकोपदेसा वि असण्णी अविसिट्ठत्तणतो चेव, अतो णज्जति दिट्ठिवातसण्णी सव्वुत्तमा, सुत्ते य उवरिं ठवितो, सुत्तमेवं, कालिय-हेतुसण्णीणं पुण उक्कमकरणं कम्हा? उच्यते—सव्वस्स सुत्ते सण्णिग्गहणं जं कतं तं कालिओवदेससण्णिस्स, अतः सर्वत्र तत्संव्यवहारज्ञापनार्थं आदौ कालि[पे० २०८ प्र०]कग्रहणं कृतमित्यर्थः। किंच—सण्णि असण्णीण समनस्का-ऽमनस्का इति क्रमशः दर्शितो भवति, अथ विकलेन्द्रिया अमनस्का इति अत्पमनोद्रव्यग्रहणसामर्थ्यम्, मतिविधित्वे पुनर्मनस्त्वेषाम्। यस्मादुक्तम्—

कृमि-कीट-पतङ्गाद्याः समनस्का जङ्गमाश्चतुर्भेदाः। अमनस्काः पञ्चविधा पृथिवीकायादयो जीवाः ॥ १ ॥

[ ] इति ॥

भणितं सण्णि-असण्णिसुतं ३। ४। इदाणिं सम्म-मिच्छासुतं। तस्स सुत्तं—

६९. [१] से किं त सम्मसुतं? सम्मसुत जं इमं अरहंतेहिं भगवतेहिं उप्पण्णणाण-दसणधरेहिं तेलोक्कचहित महिय-पूइएहिं तीय-पडुप्पण्ण मणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्व-दरिसीहिं पणीयं दुवालसंगं गणिपिडग, तं जहा—आयारो १ सूयगडो २ ठाण ३ समवाओ ४ विवाहपण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाई १० विवागसुतं ११ दिट्ठिवाओ १२।

[२] इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्विस्स सम्मसुतं, अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुत, तेण परं भिण्णेसु भयणा। से त्तं सम्मसुतं ५।

६९. [१] से किं तं सम्मसुतेत्यादि। 'जं' इति अणिदिट्ठस्स गहणं, 'इम' ति पच्चक्खभावे। वंदणनमसण-पूयणादि अरहंतीति अरहंता, अरिणो वा हंता अरिहंता। तेसिं गुणसंपदाए विसेसणं—'भगवतेहिं' धम्म जस-अत्थ-लच्छी-पयत्त-विभवा एते छ प्पदत्था भगसण्णा, ते जेसिं अत्थि ते भगवंतो। केवलनाण-दंसणाव आवरणक्खते केवलणाण-दंसणा उप्पज्जंति, ते य जुगवमुप्पण्णे सव्वमणागतद्धं अवुप्पण्णसरूवे णिरावरणे सव्वदव्वगुण-पज्जव-विसेस-सामण्णविसए वि जुगवपवत्ते णाण-दंसणधरे ते तेहिं नाण-दंसणेहिं तीयद्धाए सव्वदव्व-गुणभावे जाणंति, तहा पडुप्पण्णे अणागते य जाणंति, तिकालजे दव्व भावे य पडुप्पण्णे काले जाणतीत्यर्थः। हिंसद्दो सर्ववचनेषु करणार्थे बहुवचनप्रतिपादकः। तेलोक्क ति—तिण्णि लोगा तेलोक्कं, ते य ऊर्ध्वा-ऽधस्तिर्यक्, अथ तन्निवासिग्रहणम्। भवनवासिनो अहेलोगनिवासी, वणयर-जोति-तिरियच-मणुस्सा तिरियलोकनिवासी, ऊर्ध्वे वैमानिका।

१ भण्ण, तदण्णत्ताते ते असण्णी खा० दा० ॥ २ एतेसिं सुत्ततरसण्णीए हेतुवा खा० ॥ ३ उवरिं जे० ॥ ४ तत्प्रापणार्थं खा० ॥ ५ तस्स सम्मसुतं खा० दा० ॥ ६ कलिरिक्खित-महित-पूइएहिं सर्वासु सूत्रप्रतिषु हरिभद्रवृत्तिरिहत्वेव। चूर्णिकृत्सम्मतः सूत्रपाठो मौलिकत्वेन मुद्रितोऽत्र। केवलं अनुयोगद्वारसूत्रस्यैव चूर्णिकृत्सम्मतः सूत्रपाठः [पत्र १-१] ॥ ७ पडुप्प मो० मु० ॥ ८ दंसीहिं सं० ॥ ९ वाउक्कम ल० ॥ १० सो म पा० मी० के० ल० ॥ ११ व्वणमधिविसए जे० ॥

एवं प्रायोवृत्त्या अहेलोइयग्रामसंभवाद् वाच्यम् । 'चहितं' ति चाहितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरम्, त्रैलोक्येन [जे० २०८ द्वि०] चहिता–मनोरथदृष्टिदृष्टा, अथवा गोशीर्षचन्दनादिना चर्चिता । त्रैलोक्यस्य मनोहिता महिता, अथवा महिमाकरणेन महिता, सा च महिमा महाजनसमुदयेन गीत-नृत्य-नाटकाद्यनेकप्रेक्षणकरणविधानैः । अणलिय-मणवज्ज-सब्भूतत्थ-विसारयवयणेहिं थुता पूइया । अथवा अन्योन्यविषयप्रसिद्धा एते एकार्थवचना । 'पणीतं' ति तिमततिसट्टपवादिमते अभूतत्थरूवे वज्जेऊण इमं जहत्थं दुवालसंगं पणीतं, जह णवणीतं दहियातो, भूतत्थेण वा जुत्तं भकरिसेण णीतं पणीतं । 'दुवालसंगं' इत्यादि कंठं ।

इहंगगतं आयारादि, अणंगगतं च आवस्सगादि । एतं सव्वं दव्वट्ठितणयमतेण सामिणा असंबद्धं पंचत्थिकाया इव णिच्चं सम्मसुत भण्णति । अहवा एतं चेव दुवालसंगादि सामिणा संबद्धं भयणिज्जं सम्मसुतं मिच्छसुतं वा उच्यते–सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मसुतं, मिच्छद्दिट्ठिस्स मिच्छसुतं । इमं चेव सुतपरिमाणतो णियमिज्जति—

[२] जो चोद्दसपुव्वी तस्स सामाइयादि बिंदुसारपज्जवसाणं सव्वं नियमा सम्मसुतं, ततो ओमत्थगपरिहाणीए जाव अभिण्णदसपुव्वी एताण वि सामाइयादि सव्वं सम्मसुतं सम्मगुणत्तणतो चेव भवति । मिच्छद्दिट्ठी पुण मिच्छणुभावत्तणतो अभिण्णदसपुव्वे ण पावति, दिट्ठंतो जहा अभव्वो अभव्वाणुभावत्तणतो ण सिज्झतीत्यर्थः । 'तेण परं' ति अभिण्णदसपुव्वेहिंतो हेट्ठा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामादितं ताव सव्वे सुतट्ठाणा सामिसम्मगुणत्तणतो सम्मसुतं भवति, ते चेव सुतट्ठाणा सामिमिच्छगुणत्तणतो मिच्छसुतं भवति ५ ॥ इदाणि मिच्छसुत—

७०. [१] से किं तं मिच्छसुतं[१]? मिच्छसुतं[२-३] जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छद्दिट्ठिएहिं[४-५] सच्छंदबुद्धि-मतिविगप्पियं[६], तं जहा–भारहं रामायणं [७]हंभीमासुरक्खं कोडल्लयं[८] संगभद्दियाओ[९] खोडमुहं[१०] कप्पासियं नागसुहुमं[११] कणगसत्तरी[१२] वइसेसियं[१३] बुद्धवयणं [१४]वेसितं काविलं[१५] लोगायतं[१६] सट्ठितंतं माढरं पुराणं[१७] वागरणं[१८] णाडगादी, अहवा बावत्तरिकलाओ चत्तारि य वेदा संगोवंगा।

---

१ वा । कहं तं चेव सम्मसुयं मिच्छसुय वा? उच्यते आ० दा० । वा । कहं? उच्यते जे० ॥ २-३ मिच्छासुयं डे० ल० मो० मु० ॥ ४ इत आरभ्य चत्तारि य वेदा संगोवंगापर्यन्तं सूत्रमिदं समग्रमपि अनुयोगद्वारेषु वर्तते [सू० ४१] ॥ ५ मिच्छदिट्ठीहिं जे० मो० मु० विना ॥ ६ °विगप्पि° जे० मो० मु० ॥ ७ हंभीमासुरुक्खं ख० ड० शु० । हंभीमासुरुक्खं मो० । भीमासुरुक्ख जे० मु० । "भंभीयमासुरुक्खे माढर कोडिल्लदडनीतिसु ।" अस्य व्यवहारभाष्यगाथार्धस्य मलयगिरिकृता व्याख्या—'भम्भ्याम् आसुरुक्षे माठरे नीतिशास्त्रे कौटिल्यप्रणीतासु च दण्डनीतिषु ये कुशला इति गम्यते।" [व्यवहार० भाग ३ पत्र १३२], अत्र प्राचीनासु व्यवहारभाष्यप्रतिषु "हंभीयमासुरक्ख" इति पाठो वर्त्तते । "आभीयमासुरक्खं भारह-रामायणादिउवएसा । तुच्छा असाहणीया सुयअण्णाणं ति ण बेंति ॥३०३॥ [संस्कृतच्छाया–] आभीतमासुरक्षं भारत-रामायणाद्युपदेशा । तुच्छा असाधनीया श्रुताज्ञानमिति इद ब्रुवन्ति ॥ ३०३ ॥ [भावार्थ–] चौर्यशास्त्र तथा हिंसाशास्त्र, भारत, रामायण आदिके परमार्थशून्य अत एव अनादरणीय उपदेशोंको मिथ्याश्रुतज्ञान कहते हैं।" [गोमटसार–जीवकाण्ड पत्र ११७]। "निघण्टे निगमे पुराणे इतिहासे वेदे व्याकरणे निरुक्ते शिक्षाया छन्दसिन्या यज्ञकल्पे ज्योतिषे साख्ये योगे क्रियाकल्पे वैशिके वैशेषिके अर्थविद्याया बार्हस्पत्ये आम्भिर्ये आसुर्ये मृगपक्षिरुते हेतुविद्यायाम्" इत्यादि [ललितविस्तरे परि० १२ ३३ पद्यानन्तरम् पत्र १०८] ॥ ८ कोडिल्लयं मो० मु० ॥ ९ सयम° डे० ल० । सद्दम° शु० । सगडभ° मु० । अनुयोगद्वारेषु सगभद्दियाओ सतभद्दियाओ इत्येते नामान्तरे अपि प्रत्यन्तरेषु दृश्येते ॥ १० घोडमुहं शु० । ख० सं० प्रत्योरेतन्नामैव नास्ति । अनुयोगद्वारेषु पुन घोडगमुहं, घोडयमुह, घोडयसहं, घोडयमुयं इति नामान्तराण्यपि प्रत्यन्तरेषु दृश्यन्ते ॥ ११ नागसुहुमं जे० मु० अनु० ॥ १२ कणगसत्तरी नामानन्तरं रयणावली इत्यधिक नाम शु० ॥ १३ वतिसे° शु० ॥ १४ तेसिअं ख० सं० जे० डे० मो० । तेरासिअं मु० ॥ १५ काविलिय डे० ल० मो० मु० । काविलं अनु० ॥ १६ णागायतं स० ॥ १७ पोराणं डे० ॥ १८ वागरण इति नामानन्तर भागवतं पायंजली पुस्सदेवयं लेहं गणियं इत्यधिक 'पाठः' जे० डे० मु०, नाय पाठोऽनुयोगद्वारेष्वपि ॥

[२] इच्चेताइं सम्मद्दिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहियाइं सम्मसुयं। इच्चेयाइ मिच्छद्दिट्ठिस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइ मिच्छसुतं।

[३] अहवा मिच्छद्दिट्ठिस्स वि एयाइ चेव सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छद्दिट्ठिणो तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ वमेंति। से त्तं मिच्छसुयं ६।

७० [१] से किं तं मिच्छसुतं इत्यादि। अण्णाणं इतेहिं [जे० २०९ प्र०] अण्णाणितेहिं। अण्णाणं–अभावो विवरीयत्थबोधो वा तेण इतो–अनुगतेत्यर्थः। मिच्छादिट्ठि इतेहिं मिच्छादिट्ठितेहिं, मिच्छ त्ति–अनृत, दिट्ठि त्ति–दरिसणं, मिच्छादिट्ठिणा अणुगतेहिं ति भणितं भवति। स–इत्यात्मनिर्देशः, छन्दः–अभिप्रायः, तेन्यमतस्येव वा अत्थस्स जो बोहो स बुद्धिः–अवग्रहमात्रम्, उत्तरत्र ईहादिविकप्पा सव्वे मती। अहवा नाणावरणखयोवसमभावो बुद्धी, सो चेव जदा भमोऽत्थणुसारतो पवत्तइ तदा मती भण्णति। एवं आत्माभिप्रायबुद्धि-मतिभिः पण्णूर्वं विविधकल्पनाविकल्पितमिति रचितं, तं च भारधादि जाव चत्तारि य वेदा संगोवंगा, सव्वेते लोगसिद्धा, लोगतो चेवेतेसिं सरूवं जाणितव्वं। एतं सव्वं मिच्छभावट्ठितं ति कातुं मिच्छसुतं भाणितव्वं। एतम्मि सम्म-मिच्छसुत विकप्पे चतुरो विकप्पा भाजितव्वा इमेण विधिणा—

[२] सम्मसुतं सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं चेव १, सम्मसुतं मिच्छद्दिट्ठिणो मिच्छसुतं २, मिच्छसुत सम्मदिट्ठिणो सम्मसुतं ३, मिच्छसुतं मिच्छद्दिट्ठिणो मिच्छसुतं चेव ४। 'इच्चेताइ सम्मदिट्ठिस्स सम्मत्तपरिग्गहिताइं सम्मसुतं' एत्थ सुत्ते पढम-तइयविकप्पा दट्ठव्वा। 'इच्चेयाइं' ति सम्म मिच्छसुताइं, अहवा मिच्छसुताइं चेव। सेसं कंठं। 'मिच्छदिट्ठिस्स' इच्चादिसुत्ते बितिय-चतुत्थविकप्पा दट्ठव्वा। तत्थ पढमविकप्पे सम्मसुतं सम्मत्तगुणेण सम्मं परिणामयतो सम्मसुतं चेव भवति १ बितियविकप्पे जि जहा खंडसंजुतं खीरं पित्तजरोदयतो ण सम्मं भवइ तहा मिच्छसुदयतो सम्मसुते मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुतं भवति २ ततियविकप्पे तिफलादिमणिट्ठं पि उवउत्त उवकारकारित्तणतो सम्मं भवति तहा मिच्छसुते मिच्छभावोवलंभातो सम्मसुते दढतरमाणुप्पायकरणत्तणतो तं से सम्मसुतं भवति ३ चरिमविकप्पे मिच्छसुतं, त चेव मिच्छाभिणिवेसतो मिच्छसुतं चेव भवति ४।

[३] तस्स वा मिच्छदिट्ठिणो त चेव मिच्छसुत सम्मसुत भवति। कम्हा एवं भण्णति ? उच्यते–परिणाम विसेसतो, जम्हा ते मिच्छद्दिट्ठिणो 'तेहिं [जे० २०९ द्वि०] चेव' पुव्वावरविरुद्धेहिं मिच्छसुतभणितेहिं 'चोदिता' भणिता 'समाणा' इति सन्तः, चोद्यमानतरं आत्मैकाकावस्थायां सन्त इत्यर्थः। पुव्वं जं सासण पडिवक्खो तं से सपक्खतो, तम्मि जा दिट्ठी तं 'वमेंति' परिचयंति, छड्डेंति त्ति वुत्तं भवति। जम्हा एव तम्हा त पुव्वमिच्छसुतं सम्मसुत से भवति। पर आह–उवासगमसंभावसामण्णे सम्मत्त-सुताण को पतिविसेसो जेण भण्णति 'सम्मत्त-परिग्गहिताइं सम्मसुत' ? उच्यते–जहा णाण-दंसणाणं अवबोधसामण्णे भेदो तहा सम्म-सुताणं पि भविस्सति।

१ चयाणि चेव सम्म सर्वासु सूत्रप्रतिषु। हरिभद्रीयवृत्तावप्येवमेव सूत्रपाठः सम्मतोऽस्ति ॥ २ चयाइं मिच्छ सर्वासु सूत्रप्रतिषु। हरिभद्रीयवृत्तावप्येवमेव सूत्रपाठः सम्मतः ॥ ३ "च्छादिट्ठिपरि" ल ॥ ४ मिच्छासुयं डे मो ॥ । अपि च–सम्मसुत-मिच्छासुतविभजनोऽयं सूत्रांशः सर्वासु सूत्रप्रतिषु चूर्ण्योरपि च असम्बद्धतयैव वर्तते ॥ ५ चयाइं चेव इति खं सं डे हे ल शु नास्ति। श्रीहरिभद्राचार्यैरपि मलयगिरिपादैः स्वीकृतः ॥ ६ "ट्ठिया तेहिं डे ल विना ॥ ७ ससमएहिं मो ॥ ८ चयंति डे मो। श्रीमलयगिरिपादैरपि सूत्रपाठोऽयमेव व्याख्यातोऽस्ति ॥ ९ मिच्छासुयं डे मो शु ॥ १० तस्य आत्तत्वेन वा भरयस्स आ दा ॥ ११ रमकाावस्थायाः स ला ॥ १२ तस्सेव पक्खो जे० ॥ १३ पम्मात आ दा ॥

कहं ? उच्यते—जहा विसेसोणं वोधमवात-धारणे नाणं, अवग्रहेहावोधे च दंसणं तहा इमं । तत्ते जा रुती तं सम्मत्तं, तत्थेव जं रोचकं तं सुतं । एवं मिच्छत्तपरिग्गहे त्रि वत्तव्वं ६ ॥ इदाणिं सादि-सपज्जवसाणे—

७१. से किं तं सादीयं सपज्जवसियं ? अणादीयं अपज्जवसियं च ? इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं वि[3]उच्छित्तिणयट्ठयाए सादीयं सपज्जवसियं, [4]अविउच्छित्तिणयट्ठयाए अणादीयं अपज्जवसियं ।

७१. से किं तं सादीयं इत्यादि । इह पज्जातट्ठितो वोच्छित्तिणतो, तस्स मतेणं दुवालसंगं पि सादि सपज्जवसाणं । कहं ? जहा णरगादिभवमवेक्खातो जीवो व्व । दव्वट्ठितो पुण अव्वोच्छित्तिणतो, तस्स मयेणं दुवालसंगं पि 'अणादि अपज्जवसाणं च' त्रिकालवत्थायी, जहा पंचत्थिकाय व्व ॥ एसेवऽत्थो दव्वादिचतुक्कं पडुच्च चिंतिज्जति । तत्थ—

७२. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । त[5]त्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, वहवे पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं १ । खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंच ए[6]रवयाइं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, पंच[7] महाविदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं २ । कालओ [8]णं ओसप्पिणिं उस्सप्पिणिं च पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, णोउस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ३ । भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ते[10] तहा पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, खाओवसमियं पुण भावं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ४ ।

७२. दव्वतो सम्मसुतं एगपुरिसे सादि जं पढमताए पढति; सपज्जवसाणं देवलोगगमणातो, गेलण्णतो वा णट्ठे, पमादेण वा, केवलणाणुप्पत्तितो वा, मिच्छादंसणगमणतो वा सपज्जवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेव सादिसपज्जवसाणत्तणतो। दव्वतो चेव वहवे पुरिसे पडुच्च अणादि अपज्जवसाणं, अण्णोण्णट्ठितसंताणाविच्छेयत्तणतो, मणुयत्तणं व जहा । खेत्ततो भरहेरवएसु तित्थगर-धम्म-संघातियाण उप्पाद-वोच्छेदत्तणतो सादि सपज्जवसाणं, महाविदेहेसु अवुच्छेदत्तणतो [अणादि अपज्जवसाणं] । कालतो ओसप्पिणीए [जे० २१० प्र०] तिसु, उस्सप्पिणीए दोसु साधंतं, णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणिततियं महाविदेहकालपलिभागं पडुच्च तिसु वि कालेसु अवट्ठितत्तणतो अणादि अपज्जवसाणं । इदाणिं भावतः—'जे' इति अणिद्दिट्ठस्स णिद्देसो । 'जदा' इति काले पुव्वण्हे अवरण्हे वा, दिया रातो वा पुव्विं जिणेहिं पण्णत्ता भावा, पच्छा त एव गौतमादिभिः 'आघविज्जंती'त्यादि,

१ °साणं अवोधिअवातकरणे णाण आ० मो० ॥ २ इच्चेइयं मो० मु० ॥ ३ वुच्छि° मो० मु० ॥ ४ अवुच्छि° मो० मु० ॥ ५ तत्थ इति पद ख० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ६ एराव° स० शु० ॥ ७ पच विदेहाइं ल० ॥ ८ णं उस्सप्पिणि ओसप्पिणिं च जे० मो० मु० । नाय पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मत ॥ ९ णोओसप्पिणिं णोउस्सप्पिणिं च ल० । हारि०वृत्तौ एतदनुसारेणैव व्याख्यातमस्ति ॥ १० ते तया भावे पडुच्च जे० डे० मो० । ते भावे पडुच्च ल० । चूर्णिकृता ते तदा पडुच्च इति पाठान्तरनिर्देशेन सह ते तहा पडुच्च इति पाठ आदृतोऽस्ति । वृत्तिकृद्द्वया पुन ते तया पडुच्च इत्येव पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥

'आघविज्जति' आख्यायन्ते सामण्णतो [विसेसतो] विसेससामण्णतो वा, पण्णविज्जति भेदाभेदेहिं, तेसिं भेदाभेदाणं सरूवमक्खाणं परूवणा, दंसिज्जति उवमामेत्तेण जहा गो तहा गवय इति, णिदंसणं हेतु-दिट्ठंतेहिं, उवदंसिज्जा उवणयोवसंघारेहिं सव्वणएहिं वा। अहवा एगट्ठिता एते। 'ते' इति पण्णवणिज्जाण णिद्देसो। 'तदा' इति पण्णवगं पण्णवणिज्जे वा पडुच्च सादि सपज्जवसाणं भवति। तत्थ पण्णवगं पडुच्च उवयोगतो सरविसेसतो पयत्तो आसण-विसेसतो य सादि सपज्जवसाणं। पण्णवणिज्जे पडुच्च गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो एगपदेसादिभिन्नगाहतो एगसमयादिभिन्नट्ठाणतो वण्णादिपज्जवे य आसज्ज सादि सपज्जवसाणं। पाठंतरं वा "ते सदा पडुच्च" 'तया' इति कालः अनाद्यपर्यवसितम्। भावतः श्रुतज्ञानं क्षायोपशमिके भावे नित्यं वर्तते स्वामिसम्बन्ध इति।

७३ अहवा भवसिद्धीयस्स सुयं साईयं सपज्जवसियं, अभवसिद्धीयस्स सुयं अणादीयं अपज्जवसिय।

७३ अहवा सादि सपज्जवसाण सपडिपक्खपदेसु भंगचउक्के पढमभंगे सम्मत्तसहितसुतभावो चिंतेयव्वो, अणेगविहं वा खयोवसमभाव पडुच्च दव्वादिउवयोगं वा पडुच्च पढमभंगो भवति। बितियभंगो सुण्णो, अहवा अभव्वाणं भव्वागतद्दसंभागेण सुतभावो भाणितव्वो। चरिम-ततियभंगेसु अविसिट्ठसुतभावो अभव्व-भव्वे पडुच्च जोएतव्वो। अभवसिद्धीयस्स इत्यादि सुत्तसिद्धं। इह चरिम-ततियभंगेसु अणादिसुतभावो दिट्ठो सुताधिकारतो, इहरा मतिभावो वि वत्तव्वो, मति-सुताण अण्णोण्णाणुगतत्तणतो। सो य अणादिभावभावो जहण्णो अजहण्ण[चे० २१ द्वि०]मणुक्कोसो वा हवेज्ज, उक्कोसो ण भवति, कम्हा? जम्हा उक्कोसनाणभावो केवलिणो भवति॥ तस्स य सुते इमं पमाण पढिज्जति—

७४ सव्वागासपदेसग्गं सव्वागासपदेसेहिं अणंतगुणियं पज्जवग्गक्खरं णिप्फज्जइ।

७४ सव्वागासपदेस इत्यादि सुत्तं। सव्वमिति—अपरिसेससव्वस्स अधिकिच्चेव भण्णति, सव्वं आकासं सव्वाकासं, सव्वागासस्स पदेसा सव्वागासपदेसा, ते पदेसि अग्गा—अग्ग परिमाणं ति वुत्तं भवति, एत सव्वागासप्पदेसरासियग्गं अणंतेण रासिणा अणंतेण गुणितं ताहे जं रासिपमाणं लब्भति तं सव्वपज्जवाण अग्गं भवति। पज्जाया णाम—एक्केक्कस्साऽऽगासपदेसस्स जावंतो अगुरुलहुयाती पज्जया ते पण्णाए सव्वे संपिंडिता, तेसिं संपिंडिताण जं अग्गं एतप्पमाणं अक्खरं लब्भति।

[अक्खरपडल]

इह अक्खरं ति दुविहं—णाण अकारादिवण्णसुतक्खरं च। तत्थ णाणमक्खरं ति अविसेसतो सव्वणाणमक्खरं, जम्हा तं जीवातो उप्पण्ण अणण्णभावत्तणतो णो क्खरति त्ति, इह पुण सव्वपज्जायतुल्लत्तणतो केवलणाणमेव गेज्झं, जम्हा केवलं सव्वदव्वपज्जायविण्णत्तिसमत्थं भवति। तं च केवलं णेये पवत्त, तस्स वि परिमाणं इमेणं चेव विधिणा भाणियव्वं—'सव्वागासपदेसग्गं' इत्यादि पूर्ववत्। ते य सव्वदव्वपज्जाया समासतो तीस इमेण विधिणा—गुरु लहू गुरुलहू अगुरुलहू एते चतुरो, पंच वण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अट्ठ फासा, अणित्थंथस्स संठाणसहिता छ संठाणा, एते मुत्तदव्वे सव्वे समवतंति। अमुत्तदव्वेसु अगुरुलहू चेव एक्को पज्जायो समवत।

१ "आघविज्जंति' त्ति प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते, सामान्य-विशेषाभ्यां कथ्यन्त इत्यर्थः" इति हारिभद्रवृत्तौ। "आघविज्जंति' त्ति प्राकृतत्वाद् आख्यायन्ते, सामान्यरूपतया विशेषरूपतया वा कथ्यन्ते इत्यर्थः" इति मलयगिरिवृत्तौ॥ २ सादि सप खं०। साई सप ल०॥ ३ पज्जवक्खरं शु० मो० मु०। विभागपाती ११४ पत्रे नन्दिसूत्रपाठभेदाः। नायं पाठभूमि-चूर्णिकृतां सम्मतः॥

एत्थ य एक्केक्के भेदे अणंता भेदा संभवंति । किंच मुत्तदव्वेसु णतविसेसतो अणियोगधरा अट्ठावीसं मूलपज्जाए भणंति । कहं ? उच्यते–ते चेव तीसं सव्वगुरु-लहुपज्जाएहिं विहूणा । जतो भणितं—

निच्छयतो सव्वगुरुं सव्वलहुं वा ण विज्जते दव्वं ।
ववहारतो तु जुज्जति वादरखंधेसु णऽण्णेसु ॥ १ ॥ [कल्पभा गा. ६५]

णिच्छयणयमतेण सव्वधा गुरुं लहुं वा नत्थि दव्वं । जदि हवेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोधो केणइ हवेज्ज, सव्वलहुस्स वा उप्पयमाणस्स, जतो य णिच्चपडणं उप्पयणं वा ण विज्जति तम्हा [जे० २११ प्र०] सव्वधा गुरुं लहुं वा दव्वं नत्थि । ववहारणयादेसेणं पुण दो वि अत्थि, जहा–सव्वगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सव्वलहुं च धूम-उलुगपत्तादी । एवं ववहारणयादेसतो वादरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति । 'णऽण्णेसु' त्ति ण सुहुमपरिणामेसु त्ति वुत्तं भवति ॥

के पुण सुहुमपरिणता दव्वा ? के वा वादरपरिणता ? उच्यते–परमाणूतो आरद्धं एगुत्तरवड्ढितेसु ठाणेसु जाव सुहुमो अणंतपदेसिओ खंधो, एतेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दव्वा लब्भंति, एतेसिं च अगरुलहुपज्जाया भवंति । वादरो पुण परमाणूतो आरब्भ जाव असंखेज्जपदेसितो खंधो ताव ण लब्भति, परतो वादरपरिणामो खंधो लब्भति, सो य जहण्णो वि अणंतपदेसिओ नियमा भवति, तातो एगुत्तरवड्ढिया अणंता अणंतट्ठाणावडिया वादरा खंधा । ते य ओराल-विउव्वा-ऽऽहार-तेयवग्गणासु भवंति, णियमा य ते गुरुलहुपेज्जाई[1] भवंति । सीसो पुच्छति–जे रूविगुरुलहू दव्वा अगुरुलहू य तेसिं के थोवा वहू वा ? उच्यते–थोवाणि गुरुलहुदव्वाणि, तेहिंतो रूवीअगरुलहुयदव्वा अणंतगुणा । कहं पुण ते अणंतगुणा भवंति ? उच्यते–थूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सट्ठाणे अणंतातो वग्गणातो, सुहुमाणं पि अणंतातो वग्गणातो, थूरवग्गणठाणेहिंतो उवरिं भासादिवग्गणट्ठाणेसु एक्केक्के अणंतातो वग्गणातो, हेट्ठतो वि थूरवग्गणट्ठाणाणं परमाणूणं एक्का वग्गणा, एवं जाव दसपदेसियाणं संखेज्जपदेसियाणं संखेज्जातो वग्गणातो, असंखेज्जपदेसिताणं असंखेज्जाओ वग्गणाओ, एतेणं कारणेणं गुरुलहुदव्वेहिंतो रूवीअगरुलहुदव्वाणि अणतगुणाणि भवंति । आदेसंतरेण वा वादरठाणेसु वि सुहुमपरिणामो अविरुद्धो[3] त्ति भाणितव्वो । उक्तं च—

गुरुलहुदव्वेहिंतो अगरुलहूपज्जया अणंतगुणा ।
उभयपडिसेहिता पुण अणंतकप्पा [जे० २११ द्वि०] वहुविकप्पा ॥ २ ॥[2] [कल्पभा गा ६७]

गुरुलहुपज्जायजुत्ता जे दव्वा तेसिं चेव जे गुरुलहुपज्जाया तेहिंतो रूविअगरुलहुयदव्वाण जे अगरुलहुयपज्जाया ते आधारअणंतगुणत्तणतो अणंतगुणा एव भवंतीत्यर्थः । 'उभयपडिसेधिता णाम' अगरुयलहुया । 'पुण' विसेसणे । किं विसेसेति ? उच्यते–अरूविदव्वाधारा इत्यर्थः । अहवा 'उभयपडिसेधिता णाम' वादर-सुहुमभाववज्जिता जे दव्वा, अरूविण[3] इत्यर्थः । तेसु 'अणंतकप्पा णाम'[4] अणंतप्रकारा । कहं ? उच्यते–आकासत्थिकाए देस-पदेसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिसु वि । 'वहुविकप्प' त्ति तेसिं अणंतकप्पाणं एक्केक्को अणंतप्रकारो । कहं पुण ? उच्यते–जम्हा एक्केक्के आगासप्पदेसे अणंता अगरुलहुयपज्जाया भवंति तम्हा ते वहुविकप्प त्ति । ते य सव्वण्णुवयणतो सद्धेया इति ॥

१ °पज्जाया भवंति आ० दा० ॥ २ अस्या गाथाया एतदुत्तरार्द्धमेव कल्पभाष्ये वर्त्तते ॥ ३ अविरुधिण जे० । अवरूविण दा० ॥ ४ णाम' एक्केक्का यणत° आ० दा० ॥

रूवि-अरूविदव्वाण य पज्जायपमाणजुत्तं इम भण्णति—रूविदव्वाणं जे य अगरुलहुपज्जाया ते पण्णाछेदेण पिंडिता, एतेहिंतो एक्कस्स चेव अमुत्तदव्वस्स जे अगरुयलहुपज्जाया ते अणंतगुणा भवतीत्यर्थ¹। एत्थ सीसो भणति—कमतिरेगेहिं पुण भागेहिं मुत्तदव्वाण पिंडितपज्जाएहिंतो अमुत्तदव्वाण अगुरुलहुपज्जाया अणंतगुणा भवंति? उच्यते—नास्त्यत्र परिमाणं, बहुसो वि अणंतयं गुणिज्जमाणे अमुत्तदव्वपज्जाएसु नत्थि परिमाणं ॥

एवंगते परिमाणार्थं इम भण्णति—

कण्ण हवेज्ज निरोधो अगरुलहूपज्जयाण तु अमुत्ते ? ।
अवतमसजोगो जरितं पुण तम्भिभनवरस ॥ ३ ॥ [कप्पमा गा ६९]

जतो अमुत्तदव्वाण बहुसा वि अणंतएण गुणिज्जमाणे पेज्जायण ण भवति । ततो 'केनेति' कनान्येन प्रकारेण 'हवज्ज' त्ति भव 'णिरोहो णाम' परिमाणं ? परिच्छेदस्यर्थ, किं मुत्तदव्वेहिंतो अमुत्तदव्वाण अगरुयल-हुपज्जायपरिमाण भविस्सति ? णि, नेत्युच्यते, 'अवतमसंजोगा' 'अर्थत' भणीअ अंगुज्जमाणो जम्हा संजोगो। [प० २१२ प्र०] 'जरियं' ति यत्र। 'पुण' विसेसणे। किं विसेसयति ? रूविदव्वे। तदित्यनेन अमुत्तदव्वपक्खो, तस्स विपक्खो—मुत्तदव्वपगारा, तेसु पज्जायपावक्खतो अमुत्तदव्वेसु य पज्जायाण अणंतबहुयत्तणतो, अता मुत्त-दव्वेहिंता अमुत्तदव्वपज्जायाण परिमाणकरणसंजोगो एगंतेणेव ण जुज्जते, ण घटतेत्यर्थ ॥

एवं तु अणतेहिं अगरुलहूपज्जएहिं संजुत्तं ।
होति अमुत्तं दव्वं अरूविकायाण तु चतुण्हं ॥ ४ ॥ [कप्पमा गा ७०]

'एवमिति' यथदुक्तं । सेसं कंठ । णवरिं 'अरूविकायाण तु चतुण्ह' ति धम्मा ऽधम्मा-ऽऽगास जीवाण वि एतेसिं चतुण्ह वि नियमा पत्तेयं अणंता अगरुयलहुयपज्जाया भवंति । कहं ? उच्यते—जम्हा एतेसिं एक्केक्को पदेसो अणतेहिं अगरुयलहुयपज्जाएहिं संजुत्तो तम्हा धम्मा-ऽधम्मेगजीवस्स य असंखेज्जपदेसत्तणतो असंखेज्जअणंता पत्तेयं भवंति । आगासपदेसअपरिमाणत्तणतो पुण तस्स नत्थि परिमाणं, तहा वि ववहारतो अणंता उक्ता इत्यर्थः ॥

एवं ताव सुयमणंतमुक्तम् । अथेदानीं तत् केवलज्ञानं यथाऽनन्तं तथदुच्यते—

उवम्मदी० गाहा । [कप्पमा गा ७१] सव्व रूविदव्वा-ऽरूविदव्वाण य जावतिया गुरुलहुपज्जाया सव्वे अरूविदव्वाण य जे अगरुलहुपज्जाया एते सव्वे जुगवं जाणति पासति य जतो, एवमणंतं केवलनाणमक्खरं ति समसगममिदिवम् ।

इदाणिं 'अकारादिदव्वसुतमक्खरं' ति जति अविसेसतो णाणमक्खरमुक्तं णेयं वा तहा वि सविसेसतो जहा पंकयं तहा सरक्खरं वंजणक्खरं वण्णक्खरं वा भण्णति । तत्थ 'सरक्खरं' अक्खरं अक्खर सरति—गच्छति सरंति वा इत्यतो सरक्खरं अकारादि, वंजणस्स वा पुव्वमभिधाणं सरंति, ण वा सरक्खरमंतरेण अत्थो समरिज्जइ त्ति सरक्खरं। ककारादि वंजणक्खरा, व्यज्यते तनार्थ इति प्रदीपेन घटादिवद् व्यंजनाक्षरम् । तहिं चेव सर-वंजणक्खरेहिं जदा अत्थो घेप्पिज्जति अभिलप्पते वा तदा ते वण्णक्खर भण्णंति । इह एक्केक्कस्स अकारादिककारांतमक्खरस्स स-परप-ज्जायभेदा इम—अकारस्स य पज्जाया जहा दीह-ह्रस्स-प्लुतासयः, तत्थ दीहो [प० २१२ द्वि०] उदात्ता ऽनुदात्त-स्वरितभदः, एवं ह्रस्स-प्लुतावपि, पुनरप्येकैको सानुनासिका निरनुनासिकश्च, इत्यष्टादशभेदं²। एवं सेसस्सराण वि जहासंभवं भेदा भावितव्वा। अहवा सविसेसतो एक्केक्कमक्खरस्स अणंता सपज्जया। एत्थ अकारस्स

१ पज्जायणं के दा ॥ २ अपुज्जमाणो जा ॥ ३ तसरक्खरस्स जा दा ॥ ४ तक्तिभेदा के दा ॥

अकारजातीसामण्णतो सपज्जाया अट्ठारस, सेसा परपज्जाया, एवं संखेज्जा पज्जाया । अहवा अकारादिसरा कका-रादिवंजणा केवला अण्णसहिता वा जं अभिलावं लभे स तस्स सपज्जायो, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वे वि अणंता । जतो सुते भणितं–"अणंता गमा अणंता पज्जया" । [सू० ८५ त ९४ आदि] भणितं च—

पण्णवणिज्जा० गाहा [कल्पभा गा. ९६४] । अक्खरलंभेण० गाहा [विशेषा. गा १४३] । अणभिलप्पाण अभिलप्पा अणंतभागो, तेसिं पि अणंतभागो सुतनिबद्धो इति । अहवा अकारादिअक्खराण पज्जाया सव्वदव्व-पज्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवंति । कहं ? उच्यते–जे अभिलावतो संजुत्ता-ऽसंजुत्तेहिं अक्खरेहिं उदत्ता-ऽणुदत्तेहि य सरेहिं जावतिए अभिलावे अभिलप्पे य लभति ते सव्वे तस्स सपज्जया, सेसा सव्वे तस्सेव परपज्जया । आकास मोत्तुं सव्वस्स सपज्जएहिंतो परपज्जया अणंतगुणा । आकासस्स सपज्जएहिंतो परपज्जया अणंतभागे । पर आह–कहं तस्सेव परपज्जया य ? णणु विरुद्धं, उच्यते–सव्वक्खराण घडाइवत्थुणो वा दुविहा पज्जया चिंतिज्जंति–संबद्धा असंबद्धा य । तत्थ अकारस्स अकारपज्जया अकारभावत्तणतो अत्थित्तेण संबद्धा, घडागारावस्थायां घटपर्यायवत्; ते चेव णत्थित्तेणं असंबद्धा, नत्थित्तस्स अभावत्तणतो, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत् । अकारे इकारादिपर्याया णत्थित्तेण संबद्धा, अकारे णत्थित्तभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्; ते चेव अत्थित्तेण असंबद्धा, अत्थित्तअभावत्तणतो, घटाद्यवस्थायां पटपर्यायवत् । एवं अक्खरेसु घडाइपज्जाया वि चिंतणिज्जा, घडादिसु य अका(? क्ख)रपज्जाया, इच्चेवं एकेकमक्खरं सव्वपज्जायमं ॥ [जे० २१३ प्र०]

एवं सर्वात्मकाः सर्वपर्यायाः, अतो भण्णति–सव्वागासपदेसग्गं अणंतगुणितं पज्जवग्गं अक्खरं निप्फज्जति ॥ एवं नाणक्खरं अकारादिअक्खरं णेयअक्खरं च तिण्णि वि अणंताऽभिहिता । एत्थ नाणक्खरं जं तं जीवस्स संसारत्थस्स ण कताइ ण भवति त्ति । जतो भणितं —

७५. सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडियओ, जति पुण सो वि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवत्तं पावेज्जा ।

सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पभा चंद-सूराणं ।

से त्तं सादीयं सपज्जवसियं । से त्तं अणादीतं अपज्जवसितं ७।८।९।१०।

७५. सव्वजीवाणं पि य णं इत्यादि सुत्तं । सव्वजीवग्गहणे वि सति 'अवि' पदत्थसंभावणे, किं संभाव-यति ? इमं–सिद्धे मोत्तुं, चसद्दतो य भवत्थकेवली मोत्तुं । 'णं'कारो वाक्यालंकारे । अक्खरं ति–नाणं, तस्स अणं-

१ °रेसु णत्थित्तभावत्तणतो घडाइपज्जाया आ० दा० । °रेसु घडेसु घड इव पज्जाया मो० ॥ २ °ज्जायमयं । एवं आ० दा० । °ज्जायमयं । एवं सर्वत्रका. सर्व° मो० ॥ ३ द्वादशारनयचक्रवृत्तौ इद सूत्रमित्थ वर्त्तते—सव्वजीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंततमो भागो णिच्चुग्घाडितओ ।

तं पि जदि आवरिज्जिज्ज तेण जीवा अजीवत पावे । सुट्ठु वि मेहसमुदये होइ पभा चंद-सूराणं ॥१॥

अत्रैव च नयचक्रप्रत्यन्तरे अणंतभागो इति जीवो अजीवतं इति च पाठभेदोऽप्युपलभ्यते ॥ ४ °डिओ सं० चूर्णि च विना ॥ ५ अत्र चूर्णिकृता चूर्णौ जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज इत्यादि गाथैवोल्लिखिताऽस्ति, नयचक्रोद्धरणेऽपि पाठभेदेन गाथैव दृश्यते, अस्मत्स्वीकृतसूत्रप्रतिषु ये विविधा पाठभेदा वर्त्तन्ते, यच्च पाठस्य स्वरूपमीक्ष्यते, एतत्सर्वविचारणेन सम्भाव्यते यदत्र सूत्रे गाथैव भ्रष्टता प्राप्ताऽस्ति । वृत्तिकृतोराचार्ययो पुनरत्र किं गद्य गाथा वा मान्याऽस्ति ? इति न सम्यगवगम्यते, तथापि वृत्तिस्वरूपावलोकनेन गाथैव तेषा सम्मतेति सम्भाव्यते ॥ ६ सो वि वरिज्जेज्जा सं० शु० । सो वाऽऽवरिज्जेज्ज खं० ॥ ७ तेण जे० मो० मु० ॥ ८ अजीवत्तं ल० ॥ ९ पावेज्ज ख० ॥ १० सादि सप° सं० शु० । सआदि सप° खं० ॥

समागो निच्चुग्घाडियतो, सो केवलस्स न सम्मवति, केवलस्स अविभागसपुण्णत्तणतो य; ओहीए वि ण सम्मवति, अणंतभागस्स अभावत्तणतो, अवधेः असंख्येयप्रकृतिसम्भवादित्यर्थः; मणपज्जवनाणे वि रिजु-विपुलत्तमेदसंमवतो अणंतभागो ण मवति, किंच अवधि-मणपज्जवाण णिच्चुग्घाडअभावत्तणतो इह अणधिकारो; परिसिट्ठे मति-सुते त्ति 'अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडियओ' अधिकतसुतस्स वा अक्खरस्स अणंतभागो निच्चुग्घाडियता। अत्थ सुतं तस्स मतिणाण पि घेत्तव्वं। 'णिच्चं' ति सव्वकालं। 'उग्घाडियतो' त्ति णाऽऽवरिज्जति। सो य अणंतभागो पुढवादिएगिंदियाण वि एवम्ब निच्चुग्घाडो, अहवा सव्वजहण्णो अणंतभागो निच्चुग्घाडो पुढविक्काइए, चैतन्यमात्रमात्मनः। तं च उक्कोसथीणद्धिसहितनाण-दंसणावरणोदए वि णो आवरिज्जति।

जति पुण सो वि आवरिज्जेज्ज तेण जीवो अजीवयं पावे। सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पभा चंद-सूराणं ॥१॥

[कल्पभाष्ये गा ७४]

जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीवो जीवत्तं ण परिच्चयति। सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति? उच्यते—दव्वसमावसमत्तणतो। इह दिट्ठंतो जहा—सुट्ठु वि मेहच्छादिए णमे चंद-सूरप्पमा मेहपडलं भेत्तुं दव्वं ओभासति, तहा अणंतेहिं णाण-दंसणावरणकम्मपुग्गलेहिं एक्केक्को आतप्पदेसो आवेढियपरिवेढितो ते कम्मावरणपडले भेत्तुं नाणस्स अणंतभागो उब्भरति, [पं० २१२ द्वि] ततो य से अव्वत्तं नाणमक्खरं सव्वजहण्णं मवति। ततो पुढविक्काइएहिंतो आउक्कातियाणं अणंतमागेण विसुद्धतरं नाणमक्खरं, एवं कमेणं तेउ-वाउ-वणस्सति-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णिपंचेंदिय-सण्णिपंचेंदियाण य विसुद्धतरं भवतीत्यर्थः। ७। ८। ९। १०॥ भणितं सादि सपज्जवसितं अणादि अपज्जवसितं च। एतेण मसगता अक्खरपडलं मणितं।

एवं बहुवत्तव्वं अक्खरपडलं समासतोऽभिहितं। वित्थरतो से अत्थं जिण-चोद्दसपुव्विया कहए ॥ १ ॥

[॥ अक्खरपडलं सम्मत्तं ॥]

इदाणिं गमिया-ऽगमियं—

७६ से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ। अगमियं कालियं सुयं। से त्तं गमियं। से त्तं अगमियं ११। १२।

७६ गमबहुलत्तणतो गमियं। तस्स लक्खणं—आदि-मज्झ-ऽवसाणे वा किंचिविसेसजुत्तं सुत्तं दुगादिसतग्गसो समरं पढिज्जमाणं गमियं भण्णति, तं च पायसो दिट्ठिवाते। अण्णोण्णक्खराभिधाणट्ठितं जं पढिज्जति तं अगमियं, तं च पायसो आयारादि कालियसुतं ११। १२॥

उक्तं गमिया-ऽगमियं। इदाणिं अंगा-ऽणंग-पविट्ठं—तं च गमिया-ऽगमियं भेदेण समासतो अंगा-ऽणंगपविट्ठं भण्णति। कहं? उच्यते—सव्वसुतस्स तम्मावंतगततणतो।

७७ अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—अंगपविट्ठं अंगबाहिरं च।

७७ अहवा अरिहंतमग्गाणुसारि सुतं जं तं समासतो दुविहं इच्चादि सुत्तं।

१ पढमं खं० ॥ २ पत्थं मधु खं० ॥ ३ अहवा इति नास्ति खं० ॥ ४ दुविहं ... ॥ ५ अणंगपविट्ठं ... ॥

पायदुगं जंघोरू गातदुगद्धं तु दो य बाहूयो । गीवा सिरं च पुरिसो बारसअंगो सुतविसिट्ठो ॥ १ ॥
[ ]

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभावभागट्ठितं तं अंगपविट्ठं भण्णति । जं पुण एतस्सेव सुतपुरिसस्स वइरेगट्ठितं तं अंगबाहिरं ति भण्णति । अहवा—

गणहरकतमगगतं जं कत थेरेहिं बाहिरं तं च । णियतं वंगपविट्ठं अणियत सुत बाहिरं भणितं ॥ १ ॥
[ ]

७८. से किं तं अंगबाहिरं ? अंगबाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सगं च आवस्सगवइरित्तं च ।

७९. से किं तं आवस्सगं ? आवस्सगं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामायियं १ चउवीसत्थओ २ वंदणयं ३ पडिक्कमणं ४ काउस्सग्गो ५ पच्चक्खाणं ६ । से त्तं आवस्सयं ।

७८–७९. से किं तं अंगबाहिरमित्यादि । कंठं ॥

८०. से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालियं च उक्कालियं च ।

८०. आवस्सगवतिरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च । तत्थ 'कालियं' जं दिण-रातीणं पढमचरिमपोरिसीसु पढिज्जति । जं पुण कालवेलवज्जं पढिज्जति तं उक्कालियं ॥ तत्थ—

८१. से किं तं उक्कालियं ? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—दसवेयालियं १ कप्पियाकप्पियं २ चुल्लकप्पसुतं ३ महाकप्पसुतं ४ ओवाइयं ५ रायपसेणियं ६ जीवाभिगमो ७ पण्णवणा ८ महापण्णवणा ९ पमायप्पमादं १० नंदी ११ अणुओगदाराइं १२ देविंदत्थओ १३ तंदुलवेयालियं १४ चंदावेज्झयं १५ सूरपण्णत्ती १६ पोरिसिमंडलं १७ मंडलप्पवेसो १८ विज्जाचरणविणिच्छओ १९ गणिविज्जा २० झाणविभत्ती २१ मरणविभत्ती २२ आयविसोही २३ वीयरायसुतं २४ संलेहणासुतं २५ विहारकप्पो २६ चरणविही २७ आउरपच्चक्खाणं २८ महापच्चक्खाणं २९ । से त्तं उक्कालियं ।

८१. उक्कालियं अणेगविहं दसवेयालियादि । कप्पमकप्पं च जत्थ सुते वण्णिज्जति तं कप्पियाकप्पियं २ । कप्पं जत्थ सुते वण्णितं तं कप्पसुतं, अणेगविहचरणकप्पणाकप्पयं [जे० २१४ प्र०] च कप्पसुतं । तं दुविहं—चुल्लं महंतं च । चुल्लं ति—लहुतरं अवित्थरत्थं अप्पगंथ च चुल्लकप्पसुतं ३ । महत्थं महागंथं च महा-

१–२ मणंगपविट्ठं ख० सं डे० ल० शु० ॥ ३ वंदणं ख० स० डे० ल० शु० ॥ ४ काओसग्गो खं० ॥ ५ "ओवाइय'ति प्राकृतत्वाद् वर्णलोपे औपपातिकम्" इति पाक्षिकसूत्रवृत्तौ । उववाइयं शु० मु० ॥ ६ रायपसेणीयं ख० । रायपसेणइय डे० ल० शु० ॥ ७ °क्खाण २९ पवमाइ । से त्तं जे० मो० मु० । पवमाइ इति सूत्रपद चूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्नास्ति व्याख्यातम् । अपि च जेसू० प्रतौ अत्रार्थे "टीकायामिद न दृश्यते" इति टिप्पनकमपि वर्त्तते ॥

कप्पसुत्त ४। एमेव [पेण्णवणा] पण्णवणत्थो सवित्थरो ८। अण्णे य सवित्थरत्था जत्थ भणिता सा महापण्णवणा ९। मज्जादियो पंचविहो पमातो, तेसु चेव आभोगपुब्विया उवरती अप्पमातो, एते जत्थ सवित्थरत्था दंसिज्जति तमज्झयणं पमादप्पमादं १०। सूरचरितं पण्णविज्जते जत्थ सा सूरपण्णत्ती १६। पुरिसो त्ति–संकु पुरिससरीरं वा, ततो पुरिसातो निप्फण्णा पोरिसी, एवं सव्वस्स वत्थुणो जदा स्वप्पमाणा च्छाया भवति तदा पोरिसी भवति, एतं पोरिसिप्पमाणं उत्तरायणस्स अंते दक्खिणायणस्स य आदीए एक्कं दिणं भवति, अतो परं अट्ठ एक्कसट्ठिभागा अंगुलस्स दक्खिणायणे वड्ढंति, उत्तरायणे य हस्संति, एवं मंडले मंडले अण्णोण्णा पोरिसी जत्थ अज्झयणे दंसिज्जति तमज्झयणं पोरिसिमंडलं १७। चंदस्स सूरस्स य दाहिणुत्तरेसु मंडलेसु जहा मंडलातो मंडले पवेसो तहा वण्णिज्जति जत्थऽज्झयणे तमज्झयणं मंडलप्पवेसो १८। विज्ज त्ति–णाणं, चरण–चारित्तं, विणिच्छो विसिट्ठो वा णिच्छयो–सब्भावो स्वरूपमित्यर्थः, फलं वा निच्छयो, त जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं विज्जाचरणविणिच्छयो १९। सबाल–वुड्ढाउलो गच्छो गणो, सो जस्स अत्थि सो गणी, विज्ज त्ति–णाणं, तं च जोइसनिमित्तगतं णातुं पसत्थेसु इमे कज्जे करेति, तं जहा–पव्वावणा १ सामाइयारोवणं २ उवट्ठावणा ३ सुतस्स उद्देस–समुद्देसा ऽणुण्णातो ४ गणारोवणं ५ दिसाणुण्णा ६ खेत्तेसु य णिग्गम–पवेसा ७, एमाइया कज्जा जेसु तिहि करण–णक्खत्त–मुहुत्त–जोगेसु य जे जत्थ करणिज्जा [पत्र० २१४ द्वि०] ते जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं गणिविज्जा २०। थिरमज्झवसाणं झाणं, विभयणं विभत्ती, समेदं झाणं जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयणं झाणविभत्ती २१। मरणं–पाणपरिच्चागो, विभयणं–विभत्ती, पसत्थमपसत्थाणि सभेदाणि मरणाणि जत्थ वण्णिज्जति अज्झयणे तमज्झयणं मरणविभत्ती २२। आत त्ति–आत्मा, तस्स विसोही तवेण चरणगुणेहिं य आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तहा जत्थ अज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं आतविसोही २३। सरागो वीतरागो य एतेसिं जत्थ सरूवकहणा, विसेसतो वीतरागस्स, तमज्झयणं वीतरागसुतं २४। वाघातो निव्वाघातो वा भवसंलेहो कसायादिभावसंलेहो य जो जहा कातव्वो तहा वण्णिज्जति जत्थऽज्झयणे तमज्झयणं संलेहणासुतं २५। विहरणं विहारो, तस्स कप्पो–विधि त्ति वुत्तं भवति, सो जिणकप्पे थेरकप्पे वा, जिणकप्पे पडिम–अहालंद परिहारिया य वट्टव्वा, एतेसिं सवित्थरो विधी जत्थ अज्झयणे [वण्णिज्जति] तमज्झयणं विहारकप्पो २६। चरण–चारित्तं तस्स विही चरणविही, समेदो चरणविही वण्णिज्जति जत्थ अज्झयणे तमज्झयणं चरणविही २७। आउरो–गिलाणो, तं किरियातीतं णातुं गीतत्था पच्चक्खावेंति, दिणे दिणे दव्वहासं करेंता अंते य सव्वदव्वदातणताए भत्ते वेरग्गं जणेंता भत्ते णितण्हस्स भवचरिमपच्चक्खाणं कारेंति, एवं जत्थऽज्झयणे सवित्थरं वण्णिज्जइ तमज्झयणं आउरपच्चक्खाणं २८। थेरकप्पेणं जिणकप्पेण वा विहरित्ता अंते थेरकप्पिया बारस वासे संलेहं करेत्ता, जिणकप्पिया पुण विहारेणेव [पत्र० २१५ प्र०] संलीढा तहा वि जहाजुत्तं संलेहं करेत्ता निव्वाघातं सचेट्ठा चेव भवचरिमं पच्चक्खंति, एत सवित्थरं जत्थऽज्झयणे वण्णिज्जति तमज्झयणं महापच्चक्खाणं २९। एते अज्झयणा जहाभिधाणत्था भणिया ॥

उक्तं उक्कालियं। इयाणिं कालियं—

८२ से किं त कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा–उत्तरज्झयणाइं १ दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीहं ५ महाणिसीहं ६ इसिभासियाइं ७ जंबुद्दीवपण्णत्ती

१ "वीयरागंश्रुतम्‌ प्रज्ञापना" इति हारिभद्रवृत्तौ ॥ २ कालियं अणेगविहं? कालियं अणेगविहं अणेग च सं शु० । नाम पाठभ्रूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मतोऽस्ति ॥

८ दीवसागरपण्णत्ती ९ चंदपण्णत्ती १० खुड्डियाविमाणपविभत्ती ११ महल्लियाविमाणपविभत्ती १२ अंगचूलिया १३ वंगचूलिया[1] १४ विवाहचूलिया[2] १५ अरुणोववाए[3] १६ गरुलोववाए १७ धरणोववाए १८ वेसमणोववाए १९ देविंदोववाए २० वेलंधरोववाए २१ उट्ठाणसुयं २२ समुट्ठाणसुयं २३ नागपरियाणियाओ[4] २४ निरयावलियाओ २५ कप्पवडिंसियाओ २६ पुप्फियाओ २७ पुप्फचूलियाओ २८ वण्हीदसाओ[6] २९ ।

८२. से किं तं कालियं इत्यादि सुत्तं । जं इमस्स निसीहस्स सुत्तत्थेहिं वित्थिण्णतरं तं महाणिसीहं ६ । सोहम्मादिसु जे विमणा ते आवलितेतरट्ठिते पतिविभागेण विभयइ जमज्झयण तं विमाणपविभत्ती भण्णति । ते य दो अज्झयणा—तत्थेगं सुत्तत्थेहिं संखित्ततर खुड्डं ति ११, वितियं सुत्तत्थेहिं वित्थिण्णतरं महल्लं ति १२ । अंगस्स चूलिता जहा—आयारस्स पंच चूलातो, दिट्ठिवातस्स वा चूला १३ । वग्गो ति विवक्खावसातो अज्झयणादिसमूहो वग्गो, जहा अंतकडदसाणं अट्ठ वग्गा, अणुत्तरोववातियदसाणं तिण्णि वग्गा, तेसिं चूला वग्गचूला १४ । वियाहो भगवती, तीए चूला वियाहचूला, पुव्वभणितो अभणिओ य समासतो चूलाए अर्थो भण्यतेत्यर्थः १५ । अरुणे णाम देवे तस्समयनिवद्धे अज्झयणे, जाहे तं अज्झयणं उवउत्ते समाणे अणगारे परियट्टेति ताहे से अरुणे देवे समयनिवद्धत्तणतो चलितासणे जेणेव से समणे तेणेव आगच्छित्ता ओवयति, ताहे समणस्स पुरतो अंतद्धिते कतंजली उवउत्ते सुणेमाणे चिट्ठति, समत्ते य भणति—सुभासितं, वरेह वरं ति, इहलोगणिप्पिवासे से समणे पडिभणति—ण मे वरेण अट्ठो त्ति, ताहे से पदाहिणं करेत्ता णमसित्ता य पडिगच्छति १६ । एवं गरुले[7]

---

१ वंगचू॰ ख॰ स॰ ल॰ शु॰ ॥ २ वियाह॰ शु॰ ल॰ ॥ ३ उववाएपदान्तानि सूत्रनामानि अस्मदादृतास्वष्टासु सूत्रप्रतिपु चूर्ण्यादर्शेपु हारि॰वृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकसूत्रयशोदेवीयवृत्तौ च क्रमव्यत्यासेन न्यूनाधिकभावेन च वर्त्तन्ते । तथाहि—अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाण॰ जेसू॰ मोसू॰ मुसू॰ । अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेलधरोववाए देविंदोववाए वेसमणोववाए उट्ठाण॰ डे॰ । अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए वेसमणोववाए उट्ठाण॰ स॰ शु॰ । अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलधरोववाए देविंदोववाए उट्ठाण॰ ख॰ । अरुणोववाए वेलंधरोववाए देविंदोववाए वेसमणोववाए उट्ठाण॰ ल॰ । अथ च—अरुणोववाए इति सूत्रनामव्याख्यानानन्तर हरिभद्रवृत्तौ "एव वरुणोववादादिसु वि भाणियव्व" इति, मलयगिरिवृत्तौ च "एव गरुडोपपातादिष्वपि भावना कार्या" इति, पाक्षिकसूत्रवृत्तौ च "एव वरुणोपपात-गरुडोपपात-वैश्रमणोपपात-वेलन्धरोपपात-देवेन्द्रोपपातेष्वपि वाच्यम्" इति निर्दिष्ट दृश्यते । चूर्ण्यादर्शेपु पुन पाठभेदत्रय दृश्यते—१ श्रीसागरानन्दसूरिमुद्रिते चूर्ण्यादर्शे [पत्र ४९] "एव गरुले वरुणे वेसमणे सक्क-देविंदे वेलधरे य त्ति" इति, २ श्रीविजयदानसूरिसम्पादिते मुद्रितचूर्ण्यादर्शे [पत्र ९०-१] 'एव वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलधरे सक्के-देविंदे य त्ति" इति ३ अस्माभिरादृते शुद्धतमे जेसलमेरुसत्के तालपत्रीयप्राचीनतमचूर्ण्यादर्शे च "एव गरुले धरणे वेसमणे सक्के-देविंदे वेलधरे य त्ति" इति च । श्रीसागरानन्दसूरीयो वाचनाभेद आदर्शान्तरेषु प्राप्यते, श्रीदानसूरीयो वाचनाभेदस्तु नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शे इत्यत सम्भाव्यते—श्रीमद्भिर्दानसूरिभि मुद्रितसूत्रादर्श-चूर्ण्यादर्शान्तर-हारि॰वृत्ति-पाक्षिकवृत्त्याद्यवलोकनेन पाठगलनसम्भावनया सूत्रनामप्रक्षेप क्रमभेदश्चापि विहितोऽस्तीति । अस्माभिस्तु जेसलमेरीयचूर्णिप्रत्यनुसारेण सूत्रपाठो मूले स्थापितोऽस्तीति ॥ ४ ॰परियावणियाओ जे॰ स॰ डे॰ शु॰ । ॰परियावलियाओ ख॰ मो॰ ल॰ ॥ ५ ॰याओ कप्पियाओ कप्पवडिं॰ सर्वासु सूत्रप्रतिपु । श्रीमता चूर्णिकृता कप्पियाओ इति नाम आदृत नास्ति । किञ्च—सर्वास्वपि नन्दिसूत्रप्रतिपु एतन्नाम दृश्यते, श्रीहरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्योः पाक्षिकसूत्रटीकायां चापि एतन्नामव्याख्यान वर्तते । तथाहि—"कप्पियाओ' त्ति सौधर्मादिकल्पगतवक्तव्यतागोचरा ग्रन्थपद्धतय कल्पिका उच्यन्ते ।" नन्दीहारि॰वृत्तिः । एतत्समानैव व्याख्या मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकटीकाया च वर्त्तते ॥ ६ वण्हीदसाओ इति नाम्न प्राक् वण्हीयाओ इत्यधिकं नाम शु॰ । नेद नाम चूर्णि-वृत्त्यादिषु व्याख्यात निर्दिष्ट वाऽस्ति ॥ ७ एव गरुले वरुणे वेसमणे सक्के-देविंदे वेलधरे य त्ति आ॰ मो॰ । एवं वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्के-देविंदे य त्ति दा॰ ॥

१७ धरणे १८ वेसमणे १९ सक्के-देविंदे २० वेलंधरे २१ य त्ति। 'उट्ठाणसुतं' ति अज्झयणं सिंगाइयंज्झे जस्स ण गामस्स वा जाव रायहाणीए वा एगकुलस्स वा समणे आसुरुत्ते कुद्धे उवउत्ते तं उट्ठाणसुते त्ति अज्झयणं परियट्टेति एक्कं दो तिण्णि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायधाणी वा कुलं वा उट्ठेति, उव्वसइ त्ति वुत्तं भवति २२। से चेव समणे [जे० २१५ द्वि०] तस्स गामस्स वा जाव रायधाणीए वा तुट्ठे समाणे पसण्णे पसत्थलेस्से सुहासणत्थे उवउत्ते समुट्ठाणसुतं परियट्टेइ एक्कं दो तिण्णि वा वारे ताहे से गामे वा जाव रायहाणी वा आवासेति। समुट्ठाणसुये त्ति वत्तव्वे वगारलोवातो समुट्ठाणसुये त्ति भणितं। अप्पणा पुव्वुट्ठियं पि कत्तसंकप्पस्स आवासेति २३। 'णागपरियावणिय' त्ति अज्झयणे णाग त्ति–णागकुमारे, तेसु समयनिबद्धं अज्झयणं, तं जदा समणे उवउत्ते परियट्टेति तया अकयसंकप्पस्स वि ते णागकुमारा तत्थत्था चेव परियाणंति, वंदंति णमंसंति भत्तिबहुमाणं च करेंति, सिंगाइयकज्जेसु य वरदा भवतीत्यर्थः २४। निरयावलियासु आवलियपविट्ठेतरे य निरया तग्गामिणो य नर तिरिया पसंगतो वण्णिज्जंति २५। सोहम्मीसाणकप्पेसु जे कप्पविमाणा ते कप्पवडेंसया ते भण्णिता, तेसु य देवीओ जा जेण तवोविसेसेण उववण्णा ता भण्णिता, ताओ य कप्पवडेंसिया भणिया २६। संजमभाव-विगसितो पुप्फितो, संजमभावविउत्तोऽपुप्फितो, अगारभावं परिच्चइत्ता पव्वज्जाभावेण विगसितो पच्छा सीयइ जो, तस्स इहभवे परभवे य विसंवाया दंसिज्जइ जत्थ ता पुप्फिया २७। एसेवऽत्थो सविसेसो पुप्फचूलाए दंसिज्जति २८। अंधगवण्हिणो जे कुले ते अंधगसद्दलोवातो वण्हिणो भणिया, तेसिं चरियं गती सिज्झणा य जत्थ भणिता ता वण्हिदसासतो। दस त्ति–अवत्था अज्झयणा वा २९॥

८३ एवमाइयाइं चउरासीतीपइण्णगसहस्साइं भगवतो अरहओ उसहस्स आइतित्थयरस्स, तहा संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि मज्झिमगाणं जिणवराणं, चोद्दस पइण्णगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणसामिस्स। अहवा जस्स जत्तिया सिस्सा उप्पत्तियाए वेणतियाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेया तस्स तत्तियाइं पइण्णगसहस्साइं, पत्तेयबुद्धा वि तत्तिया चेव। से त्तं कालियं। से त्तं आवस्सयवइरित्तं। से त्तं अणंगपविट्ठं।

८३ भगवओ उसभस्स चउरासीतिसमणसाहस्सीओ होत्था, पइण्णगज्झयणा वि सव्वे कालिय-उक्कालिया चउरासीतिसहस्सा। कहं? जओ ते चउरासीतिं समणसहस्सा अरहंतमग्गउवदिट्ठे जं सुतमणुसरित्ता किंचि णिज्जूहंते ते सव्वे पइण्णगा, अहवा सुतमणुसरतो अप्पणो वयणकोसल्लेण जं धम्मदेसणादिसु भासंते तं सव्वं पइण्णगं, जम्हा अणंतगमपज्जयं सुत्तं दिट्ठं। तं च वयणं नियमा अण्णतरगमाणुपाती भवति तम्हा तं [जे० २११ प्र०] पइण्णगं। एवं चउरासीती पइण्णगसहस्सा भवंतीत्यर्थः। एतेण विधिणा मज्झिमतित्थगराणं संखेज्जा पइण्णगसहस्सा। समणस्स वि भगवतो जम्हा चोद्दस समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपदा तम्हा चोद्दस पइण्णगज्झय-

१ पाठि सं० ॥ ५ भगवओ अरहओ सिरिउसहसामिस्स मज्झिमगाणं जिणाणं संखेज्जाणि पइण्णगसहस्साणि चोद्दस सं० डे० । भगवओ अरहओ उसहस्स समणाणं मज्झिमगाणं इत्यादि ख० । भगवओ उसहसिरि-(सिरिउ)स्स समणस्स मज्झिमगाणं इत्यादि च० ल० । [illegible] मज्झिमगाणं इत्यादुत्तरपाठेन समानोऽपि [illegible] पाठो वृत्तिकृतो सम्मतः । [illegible] मूले [illegible] एव पाठो [illegible] । चूर्णिकृता पुनः सं० डे० पाठभेदेन [illegible] सम्मान्यते ॥ ३ सिरिउसहसामिस्स आइ° सं० । अत्र चूर्णिकृता उसहस्स इति, हरिभद्रसूरिणा सिरिउसहस्स इति मलयगिरिणा च सिरिउसहसामिस्स इति पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥ ४ सीसा पु० सं० चूर्णिं विना ॥

गसहस्सा भवंति । अहवा 'जत्तिया सिस्सा' इत्यादि सुत्तं । इह सुत्ते अपरिमाणा पइण्णगा पइण्णगसामिअपरिमाणत्तणतो, किंच इह सुत्ते पत्तेयबुद्धप्पणीतं पइण्णगं भाणितव्वं । कम्हा? जम्हा पइण्णगपरिमाणेण चेव पत्तेयबुद्धपरिमाणं कीरइ त्ति भणितं 'पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चेव' त्ति । चोदक आह–णणु पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्झते? आचार्याह–तित्थगरपणीयसासणपडिवन्नत्तणतो तस्सीसा भवंतीत्यर्थः ॥

भणितं कालितसुतं अंगबाहिरं च । इदाणिं अंगपविट्ठं—

८४. से किं तं अंगपविट्ठं? अंगपविट्ठं दुवालसविहं पण्णत्तं, तं जहा–आयारो १ सूयं[2]गडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ वियाह[3]पण्णत्ती ५ णायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगडदसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुतं ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

८४. से किं तं अंगपविट्ठं इत्यादि सूत्रम् ॥

८५. से किं तं आयारे? आयारे णं समणाणं णिग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा–णाणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५ । आयारे णं परित्ता वा[4]यणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखे[5]ज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए पढमे अंगे, दो सुयक्खंधा, पणुवीसं अज्झयणा, पंचासीती[6] उद्देसणकाला, पंचासीती[7] समुद्देसणकाला, अट्ठारस पयसहस्साइं[8] पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा । सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया[9], एवं नाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा[10] आघविज्जइ । से तं आयारे[11] १ ।

८५. [से किं तं आयारे इत्यादि सुत्तं] । आयरणं आयारो । गोयरो–भिक्खागहणविधाणं । विणयो–णाणातियो तिविहो वावण्णविधाणो वा । वेणइया–सीसा, तेसिं जहा आसेवणसिक्खा । भासा–सच्चा असच्चामोसा य । अभासा–मोसा सच्चामोसा य । चरण–"वतसमिति०" गाहा [ ] । करणं–"पिंडस्स जा

१ इह तित्थे अपरिमाणा इति पाठो मलयगिरिसूर्युद्धृतचूर्ण्युद्धरणे ॥ २ सूयगड सं० ॥ ३ विवाह° खं० विना ॥ ४ वाइणा लं० ॥ ५ चूर्णौ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, इति पाठो व्यत्यासेन व्याख्यातोऽस्ति ॥ ६-७ °सीइ लं० ॥ ८ °स्साति शु० । °स्साणि मो० मु० ॥ ९ चूर्णिकृता एवंआया इति पाठो न गृहीतो न च व्याख्यातोऽस्ति, किन्तु श्रीहरिभद्रसूरिणा श्रीमलयगिरिणा च एष पाठो गृहीतोऽस्ति, साम्प्रतं च प्राप्तासु सर्वास्वपि नन्दीसूत्रमूलप्रतिषु एष पाठो दृश्यते । समवायाङ्गसूत्रवृत्तावभयदेवसूरिभिः एवंआया इति पाठो नन्दीसूत्रत्वेनाऽऽदृतो व्याख्यातश्चापि दृश्यते । तैरेव च तत्र स्पष्टं निर्दिष्टं यद्–असौ पाठो न समवायाङ्गसूत्रप्रतिषु वर्त्तत इति । एतच्चेदं सूचयति यत्–चूर्णिकारप्राप्तप्रतिभ्यो भिन्ना एव नन्दीसूत्रप्रतयो हरिभद्रादीनां समक्षमासन्, तथाऽभयदेवसूरिप्राप्तासु समवायाङ्गसूत्रप्रतिषु एष पाठो नासीत् । सम्प्रति प्राप्यमाणासु च समवायाङ्गसूत्रस्य कतिपयासु प्रतिषु दृश्यमान एष पाठोऽभयदेवसूरिनिक्षिप्त-व्याख्यातपाठानुरोधेनैवाऽऽयात इति सम्भाव्यते ॥ १० °वणया आ° खं० लं० ॥ ११ आचारे लं० ॥

विसोही०" गाहा [व्यव. भा उ. १ गा २८९]। जाय त्ति–संजमजत्ता, तस्स साहणत्थं आहारो मात त्ति–मायाजुत्तो वेघग्गो। वर्तनं वृत्ती। एवं सव्वं आयारे 'आघविज्जइ' त्ति आख्यायते। सुत्तमत्थस्स य पदार्थ वायणा सा परित्ता, अणंता य भवति, आदि-अतोमक्षमत्तणता। अहवा ओसप्पिणि-उस्सप्पिणिकालं वा पडुच्च परित्ता, तीता ऽणागत सव्वद्धं च पडुच्च अणंता। उवक्कमादि णामादिणिक्खेवकरण य अणियोगदारा, ते आयारे संखेज्जा, तेसिं पण्णवगवयणगोयरत्तणतो। वेढो–छन्दजाती। 'पडिवत्तीओ' त्ति दव्वादिपदत्थब्भुवगमो पडिमा ऽभिग्गहविसेसा य पडिवत्तीओ, ते समासतो सुत्तपडिबद्धा संखेज्जा। तिविहा जेण निक्खेवमादिनिज्जुत्ती तेण संखेज्जा। णव बंभचेरा पिंडेसणा सेज्जा इरिया भासज्जाया वत्थेसणा पाएसणा [जे० २१६ द्वि०] ओग्गहपडिमा सत्तसत्तिकया भावणा विमोत्ती, एते एवं णिसीहवज्जा पणुवीसं अज्झयणा। पचासीती उद्देसणकाला। कहं ? उच्यते—अंगस्स सुतक्खंधस्स अज्झयणस्स उद्देसगस्स, एते चउरो वि एक्को उद्देसणकालो। एवं सत्थपरिण्णाए सत्त उद्देसणकाला, लोगविजयस्स छ, सीओसणिज्जस्स चउरो, सम्मत्तस्स चउरो, लोगसारस्स छ, धुयस्स पंच, महापरिण्णाए सत्त, विमोहायतणस्स अट्ठ, उवधाणसुतस्स चउरो, पिंडेसणाए एक्कारस, सेज्जाए तिण्णि, इरियाए तिण्णि, भासज्जाताए दो, वत्थेसणाए दो, पाएसणाए दो, उग्गहपडिमाए दो, सत्तिक्कयाणं सत्त, भावणाए एक्को, विमोत्तीए एक्को, एते सव्वे पचासीतिं। चोदक आह—जदि दो सुतक्खंधा पणुवीसं अज्झयणा य अट्ठारस पदसहस्सा पदग्गेणं भवंति तो जं भणियं "णवबंभचेरमइओ अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो।" [आचा० नि० गा० ११] त्ति एतं विरुज्झति ?। आचार्य आह—जं एत्थ वि भणितं 'सपंचचूलो अट्ठारसपदसहस्सितो वेदो' त्ति, इह चूलावयवपदेहिं सहितो बहू बहुतरा य पदग्गेणेत्यर्थः। अहवा दो सुतखंधा पणुवीसं अज्झयणा य, एतं आयारग्गसहितस्स आयारस्स पमाणं भणितं। अट्ठारस पदसहस्सा पुण पढमसुतक्खंधस्स णवबंभचेरमइयस्स पमाणं। विचित्तत्थबद्धा य सुत्ता, गुरूवदेसतो सिं अत्थो भाणितव्वो। अक्खररयणाए संखेज्जा अक्खरा। अभिधाणाभिधेयवसतो गमा भवंति ते य अणंता इमेण विधिणा–सुतं मे आउसं तेणं भगवता, तं सुतं मे आउस, तहिं सुतं मे आ०, या सुतं मे आ०, तं सुतं मया आ०, तदा सुतं मदा आ०, तहिं सुतं मया आ०, एवमादिगमेहिं मण्णमाणं अणंतगमं। अक्खरपज्जएहिं अत्थपज्जएहिं य अणंतं। परित्ता तसा, अणंता य भवंति। अणंता थावरा वणप्फइसहिता। सासत त्ति पंचत्थिकाइयाइया। कड त्ति–किरिमा, पयोगतो वीससापरिणामता [जे० २१७ प्र०] वा जहा अब्भा अब्भरुक्खादी। एते सव्वे आयारे सुत्तेण निबद्धा। निज्जुत्ति-संगहणि-हेतूदाहरणादिएहिं य णिकाइया। किंच एते अण्णे य 'जिणपण्णत्ता' जिणप्पणीया भावा 'आघविज्जंति' जाव उवदंसिज्जंति'-एतेसिं पदार्थ पूर्ववद् व्याख्या। एवंविहमायारं अहिज्जिउं से पुरिसे 'एवं' ति जहा आयारे णिबद्धा परूविता य तहा सव्वदव्व-भावाण णाता भवति। विविहे त्ति–अणेगधा भावमाणो विण्णाता भवति। अण्णपावादुगेहिंतो वा विसिट्ठतरे विसिट्ठयर वा भावमाया विण्णाता भवति। सेसं निगमणद्धयं कंठं। से त्तं आयारे १ ॥

८६ से किं तं सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सूइज्जइ, अलोए सूइज्जइ, लोया ऽलोए सूइज्जइ, जीवा सूइज्जंति, अजीवा सूइज्जंति, जीवा ऽजीवा सूइज्जंति, ससमए सूइज्जइ, परसमए सूइज्जइ, ससमय-परसमए सूइज्जइ। सूयगडे णं आसीतस्स किरियावादिसयस्स, चउरासीईए अकिरियवादीणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीणं, बत्तीसाए वेणइयवादीणं, तिण्हं

१ सूइज्जंति खं० सं० ल० ॥ २ °ज्जंति डे० शु० ॥ ३ असीयस्स प० सं० विना ॥ ४ सीए ल० ॥ ५ वादी° सं० शु० मो० मु० ॥

तेसट्ठाणं पावादुयसयाणं वूहं किच्चा ससमए ठाविज्जइ । सूयगडे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए बिइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पदसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं सूयगडे २।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि सुत्तं । 'सूइज्जइ' त्ति जधा णट्ठा सूई तंतुणा सूइज्जइ, उवलब्भतेत्यर्थः । अहवा जहा सूयी पडं सूतेइ तहा सूयगडे जीवादिपदत्था सूइज्जंति । 'वूहं' किच्च त्ति मतिव्वूहं, तेण मतिव्वूहेन ते परप्पवादी णिप्पट्ठ-पसिणे कातुं ससमयस्स सब्भावे ट्ठाविज्जति । उद्देसयपरिमाणं नातुं उद्देसणकाला जाणेज्जा । सेसं कंठं । से त्तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठाविज्जंति, अजीवा ठाविज्जंति, जीवा-ऽजीवा ठाविज्जंति, →लोए ठाविज्जइ, अलोए ठाविज्जइ, लोया-ऽलोए ठाविज्जइ,← ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ, ससमय-परसमए ठाविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला सिहरिणो पब्भारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दहा णदीओ आघविज्जंति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तरियाए वुड्ढीए दसट्ठाणगविवड्ढियाणं भावाणं परूवणया आघविज्जति । ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए तइए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एक्कवीसं उद्देसणकाला, एक्कवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरिं पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति

१ तेवट्ठाण ख० स० जे० डे० ल० । हारि०वृत्तौ समवायाङ्गसूत्रादिषु च तेसट्ठाणं इति पाठो वर्त्तते ॥ २ पासंडियसयाण जे० डे० मो० मु० । श्रीमलयगिरिभिरयमेव पाठ आदृतोऽस्ति । ३ बिदिए शु० । बिईए ल० ॥ ४ °ज्जति ख० शु० ल० डे० ॥ ५ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठ जे० मो० मु० प्रतिषु ससमय-परसमए ठाविज्जइ इति पाठानन्तरं वर्त्तते ॥ ६ ठाणे णं इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥ ७ एगाइयाए एगुत्तरियाणं दसठाण° स० डे० ल० शु० ॥ ८ °वणा जे० मो० ॥ ९ °ज्जति ख० डे० शु० ॥ १० जे० डे० विनाऽन्यत्र सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० समवायाङ्गसूत्रे च । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो० मु० ॥ ११ ख० स० ल० शु० प्रतिषु अणंता गमा अणंता पज्जवा इति नास्ति ॥

परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं ठाणे ३ ।

८७ से किं तं ठाणेत्यादि सुत्तं । 'ठाविज्जंति' त्ति स्वरूपतः स्थाप्यंते, प्रज्ञाप्यंतेत्यर्थः । छिण्ण तडं टङ्क । कूडं ति–जहा वेतड्ढपव्वतोवरि णव सिद्धायतणाइया कूडा । हिमवतादिया सेला । सिहरेण सिहरी, जहा वेतड्ढो । जं कूडं उवरिं अंबखुज्जय तं पब्भारं, जं वा पव्वयस्स उवरिभागे हत्थिकुंभागिइ कूडं णिग्गयं तं पब्भारं । गंगादिया कुंडा । तिमिसादिया गुहा । रुप्प-सुवण्ण-रतणादिया आगरा । पोंडरीयादिया दहा । गंगा-सिंधुमादियाओ णदीओ । सेसं कंठं । से त्तं ठाणे ३ ॥

८८ से किं तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति, जीवाऽजीवा समासिज्जंति, लोए समासिज्जति, अलोए समासिज्जति, लोयाऽलोए समासिज्जति, ससमए समासिज्जति, परसमए समासिज्जति, ससमय-परसमए समासिज्जति । समवाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणगसयविवड्ढियाणं भावाणं परूवणा आघविज्जति । दुवालसंगस्स य गणिपिडगस्स पल्लवग्गे समासिज्जति । समवाए णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगट्ठयाए चउत्थे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे अज्झयणे, एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले, एगे चोयाले पदसयसहस्से पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जति णिदंसिज्जति उवदंसिज्जति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जति । से त्तं समवाए ४ ।

८८ से किं तं समवाए इत्यादि । समवाए णिक्खेवो चउव्विहो । दव्वे सचित्तादिदव्वसमवातो, भावसमवातो इमं चेव अंगं । अहवा जत्थ वा एगत्थ ओदइयाइ बहू भावा सण्णिवातियसंजोगा वा भावसमवातो । भावसमवाए वा इमं णिरुत्तं–जीवा 'समासिज्जंति' सम आसइज्जंति । सम ति–ण विसमं, जहावस्थितं अणूनातिरिक्तं इत्यर्थः । आसइज्जंति–आश्रीयंते, बुद्ध्या ज्ञानेन गृह्यंतेत्यर्थः । अहवा समास त्ति–इहसग्गेऽभिहित[जे० २१७ द्वि०]सव्वपदत्थाण समासतो विमरिसो त्ति । सेसं कंठं । उक्तः समवायः ४॥

---

१ चयपा च त क इ ॥ २ ज्जंति जं पी के क ॥ ३ ज्जा एवमे ॥ ४ कसविड्ढस्स मो के ॥ ५ पल्लवग्गे सं । पल्लवग्गो इत्यादी—"तथा द्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य 'पल्लवग्गे' त्ति पर्यवपरिमाणं अभिधेयादितद्धर्मसंख्यानम्, यथा परित्ता तसा" इत्यादि । पर्यवसन्दस्य च 'पज्ज' त्ति निर्देशः प्राकृतत्वात् पर्यायाः पल्लवः इत्यादिवदिति । अथवा पल्लवा इव पल्लवाः–अवयवास्तत्परिमाणम् ।" इति समवायाङ्गसूत्रवृत्तिः १११-२ पत्रे ॥ ६ वायस्स चं जं के मो ॥ ७ जेसं के० प्रत्यन्तर–सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं चं जं इ । सिलोगा संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं मो इ ॥ ८ चया क ॥ ९ ज्जंति सं चं ॥

८९. से किं तं वियाहे? वियाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा वियाहिज्जंति, जीवा-ऽजीवा वियाहिज्जंति, लोए वियाहिज्जति, अलोए वियाहिज्जति, लोया-ऽलोए वियाहिज्जति, ससमए वियाहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति, ससमय-परसमए वियाहिज्जति। वियाहे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्झयणसते, दस उद्देसगसहस्साइं, दस समुद्देसगसहस्साइं, छत्तीसं वागरणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीतिं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ। से त्तं वियाहे ५।

८९. से किं तं वियाहेत्यादि। 'वियाहे' त्ति व्याख्या, इह जीवादयो व्याख्यायंते। इह सतं चेव अज्झयणसण्णं। गोतमादिएहिं पुट्ठे अपुट्ठे वा जो पण्हो तव्वागरणं [च]। सेसं कंठं। से त्तं वियाहे ५॥

९०. से किं तं णायाधम्मकहाओ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। दस धम्मकहाणं वग्गा। तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाणगकोडीओ भवंति त्ति मक्खायं। णायाधम्मकहाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,

---

१-२ विवाहे जे० मो० मु० ॥ ३ विवाहस्स णं जे० डे० मो० मु० ॥ ४ डे० विनाऽन्यत्र—सिलोगा, सखेज्जाओ संगहणीओ। से णं ख० स० ल० शु०। सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ। से ण जे० मो० ॥ ५ °स्साइं, चउरासीई पयसहस्साइं पयग्गेणं, इति समवायाङ्गसूत्रे पाठ। अत्राभयदेवीया टीका—"चतुरशीति पदसहस्राणि पदाग्रेणेति, समवायापेक्षया द्विगुणताया इहानाश्रयणात्, अन्यथा द्वे लक्षे अष्टाशीति सहस्राणि च भवन्तीति।" इति ११६-१ पत्रे। तथैतदर्थसमर्थक 'विवाहपण्णत्तीए ण भगवतीए चउरासीइ पदसहस्सा पदग्गेण" इति समवायाङ्गे ८४ स्थानके सूत्रपाठोऽपि वर्त्तते॥ ६ °वणया ल०॥ ७ °ज्जंति खं० सं० ल० ॥ ८ विवाहे ख० स० विना॥ ९ चेतियाति वणसंडाति शु०॥ १० °पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह-पारलोइया इड्ढिविसेसा जे० मो० मु०। 'धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइयइड्ढीविसेसा" इति समवायाङ्गे ॥ ११ पव्वज्जापरियागा ख० स० डे० ल० शु०। "पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा सलेहणाओ" इति समवायाङ्गे ॥ १२ वग्गा पण्णत्ता। तत्थ स० ॥

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्खंधा, एगूणवीसं णायज्झयणा, एगूणवीसं उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जति । से त्तं णायाधम्मकहाओ ६ ।

९० से किं तं णायाधम्मकहाओ इत्यादि सुत्तं । एकूणवीसं णातज्झयणा, णाय त्ति—आहरणा, दिट्ठंतियो वा भज्जति जेऽज्झो ते णाता, एते पढमसुतक्खंधे । अहिंसादिलक्खणस्स धम्मस्स कहा धम्मकहा, धम्मियाओ वा कहाओ धम्मकहाओ, अक्खाणग त्ति वुत्तं भवति, एते बितियसुतक्खंधे । पढम बितियसुतक्खंधे भणिताणं णाता-धम्मकहाण णगरादिया भण्णति । बितिये सुतक्खंधे दस धम्मकहाणं वग्गा । वग्गो त्ति—समूहो, तम्मि से-सणविसिट्ठा दस अज्झयणा चेव ते दट्ठव्वा । एगूणवीसं णाता, दस य धम्मकहाओ । तत्थ णातेसु आदिमा दस णाता चेव, ण तेसु अक्खादियादिसमवो । सेसा णव णाता, तेसु एक्केक्के णाते पंचालीसं पंचालीसं अक्खाइयाओ भवंति, तत्थ वि एक्केक्काए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासताई भवंति, तत्थ वि एक्केक्काए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयसताई भवंति, एवं एते णव कोडीओ । एताओ धम्मकहासु सोहेतव्व त्ति काउं एकामवीसाए णाताण दसण्ह य धम्मकहाण विसमो कज्जति—दस णाता दस णव य धम्मकहातो दसहिं परोप्परं सुद्धा । एवं विसेसे कते सेसा णव णाता, ते णव पंचालीसाए गुणिता जाता तिण्णि सता सट्ठा अक्खाइयाणं, एते अक्खाइयपंचसतेहिं सोधिता, तत्थ सतं पंचासं सतं, तं उवक्खाइयपंचसतेहिं गुणितं जाता उवक्खाइताणं सपादं सहस्सा, ते पंचहिं अक्खाइओवक्खाइयसतेहिं गुणिया एव जाता अद्धुट्ठातो अक्खाइयकोडीतो । 'पदग्गेणं' ति उवसग्गपदं णिवातपदं णामियपदं अक्खातपदं मिस्सपदं च, एते पदे अहिकिच्च पंचसत्[पे० २१८ प्र०]त्ता छावत्तरिं च सहस्सा पदग्गेण भवंति, अहवा सुत्तालावयपदग्गेण संखेज्जाइं पदसहस्साइं भवंति । अहवा छावत्तरी-तियसहस्सपंचसया वि संखेज्जपदसहस्सेहिं ण विरुज्झति । सेसं कंठं । से तं णाताधम्मकहाओ ६ ॥

९१ से किं तं उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणोवासगाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चाया परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं सील-व्वय-गुण वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ

१ डे मो मु विनाऽन्यत्र—सिलोगा संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं प सं ल मु । सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं खं ॥ २ वीसं अज्झयणा ल खं डे ल मो मु धम्मकहाणं च । चूर्णिकृता मलयगिरिणा च नैष स्वीकृत एष पाठो व्याख्यातोऽस्ति ॥ ३-४ एगूणवीसं ल ॥ ५ संखेज्जा पयसहस्सा, डे मो ॥ ६ पयसयसह सवसमाडे ॥ ७ थावरा प सं ल मु ॥ ८ आघविज्जंति ल सं डे मु ल ॥ ९ दस य धम्म डे ॥ १० वेतिपातिं मु ॥ ११ वणसंडाइं खं ल मु नास्ति ॥ १२ पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ डे मो मु ॥ १३ इहलोय-परलोइया इड्ढिविसे डे मो मु ॥ १४ या पव्वज्जाओ परि डे ल मु ॥

भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, [1]संखेज्जाओ संगहणीओ, [2]संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, [3]संखेज्जाइं [4]पदसहस्साइं पयग्गेणं । संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरू[5]वणा आघवि[6]ज्जति । से त्तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं त उवासगदसातो इत्यादि सुत्तं । उवासक त्ति—सावता । तेसिं अणुव्वत-गुण-सीलव्वतोवदेसणा दससु अज्झयणेसु [7]अक्खात त्ति उवासगदसा भणिता । तासु सुत्तपदग्गं एक्कारस लक्खा बावण्णं च सहस्सा पदग्गेणं । सुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं । सेसं कंठं । से तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं [8]वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-[9]पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इह[10]लोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोग[11]परिच्चागा प[12]व्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं [13]→देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाईओ, पुणबोहिलाभा← अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगड[14]दसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जा[15]ओ संगहणीओ, संखेज्जा[16]ओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए अट्ठमे अंगे, [17]एगे सुयक्खंधे, अट्ठ

---

१ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ २ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ३ संखेज्जा पदसहस्सा जे० मो० मु० ॥ ४ पदसयसहस्साइं समवायाङ्गे ॥ ५ °वणया ल० ॥ ६ °ज्जति ख० स० डे० ल० ॥ ७ अक्खाइज्जति त्ति आ० दा० ॥ ८ वणसंडाइं इति ख० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ९ °पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० ल० मो० मु० ॥ १० °लोइय-पारलोइया इड्ढिवि° मो० । °लोइय-परलोइया इड्ढिवि° जे० मु० ॥ ११ भोगपरिभोगा ख० ल० शु० ॥ १२ पव्वज्जा परियागा सुत° ख० । पव्वज्जा सुत° ल० ॥ १३ → ←एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठ मो० मु० नास्ति ॥ १४ °दसाणं जे० स० ॥ १५ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० मु० नास्ति ॥ १६ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ इति ख० सं० ल० शु० नास्ति ॥

१७ एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पद-[सत]सहस्साइं पयग्गेणं इति समवायाङ्गसूत्रे पाठः । अत्राभयदेवीया टीका—

"नवरं 'दस अज्झयण' त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् । यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट वर्गाः, नन्द्यामपि तथापठितत्वात् । तद्वृत्तिश्चयम् —'अट्ठ वग्ग' त्ति अत्र वर्गः समूहः, स चान्तकृतानामध्ययनानां वा । सर्वाणि चैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततो भणित 'अट्ठ उद्देसणकाला' इत्यादि " । इह च दश उद्देशनकाला अभिधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः । तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति, तानि च किल त्रयोविंशतिर्लक्षाणि चत्वारि च सहस्राणीति ।" १२१-२ पत्रे ॥

वग्गा, अट्ठ उद्देसणकाला, अट्ठ समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परूविज्जति दंसिज्जति णिदंसिज्जति उवदंसिज्जति। से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जति। से त्त अंतगडदसाओ ८।

९२. से किं तं अंतगडदसाओ इत्यादि सुत्तं। अंतकडदस त्ति–कम्मणो संसारस्स वा अंतो कडो जेहिं ते अंतकडा, ते य तित्थकरादी, दस त्ति–पढमवग्गे दस अज्झयणा त्ति तेस्सरसतो अंतकडदस त्ति। अहवा दस त्ति–अवत्था, तदंते जा अवस्था सा वण्णिज्जति त्ति अतो अंतकडदसा। सरीरा-ऽऽयुदसाण वा दसत्थं अंतकडो त्ति अंतकडदसा। णवरं 'अंतकडकिरियाओ' त्ति अस्य व्याख्या–अंतकडाण किरिया अंतकडकिरिया, बहुत्ता अंतकडकिरियाओ त्ति भणिता। किरिय त्ति–क्रिया, चर्या इत्यर्थः। अहवा किरिय त्ति–कर्मक्षपणक्रिया, सा य सेलेसिअवत्थाए। अहवा किरिय त्ति–सहुमकिरियज्झाण। अहवा घातिकम्मेसु अंतकडेसु किरिय त्ति–कम्मबंधो, सा य इरियावहितो त्ति भणितं होति। एतं च आघविज्जति। वग्गो त्ति–समूहो, सो य अंतकडाण अज्झयणाण वा। सव्वे अज्झयणा जुगवं उद्दिसंति। तासु सुत्तपदग्गं तवीस लक्खा चतुरो य सहस्सा पदग्गेणं। संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि सुत्तालावगपदग्गेण। सेसं कंठं। से त्तं अंतगडदसा ८॥

९३ से किं तं अणुत्तरोववाइयदसाओ? अणुत्तरोववाइयदसासु णं अणुत्तरोववाइयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-परलोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जपरियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं अणुत्तरोववाइयत्ते उववत्ती सुकुलपच्चायादीओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति। अणुत्तरोववाइयदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा *सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ।* से णं अंगट्ठयाए णवमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा

---

१ वग्गा खं० ॥ २ °विज्जति खं० सं० डे० ल० शु० ॥ ३ तस्सागमत सुत्तं ॥ ४ वणसंडाइं इति मो० ॥ एवं पत्ते ॥ ५ धम्मायरिया धम्मकहाओ मो० शु० ॥ ६ लोइय-परलोइया जे० मो० शु० ॥ ७ अणुत्तरोपपत्ते ह० । अणुत्तरोपपात त्ति खं० डे० ॥ ८ दसाणं डे० ल० मो० ॥ ९ वायणा ल० ॥ १० संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ इति ल० नास्ति ॥ ११ संखेज्जाओ संगहणीओ डे० मो० नास्ति ॥ १२ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ खं० सं० ल० शु० नास्ति ॥ १३ एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा, दस उद्देसणकाला दस समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० इति समवायाङ्गे। अभयदेवपादाः–"इह अध्ययनसमूहो वर्गः वर्गे वर्गे दशाध्ययनानि, वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यतस्त्रय उद्देशनकाला भवन्ति, एवमेव च समुद्देशनकाला इह तु दृश्यन्ते दशेति, अत्राभिप्रायो न ज्ञायत इति।" ११२-१ पत्र ॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ।

९३. से किं तं अणुत्तरोववातियदसा इत्यादि सुत्तं । णत्थि जस्सुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमुववातो उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्स सो अणुत्तरोववाइओ, तेसिं बहुवयणातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोववाइय त्ति, वग्गे वग्गे य दसऽज्झयण त्ति अतो अणुत्तरोववातियदसा भणिता । संसारे सुभभावं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा गतिचतुक्कं पडुच्च अणुत्तरः, अहवा देवगतीए चेव अणुत्तरः । अणुत्तरदेवेसु जेसिं उववातो तेसिं णगरादिया कहिज्जंति । इह वग्गो त्ति—समूहो, सो य अज्झयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेसिं पदग्गं छातालीसं लक्खा अट्ठ य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेस कंठं । से त्तं अणुत्तरोववाइयदसा ९ ॥

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्ठुत्तरं पसिणसयं, अट्ठुत्तरं अपसिणसयं, अट्ठुत्तरं पसिणा-ऽपसिणसयं, अण्णे वि विविधा दिव्वा विज्जातिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्ठयाए दसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्झयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जइ । से त्तं पण्हावागरणाइं १० ।

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं इत्यादि सुत्तं । पण्हो त्ति—पुच्छा, पडिवयणं वागरणं, प्रत्युत्तरमित्यर्थः । तम्हि पण्हावागरणे अंगे पचासवदारादढा व्याख्येयाः परप्पवादिणो य । अंगुट्ठ-बाहुपसिणादियाणं च पसिणाणं अट्ठुत्तरं सत । किंच—जे विज्ज-मंता विधीए जविज्जमाणा अपुच्छिता चेव सुभासुभं कहयंति तारिसाणं अपसिणाणं अट्ठुत्तरं सत । अंगुट्ठादिपसिणभावं अपसिणभावं च वाकरेंति तारिसाणं पसिणा-ऽपसिणविज्जाणं अट्ठुत्तरं सत । अहवा अणंतरा जे कहेंति ते पसिणा, परपरे पसिणापसिणा, तं पुण विज्जाकहित कहेंतस्स परपरं

१ °वणया ल० ॥ २ °विज्जति खं० सं० डे० ल० शु० ॥ ३ °सयं, तं जहा—अंगुट्ठपसिणाइं, बाहुपसिणाइं अद्दागपसिणाइं, अण्णे वि जे० डे० ल० मो० मु० । नायं पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्गृहीतो व्याख्यातो वा विद्यते ॥ ४ वि विचित्ता दिव्वा सर्वासु सूत्रप्रतिषु । हारि० वृत्तौ एष एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति । मलयगिरिपादा पुनः चूर्णिकारमनुसृता सन्ति ॥ ५ दिव्वा शु० सं० एव वर्त्तते ॥ ६ दिव्वा सधाणा संधणंति इति चूर्णिकृन्निर्दिष्टः पाठभेदः, दिव्या सन्धाना सन्धनन्ति इत्यर्थः ॥ ७ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० नास्ति ॥ ८ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ खं० सं० ल० शु० समवायाङ्गे च नास्ति ॥ ९ °विज्जंति खं० सं० डे० ल० शु० ॥

भवति । अण्णे य विविधा विज्जातिसता करिज्जंति । किंच णागा सुवण्णा अण्णे य भवणवासिणो ते विज्ज-मंताभिरिसिता आगत्ता साहुणा सह सपवति–मल्पं करेंति । पाढंतरं वा "विज्जा समाणा समणंति" सद्दु सुत्ता भवति, भरदाम गज्जितादि वा कुर्वंति । दसममगस्स पदग्गं बाणउतिं सयसहस्सा सोलस य सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । सेसं कंठं । से त्तं पण्हावागरणाइं १० ॥

९५. से किं त विवागसुत ? विवागसुते ण सुकड-दुक्कडाणं कम्माणं फल-विवागा आघविज्जति । तत्थ णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से[1] किं त दुहविवागा ? दुहविवागेसु ण दुहविवागाण णगराइ उज्जाणाइ वणसंडाइं चेइयाइं समोसरणाइ रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोइय-परलोइया [5]रिद्धिविसेसा निरयगमणाइं दुहपरपराओ संसारभवपवचा दुकुलपच्चायाईओ दुलहबोहियत्तं आघविज्जति । से[2] त्त दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु णं सुहविवागाण णगराइं उज्जाणाइं वणसंडाइ चेइयाइ समोसरणाइं रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोइअ-परलोइया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुहपरंपराओ सुकुलपच्चायादीओ पुणबोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जति ।

विवागसुते णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण अंगट्ठयाए एक्कारसमे अंगे, दो सुयक्खंधा, वीसं अज्झयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाइ पंदसहस्साइ पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दसिज्जंति णिदंसिज्जति उवदंसिज्जति । से एवआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एव चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति । से त्तं विवागसुतं ११ ।

९५. से किं तं विवागसुत इत्यादि । विविधो पाकः विपचनं वा विपाकः, कर्मणां शुभमशुभो वा

---

१ विपाके आघविज्जइ जे मो सु ॥ २ से किं तं दुहविवागा इति नं सु नास्ति । समवायाङ्गे प्रस्तावेऽस्त्ये ॥ ३ धम्मायरिया धम्मकहाओ सं जे डे ल मो सु ॥ ४ इहलोग-परलोगिया सं ॥ ५ इड्डिवि मोसु ॥ ६ भमणे च ॥ ७ भवपवंचा सं ल समवायाङ्गे च ॥ ८ से त्तं दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा ? इति नं सु नास्ति । समवायाङ्गे तु वर्त्तते ॥ ९ धम्मायरिया धम्मकहाओ नं डे ॥ १० इहलोग-परलोगिया इड्डिविसेसा डे मो सु ॥ ११ उज्जा परि० च ॥ १२ विवागसुयस्स णं डे मो सु । विवागेसु णं सु ॥ १३ पदसतसहस्साइं समवायाङ्गे ॥ १४ विज्जंति सं डे ल सु ॥

जम्मि सुत्ते विपाको कहिज्जति तं विपाकसुतं । विपाकसुतस्स सुत्तपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीतिं च लक्खा बत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं [जे० २१९ प्र०] । सेसं कंठं । से त्तं विवागसुतं ११ ॥

९६. से किं तं दिट्ठिवाए? दिट्ठिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जेति । से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ ।

९६. से किं तं दिट्ठिवाते त्ति । दृष्टिर्दर्शनम्, वदनं वादः, दृष्टीना वादो दृष्टिवादः, तत्र वा दृष्टीनां पातः दृष्टिपातः, सभेदभिण्णाओ सव्वणतदिट्ठीओ तत्थ वदंति पतंति य त्ति अतो दिट्ठिवातो । सो य पंचभेदो- परिकम्मादि ॥

९७. से किं तं परिकम्मे? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे १ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुतअचुतसेणियापरिकम्मे ७ ।

९८. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदावत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ । से त्तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ ।

९९. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—माउगापयाइं १ एगट्ठियपयाइं २ अट्ठापयाइं ३ पाढो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६ रासिबद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ णंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ । से त्तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१००. से किं तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे? पुट्ठसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—पाढो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० पुट्ठावत्तं ११ । से त्तं पुट्ठसेणियापरिकम्मे ३ ।

१०१. से किं तं ओगाढसेणियापरिकम्मे? ओगाढसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे

१ °विज्जति खं० सं० डे० ल० ॥ २ परिकम्म जे० मो० मु० विना ॥ ३ सुयाइं खं० ॥ ४ ओगाहणसे° समवायाङ्गे ॥ ५ विजहणसे° खं० सं० ल० शु० । विप्पजहसे° समवायाङ्गे ॥ ६ चुयअचुय° ल० शु० । चुयाचुय° डे० ॥ ७ अट्ठप° सं० ॥ ८-९ °परिग्गहो ल० ॥ १० सिद्धावट्ठ सं० । सिद्धबद्ध समवायाङ्गे ॥ ११ °परिग्गहो जे० ॥ १२ °स्सावट्टं सं० । मणुस्सबद्धं समवायाङ्गे ॥ १३ °पयाइं एवमादि । से त्त पुट्ठ° खं० सं० । °पयाइं २ इच्चाइ । से त्तं पुट्ठ° ल० ॥ १४ °परिग्गहो जे० ॥

पण्णत्ते, त जहा–पादो १ आमासपयाइं २ केउभूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुणं ५ दुगुण ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० ओगाढावत्त ११ । से त्तं ओगाढसेणियापरिकम्मे ४ ।

१०२ से किं त उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पादो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्ध ४ एगगुणं ५ दुगुण ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० उवसंपज्जणावत्तं ११ । से त्तं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३ से किं तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्पजहणसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, त जहा–पादो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० विप्पजहणावत्तं ११ । से त्तं विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४ से किं त चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, तं जहा–पादो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुण ६ तिगुणं ७ केउभूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० चुयमचुयावत्तं ११ । से त्तं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

९७–१०४ तत्थ परिकम्मे त्ति जोग्गाकरणं, जहा गणितस्स सोलस परिकम्मा, तग्गहितसुत्तत्थो सेस गणितस्स जोग्गो भवति । एवं गहितपरिकम्मसुत्तत्थो सेससुत्तादिदिट्ठिवायसुतस्स जोग्गो भवति । त च परिकम्मसुतं सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूलभेदयो सत्तविहं, उत्तरभेदतो तेसीतिविहं मातुयपदादी । तं च सव्वं समूलुत्तरभेदं सुत्तत्थतो वोच्छिण्णं, जहागतसम्पदायं वा वच्चं ॥ किंच—

१०५. [इच्चेइयाइ सत्त परिकम्माइं, छ ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइ,] छ चउक्कणइयाइं, सत्त तेरासियाइं । से त्तं परिकम्मे १ ।

१०५ एतेसिं सत्तण्हं परिकम्माण छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धान्तप्रज्ञापना एवेत्यर्थः । आजीविकापार्संडत्था गोसालप्पवत्तिता, तेसिं सिद्धंतमतेण चुता-ऽचुतसहिता सत्त परिकम्मा पण्णविज्जंति । इदाणिं परिकम्मे णतचिंता—णेगमो दुविहो–संगहितो असंगहितो य, संगहितो संगहं पविट्ठो, असंगहितो ववहारं, तम्हा

१ केउभूय १ इच्चादि । से त्तं ओगाढ ख सं डे ल ॥ २ परिग्गहो जे ॥ ३ पाढो १ इच्चादि । से त्तं उव सं डे ल ॥ ४–५ विप्पजहण ख सं ल मु ॥ ६ पाढो १ इच्चादि । से त्तं विप्पजहण ख सं डे ल ॥ ७–८ चुयमचुय खे डे ल ॥ ९ पाढाइ । से त्तं चुय खं सं डे ल ॥ १० चुयअचुय डे ल । चुयाचुय खं ॥ ११ एतत् चतुरस्रकोष्ठकान्तर्वर्ति सूत्रं सूत्रप्रतिषु न वर्तते । चूर्णि-वृत्तिकृद्भ्यां पुनरत्रत्य सूत्रांश इति समवायाङ्गसूत्रात् सूत्रांशोऽयमत्रोद्धृतोऽस्ति ॥ १२ याइं सत्त । से त्तं सं ॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सद्दाइया य एक्को, एवं चतुरो णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चिंतिज्जंति त्ति अतो भणितं–'छ चतुक्कणइयाइं' ति । ते चेव आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते— जम्हा ते सव्वं जगं त्र्यात्मकं इच्छंति, जहा–जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिंताए वि ते तिविहं णयमिच्छंति, तं जहा–दव्वट्ठितो पज्जवट्ठितो उभयट्ठितो, अतो [जे० २१९ द्वि०] भणियं–'सत्त तेरासियाइं' ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिंताए चिंतयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं बावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा–उज्जुसुतं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ संजूहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वेयावच्चं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभद्दं २० पण्णासं २१ दुप्परिग्गहं २२ ।

१ सुत्ताइं बावीसाइं पण्णत्ताइं, तं जहा ख० स० । सुत्ताइं अट्ठासीतिं भवतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविंशतिसूत्रनाम्नां नन्दिसूत्रप्रत्यन्तरेषु पाठभेदोऽधउल्लिखितकोष्ठकाद् ज्ञातव्य —

ख० प्रति	स० प्रति	जे० प्रति	डे० प्रति	ल० प्रति	मो० प्रति	शु० प्रति
१ उज्जुसुत	०	०	०	०	०	०
२ परिणयापरिणय	०	०	०	०	०	०
३ बहुभंगिय	०	०	बहुभगीय	बहुभगीय	०	०
४ विज्झवियच्चिय	विज्झायव्वाविय	विजयचरिय	विजयविधत्त	विजयविधत्त	विजयचरिय	वियच्चवियत्त
५ अणतरं	०	०	०	०	०	०
६ परंपरं	०	०	०	०	०	०
७ समाण	मासाण	मासाण	समाणसं	समाणसं	सामाण	समाएसं
८ सजूह	सजूह	सजह	जूह	जूह	सजूह	जूह
९ भिण्ण	०	०	सभिण्ण	सभिण्ण	०	०
१० आयच्चाइ	आयच्चाय	आहच्चाय	आहव्वय	आहव्वय	आहव्वाय	आहव्वाय
११ सावट्ठिपत्त	सोवत्थिप्पण्ण	सोमत्थिप्पन्न	सोवत्थियवत्त	सोमच्छिप्पन्न	सोवत्थिअ घट	सोवत्थिप्पन
१२ णंदावत्त	०	मदावत्त	०	०	०	०
१३ बहुल	०	०	०	०	०	०
१४ पुट्ठापुट्ठ	०	०	पुच्छापुच्छ	०	०	०
१५ वेयावच्च	०	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्त	०
१६ एवभूय	०	०	०	०	०	०
१७ भूयावत्त	दूयावत्त	दूयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त
१८	वत्तमाणय	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त
१९ समभिरूढ	०	०	०	०	०	०
२० सव्वओभद्द	०	०	०	०	०	०
२१ पण्णास	०	०	०	०	०	०
२२ दुपरिग्गह	दुप्पडिग्गह	दुप्पडिग्गह	परिग्गह	०	दुप्पडिग्गह	०

अत्र शून्येन पाठभेदाभावो ज्ञातव्य, न तु पाठाभाव इति ॥

इच्चेयाइं[1] बावीसं सुत्ताइं[2] छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं १, इच्चेयाइं[3] बावीसं सुत्ताइं[4] अच्छिण्णच्छेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं २, इच्चेयाइं[5] बावीसं सुत्ताइं[6] तिगणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ३, इच्चेयाइं[7] बावीसं सुत्ताइं[8] चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठासीतिं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायं[9]। से त्त सुत्ताइं २।

१०६ 'सुत्ताइं' ति उज्जुसुताइयाइं बावीसं सुत्ताइं। ताणि य सुत्ताइं सव्वदव्वाण सव्वपज्जवाण सव्वणयाण सव्वभंगविकप्पाण य दंसगाणि, सव्वस्स य पुव्वगतसुतस्स अत्थस्स य सूयग त्ति, अतो ते सूयणत्तातो सुत्ता भणिता जहाभिधाणत्थाओ। ते य इदाणिं सुत्त-ऽत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसंप्रदायतो वा वच्चा। ते चेव बावीसं सुत्ता विभागतो अट्ठासीतिं सुत्ता भवति इमेण विहिणा—बावीसं सुत्ता छिण्णच्छेदणयाभिप्पायतो। कहं छिण्णच्छेदणतो त्ति भण्णति? उच्यते—जो णया सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा—“धम्मो मंगलमुक्किट्ठं०” त्ति सिलोगो [दसवे० अ० १ गा० १]। एस सिलोगो सुत्त-ऽत्थतो पत्तेयं छेदेण ठितो, णो बितियादिसिलोगे अवेक्खइ त्ति सुत्तं भवति। छिण्णो छेदो जस्स स भवति छिण्णच्छेदः, प्रत्येकं कल्पितपर्यन्त इत्यर्थः। एते एवं बावीसं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठिता। एते चेव बावीसं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता। अच्छिण्णच्छेदणतो जहा—एसेव दुमपुप्फियपढमसिलोगो अत्थतो बितियाइसिलोगे अवेक्खमाणो, बितियादिया य पढमं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो भवति। एवं पि बावीसं सुत्ता अक्खररयणविभागट्ठिता वि अत्थतो अण्णोण्णमवेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेदणयट्ठित त्ति भण्णंति। णयचिंताए वि बावीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाइं तिकणइयाइं' ति त्रिकनयाभिप्रायतो चिन्त्यन्त इत्यर्थः। तहा ससमये वि णयचिंताए बावीसं चेव सुत्ता चउक्कणइया। एवं चतुरो [जे० २२० प्र०] बावीसातो अट्ठासीतिं सुत्ता भवति। से त्त सुत्ताइं २॥

१०७ से किं तं पुव्वगते? पुव्वगते चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—उप्पादपुव्वं १ अग्गेणीयं[10] २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्पवातं ४ णाणप्पवातं ५ सच्चप्पवादं ६ आयप्पवादं ७ कम्मप्पवादं ८ पच्चक्खाणं[11] ९ विज्जाणुप्पवादं १० अवंझं ११ पाणायुं[13] १२ किरियाविसालं[12] १३ लोगबिंदुसारं १४। उप्पायस्स[14] णं पुव्वस्स दस वत्थू चत्तारि चुलियवत्थू[15] पण्णत्ता १। अग्गेणीयस्स[16] णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू दुवालस चुलियवत्थू[17] पण्णत्ता २। वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चुलियवत्थू[18] पण्णत्ता ३। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस

१-३-५-७ इच्चेइयाइं मो० मु० ॥ २-४-६-८ सुत्ताइं इति पदं खं० सं० एव वर्तते नान्यत्र समवायाङ्गेऽपि नास्ति ॥ ९. भवंति इत्यमक्खायं ड० ॥ १० अग्गेणियं ड० ॥ ११ पच्चक्खाणं खं० सं० विना ॥ १२ विसालु जे० ड० मो० मु० ॥ १३ पाणाउं जे०। पाणाउ डे० ल० मो० मु० ॥ १४ अस्मिन् सूत्रे उप्पायस्स णं पुव्वस्स, अग्गेणीयस्स णं पुव्वस्स, वीरियस्स णं पुव्वस्स इत्यादिषु चतुर्दशस्वपि पूर्वनामस्थानेषु उप्पायपुव्वस्स णं अग्गेणीयपुव्वस्स णं वीरियपुव्वस्स णं इत्यादि पाठभेदो मो० मु० इत्यत्र ॥ १५ चूलवत्थू मु०। चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ १६ अग्गेणिअस्स डे० ल० ॥ १७ चूलवत्थू ख० मु०। चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ १८ चूलव मु०। चूलियाव जे० डे० मो० मु० ॥

वत्थू दस चुंलवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स वारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विंज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंझस्स णं पुव्वस्स वारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ । किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोगविंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ वारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।
सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥
वारस एक्कारसमे ११, वारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।
तीसा पुण तेरसमे १३, चोद्दसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥
चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुंलवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चुंलया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते–जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले गणधराण सव्वसुताधारत्तणतो पुव्वं पुव्वगतसुतत्थं भासति तम्हा पुव्व त्ति भणिता, गणधरा पुण सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइक्कमेण रयंति ट्ठवेंति य । अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, गणहरेहि वि पुव्वगतसुतं चेव पुव्वं रइतं पच्छा आयाराइ । एवमुक्ते चोदक आह–णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिज्जुत्तीए भणितं–"सव्वेसिं आयारो०"गाहा [आचाराङ्गनि गा ८]।आचार्याऽऽह–सत्यमुक्तम्, किंतु सा ठवणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं, पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः। ते य उप्पायपुव्वादिया चोदस पुव्वा पण्णत्ता । पढमं उप्पायपुव्वं ति, तत्थ सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायभावमंगीकाउं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी १ । वितियं अग्गेणीयं, तत्थ वि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य अग्गं–परिमाणं वणिज्जइ त्ति अग्गेणीतं, तस्स पदपरिमाणं छण्णउर्तिं पदसतसहस्सा २ । ततियं वीरियप्पवायं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्मेतराण वीरियं पवदति त्ति वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तरिं पदसतसहस्सा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा णत्थि, अहवा सिंतवादाभिप्पादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तं पि पदपरिमाणतो सट्ठि पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि मतिणाणाइपंचकस्स सभेदं परूवणा जम्हा कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एका पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं–सजमो सच्च-

१ चूलवत्थू लं० शु० । चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ २ विज्जाणु° जे० लं० मु० ॥ ३ पाणायुस्स सं० । पाणाउस्स जे० डे० लं० मो० मु० ॥ ४ चूलव° मो० शु० सम० ॥ ५ चूलिया सं० विना ॥ ६ स्याद्वादाभिप्रायत ॥

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं १, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं २, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ३, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीतिं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायं। से त्तं सुत्ताइं २।

१०६ 'सुत्ताइं' ति उज्जुसुताइयाइं बावीसं सुत्ताइं। ताणि य सुत्ताइं सव्वदव्वाण सव्वपज्जवाण सव्वणयाण सव्वभंगविकप्पाण य दंसगाणि, सव्वस्स य पुव्वगतसुतस्स अत्थस्स य सूयग त्ति, अतो ते सूयणत्तातो सुत्ता भणिता जहाभिधाणत्थाते। ते य इदाणिं सुत्ततो अत्थतो वोच्छिण्णा, जहागतसमवायतो वा जधा। ते चेव बावीसं सुत्ता विभागतो अट्ठासीतिं सुत्ता भवंति इमेण विधिणा—बावीसं सुत्ता छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो। कहं छिण्णच्छेदणतो त्ति भण्णति? उच्यते—जो णयो सुत्तं छिण्णं छेदेण इच्छति, जहा—"धम्मो मंगलमुक्कट्ठं०" त्ति सिलोगो [दसवे अ १ गा १]। एस सिलोगो सुत्ततो अत्थतो पत्तेय छेदेण ठितो, णो बितियादिसिलोगे अवेक्खइ त्ति वुत्तं भवति। छिण्णो छेदो जस्स स भवति छिण्णच्छेदः, प्रत्येकं कल्पितपर्यन्त इत्यर्थः। एते एव बावीसं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ता ठिता। एते चेव बावीसं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो आजीवियसुत्तपरिवाडीए ठिता। अच्छिण्णच्छेदणतो जहा—एसेव दुमपुप्फियपढमसिलोगो अत्थतो बितियादिसिलोगे अवेक्खमाणो, बितियादिया य पढमं अच्छिण्णच्छेदणताभिप्पायतो भवति। एवं पि बावीसं सुत्ता अक्खररयणविभागट्ठिता वि अत्थतो अण्णोण्णमवेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेदणपट्ठित त्ति भण्णंति। णयचिंताए वि बावीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाणं तिकणइयाइं' ति त्रिकनयाभिप्रायतो चिन्त्यन्त इत्यर्थः। तहा ससमये वि णयचिंताए बावीसं चेव सुत्ता चउक्कणइया। एवं चतुरो [जे० २२० प्र०] बावीसातो अट्ठासीतिं सुत्ता भवंति। से त्तं सुत्ताइं २॥

१०७ से किं तं पुव्वगते? पुव्वगते चोद्दसविहे पण्णत्ते, तं जहा—उप्पादपुव्वं १ अग्गेणीयं २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्पवातं ४ णाणप्पवातं ५ सच्चप्पवादं ६ आयप्पवादं ७ कम्मप्पवादं ८ पच्चक्खाणं ९ विज्जाणुप्पवादं १० अवंझं ११ पाणायु १२ किरियाविसालं १३ लोगबिंदुसारं १४। उप्पायस्स णं पुव्वस्स दस वत्थू चत्तारि चूलियवत्थू पण्णत्ता १। अग्गेणीयस्स णं पुव्वस्स चोद्दस वत्थू दुवालस चूलवत्थू पण्णत्ता २। वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ठ वत्थू अट्ठ चूलवत्थू पण्णत्ता ३। अत्थिणत्थिप्पवायस्स णं पुव्वस्स अट्ठारस

१-३-५-७ इच्चइयाइं मो मु ॥ २-४-६-८ सुत्ताइं इति पदं खं सं एव वर्त्तते नान्यत्र समवायाङ्गेऽपि नास्ति ॥ ९. भवंति इच्चमक्खायं खं ॥ १०. अग्गेणियं ल ॥ ११. पच्चक्खाणपवादं खं सं विना ॥ १२. पिणाउ खं सं मो मु ॥ १३. पाणाउं डे। पाणाउ खं सं मो मु ॥ १४. अत्रिमाः सर्वे उप्पायस्स णं पुव्वस्स, अग्गेणीयस्स णं पुव्वस्स, वीरियस्स णं पुव्वस्स इत्यादिषु चतुर्दशस्वपि पूर्वनामस्थानेषु उप्पायपुव्वस्स णं अग्गेणीयपुव्वस्स णं वीरियपुव्वस्स णं इत्यादि. पाठभेदो मो मु इत्यर्थः ॥ १५ चूलवत्थू मु। चूलियावत्थू खं डे मो मु ॥ १६ अग्गेणियस्स डे ल ॥ १७ चूलवत्थू ल मु। चूलियावत्थू खं डे मो मु ॥ १८ चूलवत्थू मु। चूलियाव खं डे मो मु ॥

वत्थू दस चुल्लवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्चप्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंझस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ । किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोगबिंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणुवीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चोद्दस २ अट्ठ ३ ऽट्ठारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।
सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥
बारस एक्कारसमे ११, बारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।
तीसा पुण तेरसमे १३, चोद्दसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥
चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते–जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाले गणधराण सव्वसुताधारत्तणतो पुव्वं पुव्वगतसुतत्थं भासति तम्हा पुव्व त्ति भणिता, गणधरा पुण सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइक्कमेण रयंति ट्ठवेंति य । अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, गणहरेहि वि पुव्वगतसुतं चेव पुव्वं रइतं पच्छा आयाराइ । एवमुक्ते चोदक आह–णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिज्जुत्तीए भणितं–"सव्वेसिं आयारो०"गाहा [आचाराङ्गनि गा ८]। आचार्याऽऽह–सत्यमुक्तम्, किंतु सा ठवणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं, पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्वादिया चोद्दस पुव्वा पण्णत्ता । पढमं उप्पायपुव्वं ति, तत्थ सव्वदव्वाणं पज्जवाण य उप्पायभावसंगीकाउं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी १ । बितियं अग्गेणीयं, तत्थ वि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य अग्गं–परिमाणं वणिज्जइ त्ति अग्गेणीतं, तस्स पदपरिमाणं छण्णउतिं पदसतसहस्सा २ । ततियं वीरियप्पवायं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्मेतराण वीरियं प्रवदति त्ति वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तरिं पदसतसहस्सा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा णत्थि, अहवा सितवादाभिप्पादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तं पि पदपरिमाणतो सट्ठि पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि मतिणाणाइपंचकस्स सप्रभेदं परूवणा जम्हा कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एका पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं–सजमो सच्च-

१ चूलवत्थू ल० शु० । चूलियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ २ विज्जाणु° जे० ल० मु० ॥ ३ पाणायुस्स स० । पाणाउस्स जे० डे० ल० मो० मु० ॥ ४ चूलव° मो० शु० सम० ॥ ५ चूलिया स० विना ॥ ६ स्याद्वादाभिप्रायत ॥

पयण वा, त सर्वं जत्थ समेदं सपडिवक्खं च वण्णिज्जति तं सच्चप्पवादं, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी छप्पदाधिया ६। सत्तमं आयप्पवादं, आय त्ति–आत्मा, [पे० २२० द्वि०] सो णेगहा जत्थ णयदरिसणेहिं वण्णिज्जति तं आयप्पवादं, तस्स वि पदपरिमाण छव्वीसं पदकोडीओ ७। अट्ठम कम्मप्पवादं, णाणावरणाइयं अट्ठविधं कम्म पगति-ट्ठिति-अणुभाग-प्पदेसादिएहिं भेदेहिं अण्णेहि य उत्तरुत्तरभेदेहिं जत्थ वण्णिज्जति त कम्मप्पवाद, तस्स वि पदपरिमाण एगा पदकोडी असीतिं च पदसहस्साणि भवंति ८। नवम पच्चक्खाणं, तम्मि सभेयपच्चक्खाणमसत्य वण्णिज्जति त्ति अतो पच्चक्खाणप्पवाद, तस्स य पदपरिमाण चउरासीतिं पदसतसहस्साणि भवति ९। दसमं विज्जाणुप्पवातं, तत्थ य अणेगे विज्जातिसया वण्णिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी दस य पदसतसहस्साणि १०। एगादसम अवंझं ति, वंझं णाम–णिप्फलं, ण वंझमवंझं, सफलेत्यर्थः, सव्वे णाण-तव-संजमजोगा सफला वण्णिज्जंति, अप्पसत्था य पमादादिया सव्वे असुभफला वण्णिता, अतो अवंझं, तस्स वि पदपरिमाण छव्वीसं पदकोडीओ ११। बारसमं पाणायुं, तत्थ आयुं–प्राणविधाण सव्व सभेदं अण्णे य पाणा वण्णिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोडी छप्पण्णं च पदसतसहस्सा १२। तेरसम किरियाविसालं, तत्थ कायकिरियादियाओ विसाल त्ति–सभेदा, संजमकिरियाओ य छंदकिरियविहाणा य, तस्स वि पदपरिमाणं नव कोडीओ १३। चोद्दसमं लोगबिंदुसार, तं च इमम्मि लोए सुतलोए वा बिंदुमिव अक्खरस्स [सारं–] सव्वुत्तमं सव्वक्खरसन्निवातपढितत्तणतो लोगबिंदुसारं, तस्स पदपरिमाण अद्धतेरस पदकोडीओ १४। ३ ॥

इदाणिं अणिओगो त्ति—

१०८. से किं तं अणुओगे? अणुओगे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–मूलपढमाणुओगे य गंडियाणुओगे य।

१०८ अनुयोग इत्येतद् अनुरूपो योगः अनुयोग इति। एवं सर्व एव सूत्रार्थो वाच्यः। इह जन्म-भव पर्याय शिष्यादियोगविवक्षातोऽनुयोगो वाच्यः। स च द्विविधः–मूलपढमाणुयोगो गण्डिकाविशिष्टश्च ॥ तत्थ—

१०९. से किं त मूलपढमाणुओगे? मूलपढमाणुओगे णं अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलोगगमणाइं आउं चवणाइं जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि य सीसा गणा गणधरा य अज्जा य पवत्तिणीओ य, संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं, जिण मणपज्जव ओहिणाणि-समत्तसुयणाणिणो य वादी य अणुत्तरगती य उत्तरवेउव्विणो य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, सिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चिर च काल पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेयइत्ता अंतगडो मुणिवरुत्तमो तमरओघविप्पमुक्को मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्तो, एवे अन्ने य एवमादी भावा मूलपढमाणुओगे कहिया। से त्तं मूलपढमाणुओगे।

१ छत्तीसं खे ० ॥ २ य चंपकिरिय जे० विया ॥ ३ देवगम खे० ॥ ४ आय रं ॥ ५ उत्तर वेउव्विणो य मुणिणो इति सं० सम नास्ति ॥ ६ छेइत्ता जे० ॥ ७ एवुय खं० ॥ ८ सुहं च अणुत्तरं पत्तो सं० ॥ ९ पढमम्मे खे० ॥

१०९. 'मूलपढमाणुयोगो' त्ति, इह मूलभावस्तु—तीर्थकरः, तस्य प्रथमं—पूर्वभवादि, अहवा [जे० २२१ प्र०] मूल एव प्रथमः मूलपढमाणुयोगो । एत्थ तित्थगरस्स अतीतभवभावा वट्टमाणभवे य जम्मादिया भावा कहिज्जंति । अहवा मूलस्स जे पढमा भावा ते मूलपढमाणुयोगो भण्णति । एत्थ तित्थकरस्स जे भावा प्रसूतास्ते परियाय-सुत-सिस्साइया भाणितव्वा ॥

११०. से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे णं कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ चक्कवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ भद्दबाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणिगंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ अमर-णर-तिरिय-निरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति । से त्तं गंडियाणुओगे । से त्तं अणुओगे ४ ।

११०. गंडियाणुओगो त्ति इक्खुमादिपव्वगंडिकावत् एकाहिकारत्तणतो गंडियाणुओगो भणितो । ता य कुलकरादियाओ, विमलवाहणादिकुलकराणं "पुव्वभव जम्म णाम प्पमाण०" गाहा [आव नि गा. १४९] एवमादि जं किंचि कुलकरस्स वत्तव्वं तं सव्वं कुलकरगंडियाए भणितं । एवं तित्थकरादिगंडियासु वि । 'चित्तंतरगंडिय' त्ति चित्रा इति—अनेकार्था, अंतरे इति—उसभ-अजियतरे ता दिट्ठा, गडिका इति—खंडं, अतो चित्तंतरगंडिका भणिता । तासिं [1]परूवणे पुव्वायरिएहिं इमा विधी दिट्ठा—

आदिच्चजसादीणं उसभस्स पयोपदे णरवतीणं । सगरसुताण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेति ॥१॥
चोद्दस लक्खा सिद्धा णिवईणेको य होति सव्वट्ठे । एवेकेकट्ठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥२॥
पुणरवि चोद्दस लक्खा सिद्धा निवतीण दोण्णि सव्वट्ठे । दुगठाणे वि असंखा पुरिसजुगा होंति णातव्वा ॥३॥
जाव य लक्खा चोद्दस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे । पण्णासट्ठाणे वि तु पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥४॥
[2]एगुत्तरा तु लक्खा [3]सव्वट्ठे णेय जाव पण्णासा । एकेकुत्तरठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥५॥ १ ।
विवरीयं सव्वट्ठे चोद्दस लक्खाइं निव्वुतो एगो । स चेव य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥६॥ २ ।
तेण पर दुलक्खादी दो दो ठाणा य समग वच्चति । सिवगति-सव्वट्ठेहिं इणमो [4]तासिं विही होइ ॥७॥
दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवतीण सव्वट्ठे । एवं तिलक्ख चतु पंच जाव लक्खा असंखेज्जा ॥८॥ ३ ।
सिवगति-सव्वट्ठेहिं चित्तंतरगंडिया ततो चउरो । एगादेगुत्तरिया एगादिविउत्तरा वितिया ॥९॥
ततिएगादितिउत्तर तिगमादिविउत्तरा चतुत्थेवं । [जे० २२१ द्वि०] पढमाए सिद्धेको दोण्णि य सव्वट्ठसिद्धम्मि ॥१०॥
तत्तो तिण्णि णरिंदा सिद्धा चत्तारि होंति सव्वट्ठे । इय जाव असंखेज्जा सिवगति-सव्वट्ठसिद्धेहिं १ ॥११॥
ताहे विउत्तराए सिद्धेको तिण्णि होंति सव्वट्ठे । एवं पच य सत्त य जाव असंखेज्ज [5]दो वि त्ति २ ॥१२॥
एग चतु सत्त दसगं जाव असंखेज्ज होंति दो वि त्ति । सिवगति-सव्वट्ठेहिं तिउत्त[6]राए तु णेतव्वा ३ ॥१३॥

१ परूवणा पुव्वायरिएहिं इमा दिट्ठा आ० दा० ॥ २ एगुत्तरा उ ठाणा सव्वट्ठे चेव जाव पण्णासा । एकेकंतरठाणे दा० ॥ ३ सव्वट्ठाणे य आ० ॥ ४ तेसिं हारि०वृत्तौ ॥ ५ दोण्णि त्ति दा० ॥ ६ °रा एत्थ णेयव्वा आ० । °राए मुणेयव्वा दा० ॥

ताहे-तिपगादिचिट्ठत्तराए अउणत्तीस तु तियग ठावेतुं । पढम णत्थि तु खेवो सेसेसु ईमो मवे खेवो ॥१४॥
दुग पण णवगं तेरस सत्तरस दुवीस छ च अट्ठेव । बारस चोद्दस तह अट्ठवीस छव्वीस पणुवीसा ॥१५॥
एकारस तेवीसा सीतालं सत्तरि सत्तसत्तरि या । इग दुग सत्तासीती एगत्तरिमेव बावट्ठी ॥१६॥
अउणत्तरि चउदीसा छायाल सत तहेव छव्वीसा । एते रासीखेवा तिगम्मंतेवा जहाकमसो ॥१७॥
सिधगति-सव्वट्ठेहिं दो दो ठाण विसमुत्तरा णेया । जाव उणतीसठाणे उणतीसं पुण छव्वीसाए ॥१८॥
विसमुत्तरा य पढमा एवमसंखा विसमुत्तरा णेया । सव्वत्थ वि अंतिल्ल अण्णाए आदिम ठाण ॥१९॥ गतं ॥
अउणत्तीसं बारा ठावेतु णत्थि पढमए खेवो । सेसे अडवीसाए सव्वत्थ दुगादियो खेवो ॥२०॥
सिधगति पढमादीए बितियाए तह य होति सव्वट्ठे । इय एगंतरिताई सिधगति-सव्वट्ठठाणाई ॥२१॥
एवमसंखेज्जाओ चित्तंतरगंडियाओ णेतव्वा । जाव जितसत्तुराया अजितजिणपिता समुप्पण्णो ४ ॥२२॥

एवं गाहाहिं चित्तंतरगंडिया समत्ता । इमा एतासिं ठवणा—

सिद्धा एक्का	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
सव्वट्ठे एक्का	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०

एवं जाव असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । अतो परं—

सिद्धा एक्का	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०
सव्वट्ठे एक्का	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

एवं पि असंखेज्जा पुरिसजुगा सिद्धा । एते वि एक्का—

सिद्धा एक्का	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सव्वट्ठे एक्का	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

एवं जाव असंखेज्जा आवलिया दुगादिएगुत्तरा दो [पे० २२२ ॥] वि गच्छंति ॥

सिद्धा	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
सव्वट्ठे	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

एवं असंखेज्जा । एगादेगुत्तरा पढमा चित्तंतरगंडिया णेया ॥

सिद्धा	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१
सव्वट्ठे	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३

एवं असंखेज्जा । एगादिबिउत्तरा बितिया चित्तंतरगंडिया ॥

१ इमे मवे खेवा वा ॥ २ चित्रान्तरगण्डिका-तदन्तर्गतसमग्रविषयविज्ञप्तिविवरणं समवायाङ्गवृत्तिगतं श्रीमदभयदेवसूरिपादैरवतारितम्, ततो द्रष्टव्यम् । पृ० १४७ इमे पत्रे टिप्पणी ॥

सिद्धा	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५
सव्वट्ठे	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८

एवं जाव असंखेज्जा । एगादितिउत्तरा ततिया चित्तंतरगंडिया ॥

सिवगति	३	८	१६	२५	११	१७	२९	१४	५०	८०	५	७४	७२	४९	२९
सव्वट्ठे	५	१२	२०	९	१५	३१	२८	२६	७३	४	९०	६५	२७	१०३	

सव्वट्ठे	२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१	१००	९८	७५	५५
सिवगति	३१	३८	४६	३५	४१	५७	५४	५२	९९	३०	११६	९१	५३	१२९	

सेसं गाहाणुसारेण णेतव्वं जाव असंखेज्जा ४ ॥

१११. से किं तं [1]चूलियाओ? [2]चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं [3]चूलिया, अवसेसा पुव्वा अचूलिया । से त्तं [4]चूलियाओ ५ ।

१११. 'चूल' त्ति सिहरं । दिट्ठिवाते जं परिकम्म-सुत्त-पुव्व-अणुयोगे य ण भणितं तं चूलासु भणितं । ताओ य चूलाओ आदिल्लपुव्वाण चतुण्हं जे चूलवत्थू भणिता ते चेव सव्वुवरि ट्ठविता पढिज्जंति य, अतो ते सुयपव्वयचूला इव चूला । तेसिं जहक्कमेण संखा चतु बारस अट्ठ दस य भवंति ५ ॥

११२. दिट्ठिवायस्स[5] णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगट्ठयाए[6] दुवालसमे[7] अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोद्दस पुव्वा[8], संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा [9]चुल्लवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडियाओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं [10]पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिबद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवंणाया, एवंविण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंति[11] । से त्तं दिट्ठिवाए १२ ।

११२. संखेज्जा वत्थू पणुवीसुत्तरा दो सता । 'संखेज्जा चूलवत्थु' त्ति चतुत्तीसं ॥

१-२ चूलिया ख० सं० ल० शु० ॥ ३ चूलिया, सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं, से त्तं जे० मो० मु० ॥ ४ चूलिया ख० सं० ल० शु० ॥ ५ दिट्ठिवाए णं ख० सं० ल० शु० ॥ ६ अंगट्ठाए ख० शु० ॥ ७ बारसमे जे० मो० मु० ॥ ८ पुव्वाइं जे० मो० मु० ॥ ९ चूलवत्थू ख० सं० सम० विना ॥ १० पदसतसह° सम० ॥ ११ °विज्जंति सं० जे० ॥

११३ इच्चेइयम्मि दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ अणंता कारणा अणंता अकारणा अणंता जीवा अणंता अजीवा अणंता भवसिद्धिया अणंता अभवसिद्धिया अणंता सिद्धा अणंता असिद्धा पण्णत्ता । संगहणिगाहा—

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।
जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११३ अणंता 'भाव' त्ति भवनं भूतिर्वा भावः, ते य जीवा-ऽजीवात्मका अणंता भतिबद्धा । 'अणंता अभाव' त्ति अभवनं अभावः अभूतिर्वा । जहा जीवो अजीवत्तेण अभावो, अजीवा य जीवत्तेण, घडो पडत्तेण, पडो य घडत्तेण, एमादि अणंता अभावा भतिबद्धा । अहवा जे जहा जावइया भावा तेसिं पडिपक्खत्तो तावइया चेव अणंता अभावा भवति । 'अणंता हेतु' त्ति पंच-दसावयवयवयणेसु पक्खधम्मत्तं सपक्खसत्तं अभिलसितमत्थसाधकं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वजुत्तिजुत्तं वयणं हेतू भण्णति, अहवा सव्वे जिणवयणपहा हेतू, भतिपोतकत्तणतो, णिदोसहेतुवयणं च, सुत्तस्स य अणंत[जे० २२२ द्वि०]गमपज्जवत्तो, एवं अणंता हेतू । भणितपडिवक्खत्तो य अणंता चेव अहेतू । 'अणंता कारणा' त्ति कज्जसाधयं कारणं ति, ते य पयोग-वीससातो अणंता भाणितव्वा । जं च जस्स असाधकं तं तस्स अकारणं, जहा चक्क-दंडादयो पडस्स, एवं अणंता अकारणा । 'अणंता जीवा' इत्यादि कंठं ॥

११४ इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति ।

११४ इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीते काले अणंता जीवा आणाए विराहेत्ता इत्यादि । 'दुवालसंगं गणिपिडगं' ति तिविहं पण्णत्तं—सुत्ततो अत्थतो तदुभयतो य । एमेव आणा तिविहा—सुत्ताणा अत्थाणा

१ इच्चेयम्मि खं० ॥ २ कारणा जीवा । अजीवा भवियऽभविया तत्तो सिद्धा खं० सं० डे० ॥ ३ प्रत्यवयव-दशावयवलक्षणार्थमत्रोल्लिख्यमानो दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्ति-चूर्णि-हारिभद्रवृत्त्यादिगतो ग्रन्थसन्दर्भोऽवधारणीयः—"पइण्णा-हेउ-दिट्ठंतोवसंहार-निगमणेहिं वा निरविज्जति आयमवयणं पचहिं दसहिं वा । तथा "पतिण्णा पढमो अवयवो १ पतिण्णासुद्धी २ हेतू ३ हेतुसुद्धी ४ दिट्ठंतो ५ दिट्ठंतसुद्धी ६ उवसंहारो ७ उवसंहारसुद्धी ८ निगमणं ९ निगमणसुद्धी दसमो १०" इति ["अथवा पंचावयवं दस दशवैकालिकसूत्रनिर्युक्तिगाथा ८९ अगस्त्यसिंहचूर्णी पत्र २] । "कत्थइ आयम-हेउ-दिट्ठंतोवसंहार-निगमणावसाणेण पंचावयवेण कत्थइ दसावयवेण । तथा—"इदाणिं दसावयवाणं पत्तलय काहामि, तं०—पतिण्णा पढमो अवयवो १ पतिण्णाविसुद्धी बितिओ २ एवं हेतू ततिओ अवयवो ३ हेतुविसुद्धी चउत्थो अवयवो ४ दिट्ठंतो पंचमो अवयवो ५ दिट्ठंतविसुद्धी छट्ठो ६ उवसंहारो सत्तमो ७ उवसंहारविसुद्धी अट्ठमो निगमणं नवमो ९ निगमणविसुद्धी दसमो १०" इति वृद्धविवरणे पत्र ३२-३५ । 'दशावयवाः प्रतिज्ञादयः' यदुक्तम्—'प्रतिज्ञा-हेतूदाहरणोपनय-निगमनान्यवयवाः [न्यायसू० १-१-३२] दशवैकालिकनिर्युक्तिवृत्ति पत्र ३३ । तथा— ते उ पइन्न १ विभत्ती २ हेउ ३ विभत्ती ४ विवक्ख ५ पडिसेहो ६ । दिट्ठंतो ७ आसंका ८ तप्पडिसेहो ९ निगमणं १० च ॥ १३७ ॥" दशवैकालिकनिर्युक्तिः । अस्या व्याख्यानं हारिभद्री वृत्तिरवलोकनीया । एतल्लेखेषु दशावयवनिरूपणमपि न विसदृशम् ॥ ४ वयणे सपक्खधम्मत्त-सपक्खसत्त-अभिलसितत्थसाधकं खं० ॥ ५ पावकत्तणतो खं० सं० ॥ ६ इच्चेयं खं० डे० । एवमग्रेऽपि सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

तदुभयआणा य एवं एगट्ठिता तहा वि अभिधाणतो विसेसो कज्जति—यदा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुपटव्यपदेशवत् । आज्ञाप्यते यया हितोपदेशत्वेन सा आज्ञा इति । इदाणिं एतेसिं विराहणा चिंतिज्जति—जं सुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेसेण अण्णहा पण्णवेंतो ताए अत्थाणाए सुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, गोट्ठामाहिलवत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं सुत्ततो अभिणिवेसेण अण्णहा पढंतो ताए सुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा जमालिवत् । अहवा आणं ति—पंचविहायारायरणसीलस्स गुरुणो हितोवदेसवयणं आणा, तमण्णधा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, एसो अक्खरसमो अत्थो । इमो अणक्खरसमो—आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजित्ता गतो, णो छायाए करणभूयाए भुंजित्ता, किंतु छायाया भुक्त्वा गतेति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा । सा य आणा इमा—'इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता' । सेसं पूर्ववत् । पडुप्पण्ण-अणागतेसु वि सुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, सण्णिमणुयाणं संखेज्जत्तणतो ॥

११५. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वितिवंतिस्संति ।

११५. तिसु वि आराधणसुत्तेसु एवं चेव वत्तव्वं ॥

११६. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे । से जहाणामए पंचत्थिकाए ण कयाति णाऽऽसी ण कयाति णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुविं च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअए सासते अक्खए अव्वए अवट्ठिए णिच्चे ।

११६. ण कताइ णाऽऽसीत्यादि । त्रिकाले नास्तित्वभावप्रतिषेधकं सूत्रम् । 'भुविं च' इत्यादि त्रिकाले अस्तित्वभावप्रतिपादकं सूत्रम् । त्रिकालभावित्तणतो चेव अचलभावत्वाद् ध्रुवं मेर्वादिवत् । धुवत्तणतो चेव जीवादि-

१ एए एग° दा० ॥ २ ततुभि० पटं व्यय, देवदत्तवत् आ० दा० ॥ ३ तीए काले जे० मु० ॥ ४-५-६ वीइव° जे० मो० । वीतीव° शु० ॥ ७ णीते ख० ल० शु० ॥ ८ °णामे ख० ॥ ९ °काया ख० डे० ल० शु० ॥ १०.ण कयाइ ण भविस्संति, भुविं च भवति च भविस्संति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा, ण भवंति ख० ल० शु० ॥ ११ णीते ख० ल० शु० ॥

भयपदस्येषु नियुक्तं नियतं यथा लोकवचनं पंचास्तिकायेष्विव। नियतत्वणतो चेव 'सासतं' शश्वद् भवतीतिशाश्वतम्, प्रतिसमया-ऽऽवलिक-मुहूर्त दिनादिष्विव कालः। सासतत्तणतो चेव वायणादिसु 'अक्खयं' नास्य क्षयो अक्षयम्, गंगा-सिंधुप्रवाहेष्वपि पौण्डरीकद्रहवत्। अक्खयत्तणतो चेव 'अव्वयं' नास्य व्ययो अव्ययम्, मानुषोत्तराद् बहिस्समुद्रवत्। अव्वयत्तणतो चेव स्वप्रमाणे अवट्ठितं जम्बूद्वीपादिवत्। अवट्ठितत्तणतो चेव सव्वदा चितिक्रमात् 'निच्चं' आकाशवद् अविनाशीत्यर्थः। अहवा एते धुवादिया एगट्ठिता। चोदक आह—इच्चेयं दुवालसंगं धुवादिपदपरूवितं किमागमेण दिट्ठंततो वा सज्झं? आचार्याऽऽह—जम्हा निच्चो अणच्चासायादिधो तम्हा तेसिं वयणं सव्वं आणाते चेव गज्झं, कहिंचि दिट्ठंततो वि गज्झं। इह दुवालसंगस्स धुवादिपरूवितस्यस्स साधको इमो दिट्ठंतो—'से जहानामते'त्यादि कंठं॥

११७ से समासतो चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। तत्थ दव्वओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइं जाणइ पासइ। खेत्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं खेत्तं जाणइ पासइ। कालओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वं कालं जाणइ पासइ। भावओ णं सुयणाणी उवउत्ते सव्वे भावे जाणइ पासइ।

११७. तं च दुवालसंगसुतं चतुव्विहं दव्वादि। अभिण्णदसपुव्वादियाण जाव सुतनाणकेवली ते पडुच्च भणितं। दव्वतो य सुतनाणी सुतनाणेणोवयुत्तो सुतविण्णाणीए सव्वदव्वाणि जाणति पासति य। णणु पासइ त्ति विरोहो? उच्यते—जम्हा अदिट्ठाण वि मेर्वादियाण सुतवाण्णपासणताए आगारमालिहइ, ण यादिट्ठं लिहइ, पण्णवणाए य भणिता सुतणाणपासणत त्ति, ण विरोधो। भारतो पुण जे सुतनाणी ते सव्वदव्वणाण-पासणताए भइता। सा य भयणा मतिविसेसतो जाणितव्वा। एवं खेत्त-काल-भावेसु वि [चे० २२१ द्वि०] भाणितव्वा॥

सुतनाणदंसणस्य भण्णति—

११८ अक्खर १ सण्णी २ सम्मं ३ सादीयं ४ खलु सपज्जवसियं ५ च।
गमियं ६ अंगपविट्ठं ७ सत्त वि एए सपडिवक्खा॥ ८१॥
[आव० नि० गा० १९]

आगमसत्थग्गहणं जं बुद्धिगुणेहिं अट्ठहिं दिट्ठं।
बिंति सुयणाणलंभं तं पुव्वविसारया धीरा॥ ८२॥

सुस्सूसइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्हइ ४ य ईहए ५ यावि।
ततो अपोहए ६ वा धारेइ ७ करेइ वा सम्मं ८॥ ८३॥

मूयं १ हुंकारं २ वा बाढक्कार ३ पडिपुच्छ ४ वीमंसा ५।
तत्तो पसंगपारायणं ६ च परिणिट्ठ ७ सत्तमए॥ ८४॥

१ जिणा ज० ऽऽण्णाहा आ० ॥ २ तस्य इति मो० ॥ ३ ... जिणागमपुस्तके ३ ... जं० नास्ति ॥ ४-७-९ ण पासइ ... ॥ ८ ४१-८ ... ॥ ... जिणागमपुस्तके २ ... ॥ १० अइहिं वि दिट्ठं ... ॥ ११ ... ॥ १२ ... ॥

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ८५ ॥

[आव० नि० गा० २१-२४]

से त्तं अंगपविट्ठं । से त्तं सुयणाणं । से त्तं परोक्खणाणं ।

॥ से त्तं णंदी सम्मत्ता ॥

११८. **अक्खर०** गाहा । एसा चोद्दसविहसुतभावपरूवणा कता ॥ ८१ ॥ एत्थं आयारादिगणधरागमपणीतस्स[1] पत्तेगबुद्धभासितस्स वा तहाकालाणुभावतो बल-बुद्धि-मेधा-ऽऽयुहाणिं जाणिऊण जे य सुतभावा आयरिएहिं निज्जूढा तेसु गहणविही दंसिज्जइ—

आगम० गाहा ॥८२॥ इमे ते अट्ठ बुद्धिगुणा—

सुस्सूसति० गाहा ॥८३॥ विणेतस्स अत्थसवणे इमा विही—

मूयं हुंकार० गाहा ॥८४॥ गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही—

सुत्तत्थो खलु० गाहा ॥८५॥

जं ण भणितमूणं वा अतिरित्तं वा वि अहव विवरीतं ।
तं सम्मऽणुयोगधरा करेंतु कातुं मम क्खंतिं ॥ १ ॥

णि रे णं[2] ग म त्त ण ह सं दा जि या पसुपतिसंखगजट्ठिताकुला ।
कमट्ठिता धीमतचिंतियक्खरा, फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥ छ ॥
शकराज्ञो[3] पंचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रांतेषु अष्टनवतेषु नंद्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ छ ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्रम् १५००॥



१ °गणधरपणीतस्स आ० दा० ॥ २ णिरेणगामेत्तमहासहाजिता पसूयती संखजगट्ठिता आ० ॥ ३ सकराजतो पचसु वर्षशतेषु नन्द्यध्ययन° आ० ॥



प्रथमं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रान्तर्गतानां सूत्रगाथानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

द्वितीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्ण्यन्तर्गतानामुद्धरणानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथादि	पत्राङ्क
दो लक्खा सिद्धीए	७७
धम्मो मंगलमुक्कट्ठं [दशव० अ. १ गा. १]	७४
नाणम्मि दंसणम्मि य [विशेषणवती गा ३११]	३०
निच्छयओ सव्वगुरुं [कल्पभाष्य गा ६५]	५३
पणसीसुदसमयाणिम्म [कल्पभाष्य गा १६७]	१२
पच्चक्खमिच्छा माया [कल्पभाष्य गा ५६४]	५५
पायदुग जंघोरू [ ]	५७
पासंतो वि ण जाणइ [विशेषणवती गा २१५]	२९
पिंडस्स जा विसोही [व्यवहारभाष्य उ १ गा २८१]	६१
पुव्वम्मि चोद्दस लक्खा	७७
पुव्वभव जम्म णाण [आवश्यकनि गा. १४९]	७७
भगित्ति पि य पण्णत्ती [विशेषणवती गा. २२]	२९
भण्णति अहोच्छिण्णागी [विशेषणवती गा १७८]	३०
भण्णति ण एस णियमो [विशेषणवती गा २१८]	२९
भण्णति जिणगसुत्तो [विशेषणवती गा २ २]	२८
भमा मकुंद मरुल [ ]	१
रुप्प पधेमकुला [आवश्यकनि गा. ११३९]	२९
रूविस्सऽभावे [उत्तरा अ. १ सू. १८]	१५
वतसमिति० [ ]	६१
विवरीय सम्मट्ठे	७७
विसमुत्तरा य पउमा	७८
सततं ण देइ कमइ [विशेषणवती गा १ ७]	२९
सदसदविसेसणाओ [विशेषणावश्यक गा. ११५]	४८
सव्वे सत्ता ण हंतव्वा [आचाराङ्ग श्रु. १ अ ४ उ १ सू. १]	२
सव्वेसिं आयारो [आचाराङ्ग नि गा. ८]	७९
सिवगति पवमादीए	७८
सिवगति-सम्पट्ठेहिं वि-	७७
सिवगति-सम्पट्ठेहिं दो	७८

३

तृतीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्णिगतानि पाठान्तर-मतान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

	पत्र पङ्क्ति
अण्णायरियमतेण	७५ १७
अण्णे	२२ २२ ४२ ३
अण्णे पुण	८ ११
अण्णे पुण आयरिया	४१ २
अण्णे भणंति	९ २५ २४-२१
अहवा	१७-१२
अहवा पाढो	१२ २
केइ	४१ ६
पाढंतरं इम	२ १४
पाढंतरं	८ ११ ५२ १७ २

चतुर्थं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्ण्यन्तर्गतानां ग्रन्थ-ग्रन्थकार-स्थविर-नृप-श्रेष्ठि-नगर-पर्वतादीना-मकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे * एतादृक्पुष्पिकायुतानि नामानि नन्दीसूत्रमूलगतानि ज्ञेयानि, ० एतादृक्शून्ययुतानि नामानि उद्धरणस्थानत्वेनास्माभिर्निर्दिष्टानि ज्ञेयानि, शेषाणि च नामानि चूर्णि-टिप्पणिसत्कानि ज्ञेयानि]



विशेषनाम	किम्?	पत्रम्	विशेषनाम	किम्?	पत्रम्	विशेषनाम	किम्?	पत्रम्
•[illegible]	[अनुयोगद्वार]	[illegible]	•निगम	[ग्राम]	[illegible]टि•	दुरपुग	[अध्ययन]	६•
		७१ ७०	•निययगइम्मा-			•दुरुवुग्गियाओ	,,	५•
[illegible]	,,	७१ ७२ ७०	णियाओ	[illegible]	७७	•पुरदेव	[illegible]	[illegible]
•[illegible]	[अध्ययन]	९	निरयावलिया	[अध्ययन]	६•	पुफिया	[अध्ययन]	६•
[illegible]	,,	७४	•निरयावलियाओ	,,	५•	•पुफियाओ	,,	५•
[illegible]	[illegible]	[illegible]	•[illegible]	[ग्राम]	४९टि•	•पुराण	[ग्रन्थ]	४९
[illegible]		७३	•[illegible]	,,	४९टि•	•पुराण	,,	४९टि•
•[illegible]	,,	११	[illegible]	[अध्ययन]	५९	•[illegible]	,,	४९टि•
[illegible]	[अनुयोगद्वार]	७१	•[illegible]	[illegible]	७४ ७५	पोरिसी	[illegible]	६८ २६
[illegible]			[illegible]	,,	७६		[illegible]	११ ४४
[illegible]	[illegible]	११	•[illegible]	,,	७४टि•	•[illegible]	[अध्ययन]	५७
•[illegible]	[अध्ययन]	५७	[illegible]	[अध्ययन]	७४	[illegible]	,,	५८
[illegible]	,,	५•	[illegible]	,,	७४ ५८ ८३	[illegible]	[illegible]	६४
•[illegible]	[अध्ययन]	५०टि•	•[illegible]	,,	५७	•[illegible]	[illegible]	७७
[illegible]			•[illegible]	,,	४८ ६१ ६९	[illegible]	[illegible]	८
•[illegible]	[illegible]	७४	[illegible]	,,	६९ ७०	•[illegible]	,,	७
•[illegible]	[illegible]	७	•[illegible]	[illegible]	७	[illegible]	,,	८
[illegible]	[illegible]	६•	[illegible]	,,	७	•[illegible]	,,	७
[illegible]	[illegible]	५९	•[illegible]	[illegible]	७	[illegible]		
•[illegible]	,,	[illegible]	•[illegible]	[अध्ययन]	५७	•[illegible]	[illegible]	[illegible]
•[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	५८	[illegible]	,,	[illegible]
		[illegible]	•[illegible]	[illegible]	७	•[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	•[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	•[illegible]	,,	[illegible]	•[illegible]	[illegible]	३४
[illegible]	[illegible]	[illegible]	•[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]			[illegible]	•[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
•[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]	•[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,	[illegible]
[illegible]	,,	[illegible]	•[illegible]	[illegible]	[illegible]	•	[illegible]	[illegible]

विशेषनाम	किम्?	पत्रम्
सुट्ठित	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	८
सुपडिबद्ध	"	८
*सुपास	[तीर्थङ्कर]	६
*सुप्पभ	"	६
सुबुद्धि	[अमात्य]	७७
*सुमति	[तीर्थङ्कर]	६
सुवण्ण	[देव]	७०
*सुहत्थि	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७
सुहत्थि	"	८
*सुहम्म	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७
सुहम्म—धम्म	"	७,७टि०
सुहस्ती	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	८टि०
सूयगड	[जैनागम]	४८,६१, ६२,६३
*सूरपण्णत्ति	"	५७
सूरपण्णत्ति	"	५८
*सेज्जंभव	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७

विशेषनाम	किम्?	पत्रम्
सेज्जंभव	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७
हर	[देवविशेष]	४
हरि	"	४
०हरिभद्रसूरि	[निर्ग्रन्थ-आचार्य]	३टि०, ४टि०,७टि०,८टि०, १०,टि०,२०टि०, २३टि०,२७टि०, ३२टि०,३८टि०, ४२टि०,४३टि०, ४८टि०,५०टि०, ६०टि०,८०टि०
*हरिवमगंडियाओ	[दृष्टिवादअविभाग]	७७
*हंभीमासुरक्ख—रुक्ख	[शास्त्र]	४९, ४९टि०
*भीमासुरक्ख	"	४९टि०
०भभीयमासुरुक्ख	"	४९टि०
०हभीयमासुरुक्ख	"	४९टि०

विशेषनाम	किम्?	पत्रम्
*हारिय	[गोत्र]	८
हारिय	"	८
०हारि०वृत्ति	[हरिभद्रसूरिकृत-नन्दीसूत्रवृत्ति]	३टि०, ५टि०,९टि०, ३६टि०,३९टि०, ४०टि०,५२टि०, ५९टि०
०हिमवन्तस्थविरावली	[जैनशास्त्र]	८टि०
हिमवंत	[गिरि]	१०,६४
*हिमवत+खमासमण	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	१०
हिमवन+खमासमण	"	१०
०हेतुविद्या	[शास्त्र]	४९टि०
हेमवत	[क्षेत्र]	२२

पञ्चमं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्ण्यन्तर्गतानां विषय-व्युत्पत्त्यादिद्योतकानां शब्दानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे *एतादृक्पुष्पिकाचिह्नाङ्किता शब्दा नन्दीमूलसूत्रान्तःसूत्रस्था एव व्याख्याता ज्ञेया, +एतादृक्पुष्पिकाचिह्नाङ्किता शब्दा चूर्णिकृता अन्यसन्दर्भ एव प्रयोजिता ज्ञेया, शेषाश्च शब्दा सूत्रान्तर्गता चूर्णिकृता व्याख्याता अवबोद्धव्या ।]



चूर्णिसमन्वितस्य नन्दिसूत्रस्य

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	८	मायो	मायो(? पोयो)
१	१२	भवति—	भणति ।
२	११	ति	ति—
३	५	तवो	तवो
३	५	नियमो	नियमो,
५	१९	ता उज्जल	ताउज्जल
५	१९	चिंतिज्जइ	चिंतिज्जइ
६	११	प्रभुरः	प्रभुरः
७	३	उसम	उसभं
७	१८	दुमिताणवे	दुमिताणवे
८	१७	अवारिय	धारिय
९	२२	प्पेहातमा	प्पेहाऽऽत्मा
१	१	ऽमासमे	समाससमे
११	८	मूलारम्भ	मूलविम्भ
११	९	ब्भासया	ब्भासया
११	२४	पारेम्म	पारेम्म । अहिंसा
१३	२९	पूर्वाद्ध निम्नप्रकारेण ज्ञेयम्—	
		प्पमत्त १ परावत्तेरऽमो अमो ३ मेरा व ४ बहुपरावत्ता ५ ।	
१४	१४	च	च
१४	१८	समेरं	समेर ।
१४	१९	।	॥
१४	२७	।	॥
१६	२	मज्झगयं ? ति	मज्झगयं ? मज्झगयं ति
१	२ ३	सा(दो)सासय	सापासय(दो पासे य)
१७	३	ड्डिप ।	ड्डिय [वा] ।
१७	९	बमता	६ मंता
१७	१२	तिसम्भा	ति सम्भा
१७	१३	से	स°
१७	१६	स्स परिपेरंतहिं परिपेरंतहिं	स्स पेरंतहिं पेरंतहिं
१७	१७	ओदुम्बं	ओदुम्बं
१७	१७	एवमेव	एवमेव
१७	१८	ओपेदिवाणं	ओदिवाणं
१७	२	ओदिवाण	ओदिवाण
१७	२२	अमणि	अमणि
१७	२४	पत्तेयेसु	पत्तेयेसु
१७	२७	५-६-११	५-६
१७	२८	९	९ स्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं सव्वेसु सुत्तत्थेसु हारि मस्स ॥ १०
१७	२८	१०	११
१७	२८	१२	१२-१३ ओदिवाणं हे व ॥ १४
१७	२९	१३	१५
१८	१	साओ	सा ब
२	८	सेवासार्थ	सेवा-सार्थ
२	२४	९ वाँ टिप्पणी	निरवज्जोमिन्दी ।
२१	१	पम्पाहरि	पम्पावहरि
२२	३	वाचासाल	वाचाल
२२	१	सवे	सवं
२३	१०	च	वं
२३	२१	चूर्णिकृत्या च	चूर्णि-न
२३	२३	वर्णना	वर्णना
२४	१३	उवरि	पम उवरि
२४	१४	चाय	
२४	१५	अस्सम	अस्स अ
२४	१५	उत्तरज्झयणी	उत्तरज्झयणे
२५	५	मणित	मणित ।
२५	५	राम-ति	रामं ति
२५	९	चार्म च	चाय च ।
२६	९	ति तं दि	ति दि तं
२७	७	भवति	जवति
२७	१३	डिताव	डिता व
२७	१८	अन्नोन्न	अन्नो (? न्न न्न
२७	२३	पर्वय	पवय
२	१	°रिया, अमीया	°रिया । अमी[यया]या
२९	२९	अनुरत्त	अनु-रत्त
३	१५	मियप्रभि	विवाभि
३	३	सुग	सुगं

पृष्ठम्	पङ्क्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
३१	२०	एव लक्खणा-ऽभिधा°	एवल्क्खणाऽभिधा
३१	२५	त	तं
३२	१५	सचेय	स चेव
३२	२८	°वृत्तौ	°वृत्तौ
३२	२९	°वृत्ता°	°वृत्ता°
३६	१६	णोइंदियावाए ।	णोइंदियावाए ६ ।
३८	१९	मङ्गदिट्ठतेण [१]	मङ्गदिट्ठते ण [१]
		मङ्गदिट्ठतेण	मङ्गदिट्ठते ण
३९	१	सद्दाइ [१],	सद्दाइ,
३९	५	सद्द त्ति,	सद्द [१] त्ति,
३९	१०	सुमिणे	सुमिणे [१]
३९	१५	सद्दा त्ति	सद्दो त्ति
३९	१५	सद्दाद,	सद्दाइ [१],
४०	१४	°बोह-	°बोहग-
४३	१०	उग्गहो,	उग्गह,
४४	२	भाणितव्वा	भाणितव्वा
४६	१३	चिता	चिंता
४६	१९	°जोगे	°जोग्गे
४७	११	°विसय[अ]वि°	°विसयवि°
४७	२०	समदिट्ठि	सम्मद्दिट्ठि
४८	८	सामर्थ्यम्,	सामर्थ्यम्
५४	३२	तत्त्रिभेदः,	°तत्त्रिभेदः,
५६	२५	यग°	यऽग°
५९	३	देविंदो°	देविंदो°
५९	७	त्रिमणा	त्रिमाणा
५९	३०	शु० ।	शु० हारिवृत्तौ च ।
६०	२३	पइणगगा	पइण्णगगा
६१	२८	यत	यत्
६३	१०	'वूह' क्रिय	'वूह किप'
६६	८	आहरणा,	आहरणा
६८	११	सहुम°	सुहुम°
८२	१	भवतीतिशा°	भवतीति शा°
८९	६	°टिप्पणि°	°टिप्पणी°

चूर्णिसमन्वितस्य नन्दिसूत्रस्य

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	८	माबो	मबो(? बीबो)
१	१२	मवति—	मवति ।
२	११	त्ति	त्ति—
३	५	तमो	तमो
३	५	निम्मो	निम्मो,
५	१९	वा उज्ज	वाउज्ज
५	१९	चिंतिज्ज	चिंतिज्ज
६	११	प्रचुरः	प्रचुरः
७	३	उसम	उसमं
७	१८	दुम्मियाबने	'दुम्मियाबने'
८	२७	अद्दवि	उत्तविम
९	२२	प्पेहामा	प्पेहाप्मा
१	१	समासमे	समासमये
११	८	भूतादव्व	भूतविव्व
११	१	म्मारया	म्मारया
११	२४	वारेज्ज	वारेज्जं । अरिहा
१३	२९	पूर्वार्द्ध निम्नप्रकारेण ज्ञेयम्—	

ममत्त १ परमवतारणो कामो २ मेदा य ४ मजुपरायता ५ ।

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१४	१४	च	च
१४	१८	समेव	समेव ।
१४	१९	।	॥
१४	२७	।	॥
१६	२	मज्झमव ? से	मज्झगव ? मज्झपर्व पे
१७	२-३	वा(वो)मासय	वापासया(वो पासे य)
१७	३	हिर्त ।	हित [वा] ।
१७	९	समता	है मंता
१७	१२	तिसम्मा	ति सम्मा
१७	१३	'से'	'स'
१७	१६	स्स परिपेरतेहिं परिपेरतेहिं	स्स पेरतेहिं पेरतेहिं
१७	१७	कोट्ठागं	कोट्ठाग
१७	१७	एवमेव	एवमेव
१७	१८	ओहिणाणं	ओहिणाणं
१७	२	ओहिणाणं	ओहिणाण
१७	२२	अवधि	अवधि

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
१७	२४		
१७	२७		
१७	२८		
१७	२८	१०	
१७	२८	१२	
१७	२९	१३	
१८	१	साओ	
२	८	तेवासार्ध	
२	१४	४ थी टिप्पणी	
२१	१	कम्मावति	
२२	३	वासावास	वा
२२	१	सवे	सवं
२३	१७	च	चं
२३	२१	चूर्णिकृत्य ३	चूर्णि-३
२३	२३	मवंता	मवंता
२४	१३	उवरि	याव उवरि
२४	१४	याव	
२४	१५	जस्सव	जस्स व
२४	१५	उत्तरज्झूओ	उत्तरज्झुओ
२५	५	मविता	मविता ।
२५	५	रायन्ति	राय त्ति
२५	९	वार्य च	वार्य च ।
२६	१	से तं किं	से किं तं
२७	७	मवति	मवति,
२७	१३	°हियाज	°हिया ज
२७	१	अण्णोण्ण	अण्णो (? ण्ण ण्ण
२७	३३	पर्जव	पर्जव
२८	१	°हिया, अजीवा	हिया । अजी[वा]वा
२९	२९	अणुरत्न	अणु-रत्न
३	१५	सिवक्षवि	सिवावि
३	३	भूत	भूतं

PRAKRIT TEXT SERIES

PUBLISHED WORKS

1. ANGAVIJJĀ

-Demy Quarto size Pages-8+94+372 Price Rs. 21/-

Aṅgavijjā is published for the first time by the Prakrit Text Society It is critically edited by Muni Shri Punyavijayaji, with English Introduction by Dr Motichandra and Hindi Introduction by Dr V S. Agarwal.

Aṅgavijjā is an ancient Prakrit Text relating to prognostication on the basis of bodily signs. The work is of unknown authorship but was considered to be of high antiquity and great sanctity having been delivered by Mahāvira himself Its internal evidence points to its having been finally compiled at the end of the Kushan period, about 4th Century A. D

It is highly important document firstly for the history of Prakrit language and secondly for the cultural history of India It contains hundreds of lists of all descriptions, for example seats postures, utensils containers, flowers, trees, personal names food and drinks bed steads, conveyances textiles, ornaments, jewellery coins birds, animals arrows, weapons boats, gods, goddesses, etc.

2 PRĀKRITA-PAINGALAM, Part I.

-Demy Octavo size Page-700 Price-Rs 16/-

Prākritapaiṅgalam is a text on Prakrit and Apabhramśa Metres. It is critically edited with three Sanskrit commentaries on the basis of the two earlier editions and further available manuscript material by Dr Bholashankar Vyas, a distinguished member of the Hindi Department of the Banaras Hindu University He has also added Hindi translation with philological notes and glossary of Prakrit and Apabhramśa words.

3. CAUPPANNAMAHĀPURISACARIYAM

-Demy Quarto size Pages-8+68+384 Price Rs. 21/-

Cauppannamahāpurisacariyam is a great biographical work by Āchārya Śilāṅka of the 9th Century A. D It is critically edited by Pt. Amritlal Mohanlal, Research scholar of Prakrit Text Society Its Introduction is written by Dr. K. L. Bruhn

It gives the lives of 54 great men revered by the Jains, viz. 24 Tirthankaras, 12 Chakravartins, 9 Baladevas and 9 Vāsudevas

4 PRĀKRITAPAIṄGALAM Part II

-Demy Octavo size Pages 16+16+592+12 Price Rs. 16/

The Part I of this work on Prakrit metres is published as the Second Volume of the Prakrit Text Series. Part II contains the editor's comprehensive Introduction dealing with the problems of the PrākritaPaiṅgalam together with a critical and comparative study of the metres that form the subject matter as well as, the exact nature of the language of the original text, and also a literary assessment of the portion which the author intended to serve as illustrations to the Matrika and Varnika metres dealt with by him.

ĀKHYĀNAKAMANIKOŚA.

-Demy Quarto size Pages 8+16+25+422 Price Rs. 21/-

Ākhyānakamaṇikośa is critically edited for the first time by Muni Shri Punyavijayaji.

It is written by Nemichandra and is commented upon by Āmradeva of the 12th Century A. D This book is a mine of historical and legendary stories in Prakrit and Apabhramśa.

6 PAUMACARIA Part I.

-Demy Quarto size Pages 8+40+376 Rs. 18/-

This is the earliest Prakrit version of the story of Rama. It was written in about the third Century A. D. by Vimala. The work is printed with Hindi translation. It is edited by Muni Shri Punyavijayaji and translated by Prof S. M vora, M. A., Jainadarśanāchārya. Its Introduction is written by Dr V M Kulkarni.

★